गुरुत्वाकर्षण - आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं
परमेश्वर के अस्तित्व और पहचान के साक्ष्य
माइकल एडवर्ड्स

माइकल एडवर्ड्स द्वारा कॉपीराइट © 2011

सभी अधिकार सुरक्षित। समीक्षात्मक लेखों या समीक्षाओं में शामिल होने वाले संक्षिप्त उद्धरणों को छोड़कर, इस किताब के किसी भी भाग को लिखित अनुमति के बिना किसी भी प्रकार से प्रयोग या पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है। कृपया लेखक के अधिकारों का हनन करके कॉपीराइट की गयी सामग्रियों की चोरी को प्रोत्साहित ना करें या इसमें हिस्सा ना लें। केवल अधिकृत संस्करण खरीदें।

www.God-Evidence-Truth.com

सत्य

विषय-सूची
यह क्या है, या क्या नहीं है और इसका पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका। परमेश्वर के बारे में सभी मान्यताएं सत्य क्यों नहीं हो सकती हैं।

क्या परमेश्वर है?
विज्ञान और नैतिकता से साक्ष्य। क्यों कुछ वैज्ञानिक परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते हैं और एक असंभव स्थिति पर अड़े रहते हैं।

क्या हम बाइबिल पर भरोसा कर सकते हैं?
सटीकता और सच्चाई।

क्या सचमुच पुनरुत्थान हुआ था?
कैसे पांच अन्य विकल्पों का कोई मतलब नहीं बनता है। 1,400 विद्वानों की आम राय।

ईसा मसीह क्या होने का दावा करते थे?
ईसा मसीह के परमेश्वर होने के दस अविश्वसनीय दावे।

साक्ष्य के अनुरूप
तथ्यों के आधार पर बारह बिंदुओं का निष्कर्ष

तो क्या?
परमेश्वर की सच्चाई आपके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण क्यों है।

छोटे शहर का न्यायाधीश

यीशु एकमात्र रास्ता क्यों हैं।

आपके निर्णय की महत्ता
आपकी मुक्त इच्छा-शक्ति आपकी अनंतता के लिए इतना महत्व कैसे रखती है।

उचित आस्था
तथ्यों पर आधारित आस्था उचित आस्था है।

बीटे का बहुत-बहुत धन्यवाद, जो हमेशा परमेश्वर को सबसे पहले रखती हैं।
उनकी सहायता के बिना, यह किताब कभी नहीं लिखी जा सकती थी।

9-22-18, 3सरा संस्करण
धर्मग्रंथ की सभी आयतें अंग्रेजी मानक संस्करण से ली गयी हैं

पवित्र बाइबिल, अंग्रेजी मानक संस्करण® (ESV®)
कॉपीराइट © 2001 क्रॉसवे द्वारा,
गुड न्यूज़ प्रकाशकों का प्रकाशन मंत्रालय।
सभी अधिकार सुरक्षित।
ईएसवी टेक्स्ट संस्करण: 2007

प्रिय दोस्त, क्या आप किसी पैराशूट के बिना चट्टान की किसी ऊँची चोटी से यह कहते हुए कूदने की कल्पना कर सकते हैं, "गुरुत्वाकर्षण आपके लिए सच है लेकिन मेरे लिए नहीं!" जब तक कि आप पागल ना हों, है ना? साक्ष्य की वजह से हम सभी जानते हैं कि गुरुत्वाकर्षण का नियम सही है। अगर हम कोई चीज गिराते हैं तो यह गिरती है, हमें ठोकर लगती है और हम गिरते हैं। मैं आप लोगों को यह बताना चाहूँगा कि मेरे कुत्तों को कोई अंदाज़ा नहीं है कि गुरुत्वाकर्षण क्या चीज है, इसलिए वो इसपर भरोसा नहीं कर सकते हैं, लेकिन वो कभी उड़ते नहीं हैं। गुरुत्वाकर्षण हर जगह, सबके लिए सच है, चाहे वो इसपर भरोसा करें या ना करें।

लेकिन क्या आपको लगता है कि परमेश्वर के बारे में कोई एक मान्यता सभी के लिए सच हो सकती है? मैंने अक्सर लोगों को कहते हुए सुना है, "परमेश्वर तुम्हारे लिए सच है, लेकिन मेरे लिए कोई और चीज सच है," मानो परमेश्वर का सच केवल एक व्यक्तिगत राय हो। वास्तव में, गुरुत्वाकर्षण की तरह ही बाइबिल सभी के लिए सच होने का दावा करता है, चाहे वे इसमें विश्वास करें या ना करें। कुल मिलाकर, यह आपको चेतावनी देता है कि बाइबिल की महत्वपूर्ण सलाह पर ध्यान दिए बिना इस संसार से जाना पैराशूट के बिना जहाज़ से कूदने से भी कहीं ज्यादा मूर्खता भरा है।

यह निश्चित है कि आपने परमेश्वर के होने या ना होने के बारे में सोचा होगा। सवाल यह है कि क्या आपके पास इसका समर्थन करने के लिए कोई प्रमाण है? यदि नहीं तो चाहे आप जो भी मानते हों यह अंधविश्वास है। यदि आपका विश्वास आपकी भावनाओं पर आधारित है या किसी और के विश्वास पर आधारित है तो आपको निश्चित रूप से एक अप्रत्याशित परिणाम मिलने वाला है। परमेश्वर के अस्तित्व और पहचान का सच्चाई की भावनाओं से या इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि कोई व्यक्ति या समूह क्या सच मानना चाहता है। सत्य खोजा गया है, इसका अविष्कार नहीं किया गया।

अगर आपको कभी भी ऐसा लगा है कि आपके परिवार या दोस्त आपको केवल इसलिए ईसाई

बनाना चाहते हैं क्योंकि वे आपको उसपर विश्वास दिलाना चाहते है जिसपर उन्हें विश्वास है तो आप गलत हैं। वे इसलिए चाहते हैं कि आप इसपर भरोसा करें क्योंकि साक्ष्य बताते हैं कि यह *सच* है।

जिस व्यक्ति ने आपको यह किताब दी है वो आपकी परवाह करता/करती हैं। वो मानते हैं कि आप अपनी आँखों से तथ्यों का निरीक्षण करने का और अभी एवं अनंतकाल के लिए, अपने जीवन पर बाइबिल के निहितार्थों को जानने का एक मौका पाने के लायक हैं। यह किताब आपको ईसाईयों के विश्वास पर भरोसा करने के लिए मजबूर करने का प्रयास नहीं करती है। ना ही यह सुझाव देती है कि परमेश्वर में भरोसा करने के लिए आप बौद्धिक आत्महत्या करें। यह मजबूत तथ्य शामिल करती है और एक उचित निर्णय लेने में आपको औचित्य, तर्क और सहज ज्ञान का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करती है। ईसाई धर्म के पास वैज्ञानिक और ऐतिहासिक समर्थन का व्यापक आधार है जिसका कोई और धर्म दावा नहीं कर सकता है। इन तथ्यों को अक्सर लोकप्रिय संस्कृति द्वारा विकृत और नज़रअंदाज़ किया जाता है, जो इसे गलत मानना पसंद करते हैं।

"ईसाई धर्म, यदि गलत है तो इसका कोई महत्व नहीं है, और यदि यह सही है तो इसका असीम महत्व है। एकमात्र चीज जो यह नहीं हो सकता है, वो है औसत रूप से महत्वपूर्ण।" –*गॉड इन द डॉक*, सी.एस. लुईस।

अंदर, आपको साक्ष्यों की एक आसान रुपरेखा मिलेगी। इसलिए मेरे साथ बने रहिये, हम शुरू करते हैं सत्य मौजूद है या नहीं इसका पता लगाने के लिए मूलभूत सिद्धांत, यह क्या है और क्या नहीं है। सत्य कैसे काम करता है इस बात को समझना परमेश्वर और जीवन के उद्देश्य के बारे में सत्य की खोज करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए कृपया सावधानीपूर्वक ध्यान दें।

"क्या जीवन एक महिमामंडित एकाधिकार का खेल है? आपके मरने पर, क्या सबकुछ बस एक डब्बे में वापस चला जाता है?" डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक, लेखक और वक्ता, *आई डोंट हैव इनफ फेथ टू बी एन अथेइस्ट*। www.crossexamined.org

यह धर्म के बारे में नहीं है, सत्य के बारे में है।

सत्य

क्या सत्य आपके लिए महत्वपूर्ण है?

- यदि आप किसी भयानक बीमारी से मर रहे हैं जिसे ठीक किया जा सकता है तो क्या आप बचने के लिए सही दवा लेना चाहेंगे?
- अपने जीवन भर की बचत को निवेश करने से पहले क्या आप जोखिमों के बारे में सच्चाई जानना चाहेंगे?
- क्या आप चाहेंगे कि आपके परिवार और दोस्त कभी-कभी, या हमेशा आपसे सच कहें?
- यदि आपके ऊपर उस हत्या का आरोप हो जो आपने नहीं की तो क्या आप चाहेंगे कि सच्चाई बाहर आये?

यदि आप इन क्षेत्रों में सच्चाई चाहते हैं तो ऐसा लगता है कि सच्चाई आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। तो, मृत्यु के उस पार क्या है? यदि परमेश्वर है और भौतिक

मृत्यु के बाद आपकी मंजिल आपके इस जीवन में किये गए फैसलों पर आधारित हो तो क्या अनंतकाल के बारे में सच्चाई महत्वपूर्ण होगी?

वस्तुनिष्ठ सत्य क्या है?

- यह निर्दिष्ट वस्तु से संबंधित होता है।
- यह वास्तविकता के अनुरूप होता है।
- इसे उसी तरह से कहना होता है जैसा यह है।
- अगर कोई इसपर विश्वास नहीं करता तो भी यह सत्य होता है।

यीशु और बाइबिल वस्तुनिष्ठ सत्य होने का दावा करते हैं।

"सच्चाई, सच्चाई होती है—भले ही इसे कोई ना जानता हो। सच्चाई, सच्चाई होती है—भले ही इसे कोई ना मानता हो। सच्चाई, सच्चाई होती है—भले ही इसपर किसी की सहमति ना हो। सच्चाई, सच्चाई होती है—भले ही कोई इसका पालन ना करता हो। सच्चाई, सच्चाई होती है—भले ही इसे परमेश्वर के अलावा कोई और पूरी तरह ना समझे।" पॉल कोपन, पाम बीच अटलांटिक विश्वविद्यालय में दर्शन और नैतिकता के अध्यक्ष, लेखक, *ट्रू फॉर यू बट नॉट फॉर मी*।

"सत्य निर्विवाद है। दुर्भावना इसपर हमला कर सकती है और अज्ञानता इसे नीचा दिखा सकती है, लेकिन, अंत में, यह जैसा का तैसा रहता है।" सर विंस्टन चर्चिल, www.quotations.about.com

गैर-विरोधाभास का नियम क्या है?

गैर-विरोधाभास का नियम हमारा अंतर्निहित झूठ संकेतक है जो सत्य का पता लगाने में हमारी सहायता करता है। यह विचार का मूलभूत सिद्धांत है जो हमें साफ-साफ बताता है कि विपरीत विचार एक ही समय पर और एक ही अर्थ में सत्य नहीं हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, पृथ्वी एक साथ चपटी और गोल नहीं हो सकती है। गैर-विरोधाभास का नियम स्पष्ट और अखंडनीय है। इस नियम की जानकारी यह समझने के लिए जरूरी है कि सत्य मौजूद है और इसका विपरीत हमेशा गलत होता है।

यह सत्य है कि आप इस समय यह किताब पढ़ रहे हैं। आप इस कथन में वस्तु हैं। तो यह सभी के लिए, हर जगह के लिए सत्य है कि आप इस समय यह किताब पढ़ रहे हैं। यह एक विरोधाभास, या झूठ है कि आप इसे नहीं पढ़ रहे हैं। चूँकि यह सत्य है कि वाशिंगटन डी.सी. अमेरिका की राजधानी है तो कोई भी अन्य मत, यहाँ तक कि भौगोलिक रूप से इसके सबसे निकट स्थित शहर भी, विरोधाभास और झूठ है। आपका कोई विशेष पहला और अंतिम नाम है जो सत्य है, जबकि कोई भी दूसरा नाम झूठ होगा। हम सभी ने स्कूल में बहु-विकल्प परीक्षाएं दी हैं; जिसमें एक सही जवाब होता था और बाकी सभी जवाब गलत होते थे, चाहे वो सत्य के कितने भी करीब हों। अपने विपरीतों की तुलना में, सत्य हमेशा सीमित और विशिष्ट होता है।

किसी कथन में विरोधाभास दावे को गलत दर्शाता है। उदाहरण के लिए: "मेरे

पास आपके लिए एक उपहार है और उन कामों की सूची है जो इसे पाने के लिए आपको करने की जरुरत है।" आप तुरंत समझ जाते हैं कि मेरे कथन का कोई अर्थ नहीं बनता क्योंकि जिस उपहार के लिए काम करने की जरुरत हो वो उपहार नहीं होता। कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि "सत्य का कोई अस्तित्व नहीं होता है," लेकिन ऐसा करते हुए, वे दावा करते हैं कि यह सच है कि सत्य का कोई अस्तित्व नहीं होता है। ये कथन विरोधाभासी हैं और इसलिए गलत हैं।

निष्कर्ष - सत्य होता है, यह महत्वपूर्ण है, और इसका विरोधाभासी हमेशा गलत होते हैं।

सच्चाई पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?

मुझे पूरा भरोसा है आप यह मानेंगे कि किसी व्यक्ति का अचानक ही सच्चाई से पाला पड़ सकता है। हम सभी ने स्कूल की कुछ परीक्षाओं में सही अनुमान लगाया है। लेकिन अचानक सच्चाई का अनुमान लगाना या सच्चाई पता चलने की उम्मीद करना निश्चित रूप से सही निर्णय लेने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है। निम्नलिखित तीन लोकप्रिय तरीके हैं जिनके प्रयोग से लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि कोई चीज सही है या नहीं। कोई निर्णय लेने के लिए सच्चाई जरूरी होने पर आप कौन सा तरीका चुनेंगे?

1. मेरी भावनाएं—यह सही लगता है और यह मुझे उद्देश्य, उम्मीद और मन की शांति देता है, तो मुझे लगता है कि यह सच है।
2. मेरा परिवार या मेरा कोई विश्वासपात्र इसपर भरोसा करता है तो मैं भी करता/करती हूँ।
3. साक्ष्य, संगतता, साक्ष्य के अनुरूप।

जिन लोगों से भी मैंने यह सवाल किया उनमें से लगभग पंचानबे प्रतिशत लोगों ने तुरंत तीसरा विकल्प चुना। लेकिन जब मैं उन्हीं लोगों से यह पूछता हूँ कि उन्हें परमेश्वर में भरोसा है या नहीं तो बहुत ही अजीब चीज होती है। अब जिन लोगों ने मुझे अभी-अभी बताया था कि सत्य बहुत महत्वपूर्ण है और साक्ष्य इसका पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका है, वही अचानक कहते हैं कि परमेश्वर के बारे में उनकी मान्यताएं साक्ष्य पर आधारित नहीं हैं, बल्कि उनकी भावनाओं या किसी और के विश्वास पर आधारित हैं। इसलिए, ऐसा संभव है कि परमेश्वर के बारे में आपका वर्तमान विश्वास भी साक्ष्य पर आधारित ना हो। समस्या यह है कि प्रत्येक मत में ऐसे सच्चे अनुयायी हैं जो सच्चाई का पता लगाने का दावा करते हैं। इसलिए, क्या कोई एक मत ही सही है और परमेश्वर को पाने का एकमात्र मार्ग है, या सभी मार्ग स्वर्ग की ओर ले जाते हैं? क्या परमेश्वर सचमुच है? यदि हम अपनी खोज को केवल भावनाओं और व्यक्तिगत अनुभव जैसे आत्म-परक साक्ष्य पर आधारित रखते हैं तो यह भ्रामक होता है क्योंकि प्रत्येक मत में ऐसे अनुयायी हैं जो दोनों की पुष्टि करेंगे। यदि हम किसी चीज पर इसलिए भरोसा करते हैं क्योंकि कोई और करता है, तो हमें निश्चित रूप से यह कैसे जानते हैं कि उन्होंने सत्य का पता लगा लिया है? क्या उन्होंने साक्ष्य की जांच की, या वो केवल अपनी भावनाओं में बह रहे हैं या भेड़चाल में चल रहे हैं?

हमारी आस्था सत्य पर आधारित है या नहीं यह पता लगाने का एकमात्र वैध

तरीका है, खुद वस्तुनिष्ठ साक्ष्य की जांच करना, जो हम किसी भी बड़े फैसले के संबंध में करेंगे। वस्तुनिष्ठ साक्ष्य को किसी के भी द्वारा जांचा जा सकता है और यह आवेश, भावनाओं या निजी अनुभव की वजह से नहीं बदलता है। वस्तुनिष्ठ साक्ष्य का एक उदाहरण वैज्ञानिक और ऐतिहासिक तथ्य हैं।

मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि आपको अपनी भावनाओं को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर देना चाहिए, क्योंकि जब आपके पास सत्यापन योग्य तथ्य होते हैं और एक से ज्यादा ठोस विकल्प होते हैं तो यह सहायक हो सकता है। इसलिए, अपनी भावनाओं को प्रयोग करें, लेकिन मैं आग्रह करता हूँ कि आप उन्हें तथ्यों के ऊपर ना रखें। परमेश्वर के बारे में सच्चाई का पता लगाना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रत्येक मत मोक्ष और अनंतकाल के बारे में विचार शामिल करता है। वस्तुनिष्ठ साक्ष्य के आधार पर उचित निर्णय लेने में ही समझदारी होती है।

निष्कर्ष - वस्तुनिष्ठ साक्ष्य की जांच करना सत्य खोजने का सबसे अच्छा तरीका है।

क्या सच्ची आस्था किसी धारणा को सत्य बना सकती है?

कई लोगों को लगता है कि आस्था किसी चीज में इतना अधिक विश्वास करने के बारे में है कि यह सच हो जाये (विशेष रूप से परमेश्वर के बारे में)। वे मानते हैं कि आस्था किसी चीज में उनके विश्वास से ज्यादा महत्वपूर्ण है, लेकिन वो गलत हैं।

सच्चाई यह है कि किसी व्यक्ति की आस्था का उद्देश्य खुद आस्था से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण होता है।

यहाँ इसका एक उदाहरण है। हम स्काइडाइविंग पर जा रहे हैं और मैं आपको एक पैराशूट या कोई कामचलाऊ उपकरण देने के लिए कहता हूँ जिसे मैंने कल रात बनाया था। आप क्या लेंगे? मुझे उम्मीद है कि आप पैराशूट चुनेंगे, क्योंकि इसका कोई साक्ष्य नहीं है कि मेरा कामचलाऊ उपकरण काम करेगा। साक्ष्य पर आधारित आस्था तर्कसंगत आस्था होती है। इस उदाहरण में, पैराशूट और मेरा कामचलाऊ उपकरण उद्देश्य हैं। यदि आस्था उद्देश्य से ज्यादा महत्वपूर्ण होती तो आप अपने पीठ पर कुछ भी बांधकर, जहाज़ से कूद सकते थे, लेकिन यह यथार्थ नहीं है। आस्था के काम करने के लिए, इसका सच्चाई में होना जरूरी है। यह पता लगाने के लिए कि कौन से विकल्प के सत्य होने के संभावना सबसे ज्यादा है, हमें साक्ष्य की जरुरत पड़ती है। यदि आप मेरा कामचलाऊ उपकरण चुनते तो आप अंधविश्वास कर रहे होते।

तो, अपने जीवन का कोई सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए आप अंधविश्वास पर क्यों निर्भर रहेंगे—परमेश्वर का अस्तित्व और पहचान और हमारी अनंतता? हमारी धारणा साक्ष्य से समर्थित है या नहीं यह देखने के लिए तथ्यों की जांच करना समझदारी है। किसी जासूस के बारे में बात करें जो रहस्यों को सुलझाकर अपना पेट पालता है तो यह स्पष्ट है कि यदि वो कभी तथ्यों का निरीक्षण ना करे, या यदि अपनी भावनाओं या किसी और के विश्वास के आधार पर अभियोग का मुकदमा दायर करे तो उसके गलत निष्कर्ष पर आने की संभावना सबसे ज्यादा होगी।

मैं आपको एक काल्पनिक तस्वीर प्रदान करता हूँ कि हम क्या करने वाले हैं, चलिए मान लेते हैं कि आप बर्फ पार करके किसी बर्फीली झील के दूसरी तरफ जाना चाहते हैं। बर्फ में अपना विश्वास रखने से पहले, आप इस बात का कोई साक्ष्य चाहेंगे कि यह आपको संभाल लेगी या नहीं, क्योंकि पतली बर्फ मौत का कारण बन सकती है। आप आसपास के लोगों से सवाल कर सकते हैं और देख सकते हैं कि कोई और बर्फ पर है या नहीं। आप बर्फ में छेद करके इसकी मोटाई भी देख सकते हैं। लेकिन चूँकि यह सुनिश्चित करना सौ प्रतिशत संभव नहीं है कि बर्फ झील के दूसरे किनारे तक आपको संभाल पायेगी, इसलिए एक ऐसा समय आएगा जहाँ यदि आप दूसरी तरफ पहुंचना चाहते हैं तो आपको विश्वास करना होगा और एक निर्णय लेना होगा। हम अपनी जांच में, जहाँ तक संभव होगा साक्ष्य का पालन करेंगे; बाकी की यात्रा करने के लिए विश्वास की जरुरत होगी। यह अंधों की तरफ पतली बर्फ पर चलने से कहीं ज्यादा उचित लगता है, है ना?

मेर्रियम वेबस्टर शब्दकोश आस्था को इस रूप में परिभाषित करता है "किसी चीज में दृढ़ विश्वास जिसके लिए कोई प्रमाण नहीं होता है," लेकिन यह ऐसा नहीं कहता कि "जिसके लिए कोई साक्ष्य नहीं होता है।"
www.merriam-webster.com/dictionary/faith

आस्था बहुत महत्वपूर्ण है और ऐसे किसी भी निर्णय के लिए जरूरी है *जहाँ हमारे पास सौ प्रतिशत प्रमाण नहीं होता है;* इसलिए यह ईसाई धर्म के लिए आवश्यक है। यह उनके लिए भी जरूरी है जो यह दावा करते हैं कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है, क्योंकि किसी ने भी ब्रह्मांड की उत्पत्ति, पहला जीवन या एक प्रजाति से किसी दूसरी प्रजाति में विकास नहीं देखा, जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं।

जहाँ तक ईसाई धर्म की बात आती है, बाइबिल कहती है कि आस्था हमें उस मोक्ष से जोड़ती है जो परमेश्वर हमें अनुग्रह के माध्यम से प्रदान करते हैं। इसलिए, आस्था के बिना, कोई भी व्यक्ति मोक्ष के लिए परमेश्वर में अपना विश्वास नहीं रख सकता है। लेकिन बाइबिल सच्चाई में रखी गयी आस्था की बात कर रही है, जो यह होने का दावा करती है। सबसे सच्ची आस्था भी मेरे कामचलाऊ यंत्र को पैराशूट की तरह काम करने के लिए या बर्फ को मोटा बनाने के लिए मजबूर नहीं करेगी। यह इतिहास नहीं बदल सकती (यदि यीशु मरकर दोबारा ज़िंदा नहीं हुए थे तो सच्ची आस्था भी उस तथ्य को नहीं बदल पायेगी) और यह परमेश्वर के सत्य होने के बारे में झूठा विश्वास भी नहीं बनाएगी। हालाँकि हम जानते हैं कि हमें ऐसे लोग मिल सकते हैं तो ग्रीक परमेश्वर ज़ीउस और अपोलो में विश्वास करते हैं, लेकिन यदि वो वास्तविक नहीं हैं तो सच्ची आस्था भी उन्हें सत्य नहीं बना पायेगी।

निष्कर्ष – आस्था का उद्देश्य आस्था से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। यदि उद्देश्य गलत है तो सबसे सच्ची आस्था भी इसे सत्य नहीं बना पायेगी।

आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं

आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं कथन में समस्याओं की एक लंबी सूची

शामिल है जो हमें बताती है कि यह गलत है। मैं इसकी चर्चा इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि कभी-कभी लोग कहते हैं "ईसाई धर्म आपके लिए सच है लेकिन मेरे लिए नहीं।" ऐसा कहने वाले लोग विश्वास और सच्चाई के बीच उलझे रहते हैं। लेकिन अकेले विश्वास ही इस बात का आश्वासन नहीं देता कि वर्तमान मुद्दा सत्य है। दूसरी तरफ, सत्य ऐसी किसी मान्यता पर ध्यान नहीं देता जो इसका विरोध करती है। सत्य वास्तविकता और संदर्भ की जाने वाली वस्तु के अनुरूप होता है। इस किताब के शीर्षक को जानबूझकर विरोधाभासी रखा गया है ताकि आपका ध्यान आकर्षित किया जा सके: *गुरुत्वाकर्षण—आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं।* यह दर्शाता है कि गुरुत्वाकर्षण जैसा वस्तुनिष्ठ सत्य ऐसे किसी व्यक्ति पर लागू नहीं होता जो इसपर भरोसा नहीं करता है। लेकिन चूँकि सत्य ऐसे काम नहीं करता, इसलिए इस किताब का शीर्षक उतना ही आत्मघाती है जितना कि यह दावा कि, "बाइबिल आपके लिए सत्य है लेकिन मेरे लिए कुछ और सही है।" निम्नलिखित उद्धरण अपने लिए इसे साबित करने का एक आसान तरीका उजागर करता है:

"*आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं* एक आत्मघाती और गलत कथन है। आज आप इसे अपने लिए पूरी तरह से साबित कर सकते हैं, बस मार्ग 55 पर 90 की गति से गाड़ी चलाइये और जब पुलिस गति के लिए आपको रोके तो कहिये, 'यह आपके लिए सत्य है मेरे लिए नहीं,' और इसके बाद चले जाइये। चूँकि यह आपके लिए सत्य नहीं है इसलिए वो आपको टिकट नहीं दे सकता, है ना?" डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक लेखक और वक्ता, www.Crossexamined.org

आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं यह भी दावा करता है कि कोई भी चीज तभी तक सत्य है जब तक कि कोई इसपर भरोसा करता है। यदि ऐसा होता तो हम सभी को स्कूल में अच्छे ग्रेड मिलने चाहिए थे। जो भी जवाब मैंने दिया वो मेरे लिए सत्य था।

ऐसा भी कहा जा सकता है कि आइसक्रीम के स्वाद और कमरे के तापमान की बात आने पर *आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं* गलत है, क्योंकि सत्य वस्तु के ऊपर लागू होता है। उदाहरण के लिए: आपको वनीला पसंद है, मुझे चॉकलेट पसंद है और हम एक ही कमरे में हैं और आपको ठंडी लग रही है और मुझे गर्मी। कथन के उद्देश्य के रूप में आपका संदर्भ देते हुए, यह हर जगह सभी के लिए सत्य है कि आपको वनीला पसंद है और आपको ठंडी लगती है। कथन के उद्देश्य के रूप में मेरा संदर्भ देते हुए, यह हर जगह सभी के लिए सत्य है कि मुझे चॉकलेट पसंद है और मुझे गर्मी लगती है। यहाँ एक रैप सांग की पंक्ति है जो हमारे विषय की विरोधी प्रकृति को ज्यादा स्पष्ट करती है।

"यदि जो आपके लिए सत्य है वो आपके लिए सत्य है और जो मेरे लिए सत्य है मेरे लिए सत्य है तो अगर मेरा सत्य यह कहे कि आपका सत्य गलत है तो क्या होगा?" लेक्रे, रेबेल एल्बम।

यह ठीक उसका विपरीत है जिस प्रकार से सत्य काम करता है, *आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं* तर्क गलत समझ से आता है और इसकी वजह से गलत निष्कर्ष निकलता है, "परमेश्वर के बारे में मैं जो भी विश्वास करता हूँ वो इसलिए सत्य है क्योंकि मैं इसपर विश्वास करता हूँ।" विडंबना यह है कि यह कल्पना करके कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है या अपने मतलब के हिसाब से परमेश्वर बनाकर, लोग परमेश्वर के साथ खेलते हैं।

मेरी राय में, *आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं,* सत्य को अस्वीकार करके या इसे अनदेखा करके इससे भागने का एक प्रयास है। हो सकता है यह थोड़ी देर के लिए काम कर जाए, लेकिन, अंत में, जिस सत्य से हम बचने की कोशिश कर रहे हैं हमें उसका सामना करना ही होगा, और हम जितना ज्यादा इंतज़ार करते हैं, इसकी उतनी ही ज्यादा कीमत हमें चुकानी पड़ती है। किसी शराबी, नशाखोर या खर्चीले इंसान से पूछिए कि सच्चाई से सामना होने के बाद अस्वीकृति कितनी अच्छी तरह से काम करती है। सत्य हमेशा उभरकर सामने आता है और परमेश्वर का सत्य भी कोई अपवाद नहीं है। सत्य का जल्दी सामना करना, इसे स्वीकार करना और इससे निपटना अच्छा होता है।

"यह कहना बिलकुल गलत है कि कोई चीज आपके लिए सही है लेकिन मेरे लिए नहीं। उदाहरण के लिए, अगर मुझे लगता है कि फासिस्टवाद मेरे लिए सत्य है और आपको लगे कि स्वतंत्र लोकतंत्र आपके लिए भी उतना ही सत्य है तो क्या होगा? क्या स्वतंत्र लोकतंत्र में विश्वास करने वाले को फासीवादी दमन सहना चाहिए? अगर नहीं, तो किस आधार पर? स्तालिनवाद या शैतानवाद या नाज़ीवाद को स्वीकृति क्यों ना दी जाए? सत्य निर्धारित करने के मापदंड के बिना, यह सापेक्षवाद बुरी तरह से विफल होता है।" थियोलॉजी किंग्स कॉलेज के प्रोफेसर एलिस्टर मैकग्राथ, पॉल कोपन की पुस्तक, *"आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं"* से लिया गया।

निष्कर्ष - आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं आत्मघाती और गलत कथन है। यदि बाइबिल सही है तो यह सभी के लिए, हर जगह, सही है, चाहे आप इसपर विश्वास करें या ना करें।

परमेश्वर के बारे में सबकी मान्यता सही क्यों नहीं हो सकती है

कई सच्चे और अच्छे लोगों को अपनी इच्छानुसार कोई भी विश्वास रखने का अधिकार है, जिनके मन में परमेश्वर को लेकर अलग-अलग मान्यताएं हैं। हालाँकि, जहाँ तक परमेश्वर के अस्तित्व और पहचान की बात आती है सभी लोगों की मान्यताएं सत्य नहीं हो सकती हैं। यह लापरवाह या असहिष्णु नहीं है; सत्य ऐसे ही काम करता है। यदि सच्चाई अपना खंडन कर सकता तो ईसाई और नास्तिक दोनों परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में सही होते; हमें पता है कि यह असंभव है।

मान लीजिये आप एक जासूस हैं और छह लोग (नास्तिक, बौद्ध, मुस्लिम, मॉर्मन, हिंदू और ईसाई) अपनी अलग-अलग कहानियों के साथ एक विशाल संपत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी होने का दावा करने के लिए आते हैं। क्या वो सभी सच बोल सकते हैं? नहीं, आप तुरंत समस्या को पहचान लेंगे। एकमात्र उत्तराधिकारी होने का दावा करने वाले छह लोग एक विरोधाभास हैं और यह सच नहीं हो सकता है। इसलिए, आप उनकी कहानियों की जांच करेंगे और सच्चाई का पता लगाने के लिए साक्ष्य का पता लगाएंगे। किसी बिंदु पर, उनके व्याख्या आपके जांच-पड़ताल के तथ्यों से अलग होगी। एक बार पता लगाने के बाद कि असली उत्तराधिकारी कौन है, आपको अपने आप पता चल जायेगा कि अन्य पांच दावे झूठ थे, चाहे वो सच्चाई के कितने भी करीब लगे हों।

जहाँ तक परमेश्वर की बात आती है, यह भी एक ऐसी ही स्थिति है। ऐसे कई लोग उभरकर सामने आये हैं जो परमेश्वर की सच्चाई जानने का दावा करते हैं।

सतही तौर पर, ऐसा लग सकता है कि उनमें से ज्यादातर एक समान दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन करीब से देखने पर पता चलता है, महत्वपूर्ण बिंदुओं की बात आने पर, वो सभी एक-दूसरे का खंडन करते हैं। उदाहरण के लिए, ईसाई धर्म एकमात्र ऐसा धर्म जो केवल आस्था के माध्यम से, परमेश्वर की कृपा से मोक्ष सिखाता है। अन्य धर्म अच्छे कर्मों और विशेष स्थितियों को आवश्यकता मानते हैं। यह एकमात्र ऐसा धर्म है जो सिखाता है कि यीशु मानव रूप में एक परमेश्वर थे जो हमें बचाने आये थे। अन्य सिखाते हैं कि यीशु परमेश्वर नहीं थे।

यीशु, मोक्ष और अनंतता के बारे में विरोधाभासी दावे

1. **बाइबिल ईसाई धर्म** – एक परमेश्वर, मानव रूप में परमेश्वर के बेटे यीशु; केवल यीशु में आस्था के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से मोक्ष; आस्था रखने वालों के लिए स्वर्ग; आस्था नहीं रखने वालों के लिए नर्क।.
2. **पारंपरिक रोमन कैथोलिकवाद** – एक परमेश्वर, मानव रूप में परमेश्वर के बेटे यीशु; यीशु में विश्वास साथ ही यहाँ और शुद्धि के स्थान में कर्मों, संस्कारों और तपस्या के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से मोक्ष; सच्ची आस्था रखने वालों के लिए अंतिम परिणाम स्वर्ग है; आस्था नहीं रखने वाले नर्क में जायेंगे। (कई कैथोलिक एक में सूचीबद्ध बिंदुओं को स्वीकार करेंगे। दूसरा पारंपरिक कैथोलिकवाद है।)
3. **यहूदी धर्म** – एक परमेश्वर, यीशु के बारे में मान्यताएं महान नैतिक शिक्षक से लेकर आदर्श और झूठे पैगंबर तक अलग-अलग हैं; केवल एक मनुष्य, वो मानते हैं कि मसीहा/रक्षक अभी आने वाला है; यहूदी आस्थावान दैवीय आदेशों को मानकर और अच्छे काम करके अपना जीवन पवित्र बना सकते हैं और परमेश्वर के करीब आ सकते हैं; परमेश्वर अच्छाई को पुरस्कृत करते हैं और बुराई को दंड देते हैं; मरे हुए दोबारा जीवित हो जायेंगे; अत्यधिक बुरा कर्म करने वाले हिटलर जैसे लोग अनंतकाल तक दंड भोगते हैं।
4. **इस्लाम** – यीशु पैगंबर थे; अल्लाह, मोहम्मद और अच्छे कर्म में विश्वास से मोक्ष; सच्चे आस्थावान जन्नत जाते हैं; जो मुस्लिम नहीं हैं वो जहन्नुम जाते हैं।
5. **हिंदू धर्म** – यीशु पैगंबर थे; करोड़ों देवी-देवता; अच्छे कर्मों और कर्म भोगने के बाद मोक्ष; पुनर्जन्म।
6. **बौद्ध धर्म** – यीशु एक प्रबुद्ध मनुष्य थे; अष्टांगिक मार्ग और कर्मों के माध्यम से इच्छा का त्याग करने से मोक्ष; निर्वाण, एक प्रकार का स्वर्ग, पाने के लिए अहंकार समाप्त करें। बुद्ध जन्म से एक हिंदू थे और उन्होंने जाति प्रथा के कारण हिंदू धर्म और भगवान का त्याग कर दिया था। कुछ लोगों का मानना है कि वो एक नास्तिक थे। बौद्ध धर्म के बाद के स्वरूपों में उनकी शिक्षा में कुछ रूपों में परमेश्वर को जोड़ा गया है।
7. **उच्च शक्ति** – परमेश्वर, यीशु, मोक्ष और अनंतता के बारे में कोई व्यक्ति जो भी विश्वास करता है वो सच है। परमेश्वर के बारे में हर एक विश्वास तब तक सत्य है जब तक कि कोई इसपर भरोसा करता है। (सभी शिक्षाओं को समान रूप से सत्य मानना सिखाता है कि सत्य अपने आपका खंडन कर सकता है, जो हमें पता है कि गलत है।)
8. **नव युग** – यीशु प्रबुद्ध मनुष्य/परमेश्वर थे; मोक्ष की जरुरत नहीं है क्योंकि हम सभी यीशु के समान परमेश्वर हैं, लेकिन हमें इसका पता नहीं है; नए जीवन में पुनर्जन्म कर्मों पर आधारित होता है; अनुयायियों के बीच विरोधाभास फैला हुआ

है इसलिए मान्यताएं व्यापक रूप से अलग-अलग हो सकती हैं।

9. **मॉर्मनवाद** – यीशु, शैतान के आत्मिक भाई, एक समय पर सभी मनुष्यों के समान मनुष्य थे; उनके एक सिद्धांतों में से एक है कि एक बार परमेश्वर हमारे समान मनुष्य था; यीशु में आस्था से मॉर्मनवाद का पालन करके और अच्छे कर्मों से मोक्ष की प्राप्ति; गैर-मॉर्मन को मरने के बाद बदलने का एक दूसरा मौका मिलता है; सर्वश्रेष्ठ मॉर्मन को अपना खुद का ब्रह्माण्ड मिलता है और वो इसके परमेश्वर होते हैं; सबसे खराब लोगों को अनंतकाल तक अंधकार में धकेल दिया जाता है; एकमात्र सच्चा चर्च होने का दावा करता है। चर्च ऑफ जीसस क्राइस्ट ऑफ लैटर डे सेंट्स या एलडीएस द्वारा भी जाना जाता है।

10. **यहोवा के साक्षी** – यीशु परमेश्वर नहीं है। यीशु महादूत माइकल हैं; यीशु में आस्था साथ ही कर्मों और यहोवा की शिक्षाओं के पालन से मोक्ष; ज्यादातर आस्थावान नवीकृत पृथ्वी पर अनंतकाल तक रहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि स्वर्ग भरा हुआ है; आस्था ना रखने वाले मर जाते हैं, उनका अस्तित्व मिट जाता है; एकमात्र सच्चा चर्च होने का दावा करता है।

11. **अनीश्वरवाद/मानवतावाद** – यीशु केवल एक आदमी है; कोई पुनर्जीवन नहीं, लोग मरकर दफ़न
हो जाते हैं।

हमारी सूची से पता चलता है कि नव युग के आस्थावान, मॉर्मोन, यहोवा के साक्षी और अन्य लोग इस बात पर भरोसा करते हैं कि यीशु का अस्तित्व है, लेकिन यीशु का उनका संस्करण बाइबिल और एक-दूसरे का खंडन करता है। मुस्लिम कहते हैं कि यीशु का अस्तित्व था, लेकिन वो सूली पर मरकर ज़िंदा नहीं हुए थे। ज्यादातर धर्म कहते हैं कि यीशु केवल एक मनुष्य थे।

बाइबिल बताती है कि यीशु मनुष्य रूप में परमेश्वर हैं और स्वर्ग पहुँचने का एकमात्र रास्ता हैं। सभी लोग सही नहीं हो सकते हैं। बाइबिल के विपरीत यीशु के संस्करण तक आने के लिए, लोग अक्सर मनमाने तरीके से बाइबिल के उन हिस्सों को अस्वीकार कर देते हैं जो उन्हें पसंद नहीं हैं और अपने खुद के यीशु का निर्माण करते हैं। इसके बाद वे शिक्षाओं के साथ अन्य किताबों को मिलाते हैं जो यीशु की शिक्षाओं के विरुद्ध हैं, और बिना किसी साक्ष्य के वो दावा करते हैं कि ये सही हैं, और बाइबिल गलत है। हालाँकि, इस सूची में सभी का समावेश नहीं किया गया है, लेकिन दूसरों को जोड़ने पर विरोधाभास और भी ज्यादा होते हैं।

यदि साक्ष्य दिखाता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है तो हम उन मान्यताओं को हटाने के लिए गैर-विरोधाभास के नियम का प्रयोग करेंगे जो सत्य का विरोध करते हैं। मैं यह फिर से कहना चाहता हूँ कि हमें एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए और उनके साथ रहना चाहिए। हर व्यक्ति को उस मत में विश्वास रखने का अधिकार है जिसमें वो विश्वास करना चाहता है, और किसी को भी अपने मत को किसी अन्य व्यक्ति पर थोपने का अधिकार नहीं है। लेकिन इस मामले की सच्चाई निम्नलिखित उद्धरण में बताई गयी है:

"विपरीत मत हो सकते हैं, लेकिन विपरीत सत्य नहीं हो सकते।" डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक, लेखक, *आई डोंट हैव इनफ फेथ टू बी एन अथेइस्ट*।

संकीर्ण विचारधारा वाले और असहिष्णु ईसाई

ईसाई धर्म को अक्सर असहिष्णु माना जाता है और इसे इस बात के कारण बार-बार अस्वीकार कर दिया जाता है कि यीशु को स्वर्ग जाने का एकमात्र तरीका बताया गया है।

यीशु ने उससे कहा, "मैं रास्ता हूँ, और मैं सत्य हूँ, और मैं जीवन हूँ। कोई भी मुझसे गुजरे बिना परमपिता तक नहीं पहुँचता है।" यूहन्ना 14:6

लेकिन जैसा कि आप सूची से देख सकते हैं, जहाँ तक मोक्ष और अनंतता की बात आती है, ज्यादातर मत विशिष्ट हैं। उदाहरण के लिए, नास्तिकता बहुत विशिष्ट है और यदि यह सत्य है तो कोई भी अन्य मत सत्य नहीं हो सकते हैं। यहाँ सच्चाई यह है कि हर मत के अनुयायी दावा करते हैं कि उन्होंने सत्य को पा लिया है। कोई भी ऐसी किसी चीज में अपनी आस्था नहीं रखना चाहेगा जिसे वो निश्चित रूप से जानते हैं कि वो एक झूठ है।

नव युग और उच्च शक्ति जैसे मत अपवाद होंगे जो विरोधाभासी होते हैं। कुछ हद तक ये शिक्षाएं कहती हैं कि सभी या कई मत एक समान रूप से सत्य हैं। इसलिए, सच्चाई खुद का विरोध कर सकती है, जो हमें पता है कि असंभव है, क्योंकि हम समझते हैं कि सच्चाई कैसे काम करती है।

इसलिए, यह सवाल बना रहता है: सत्य किसके पास है?

यह उनकी गलती नहीं है

लोगों को अक्सर ऐसे मत से कठिनाई होती है जो एकमात्र तरीका होने का दावा करता है। वे बताते हैं कि कई लोग केवल अपने मूल देश के कारण किसी मत पर विश्वास करते हैं, इसलिए यह उनकी गलती नहीं है कि वो ईसाई नहीं हैं। यदि आपका जन्म सऊदी अरब में हुआ था तो शायद आप मुस्लिम होंगे। हालाँकि मैं इस कथन से सहमत हूँ, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि उनका मत सत्य है। इस तर्क का प्रयोग करके, हमें यह कहना पड़ेगा कि जर्मनी में नाजीवाद में जन्मे लोग या दक्षिण में कू क्लक्स क्लान में जन्मे लोग भी सही थे—यह उनकी गलती नहीं है। वास्तविकता यह है कि किसी का मूल स्थान या मत के लिए ईमानदारी यह सिद्ध नहीं करता है कि यह सही या गलत है। केवल साक्ष्य ऐसा कर सकते हैं। यह तथ्य दुनिया भर में उन लोगों द्वारा समर्थित हैं जिन्होंने अपने देश के प्रमुख मत से इस धर्म में परिवर्तन किया है, जिनकी संख्या फिलीपींस में 63 मिलियन, चीन में 70 मिलियन और नाइजीरिया में 38 मिलियन आंकी गयी है।

निष्कर्ष - सत्य खुद का खंडन नहीं कर सकता है। इसलिए परमेश्वर के बारे में सभी मत सही नहीं हो सकते हैं।

स्थापित सत्य पर की गयी कार्यवाही

स्थापित सत्य पर की गयी कार्यवाही ईसाई आस्था के लिए मेरी पसंदीदा परिभाषा है। इसके बारे में थोड़ी देर के लिए सोचिये। इसके अनुसार, इतिहास में सचमुच ऐसा कुछ हुआ था जिसने सबसे पहले लोगों को यीशु को अपने रक्षक के रूप में मानने के लिए प्रेरित किया होगा। शिष्य इस बात की गवाही देते हैं कि यीशु भरोसेमंद सिद्ध हुए थे, और उन्होंने अपने बड़े दावों को उनकी आँखों के सामने पूरा किया था। यीशु के चमत्कारों और पुनर्जन्म के आधार पर, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उन्होंने जो कुछ भी कहा उसे पूरा किया इसलिए

उनपर भरोसा करना उचित था।

कुछ लोग दावा करते हैं कि परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए उन्हें किसी साक्ष्य की जरुरत नहीं है। लेकिन बाइबिल में हम जो देखते हैं उसके आधार पर, यीशु इस बात को बिलकुल सिरे से ख़ारिज करते हैं। केवल भावनाओं पर भरोसा करने और दूसरे जिसपर भरोसा करते हैं उसपर भरोसा करने के कारण ही इतने सारे लोग भटक गए हैं। ईसाई धर्म में आस्था कल्पना में की जाने वाली आस्था नहीं है, और ना ही यह भावनाओं पर आधारित है। यह वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है जिन्हें लोगों ने अपनी आँखों से देखा और बताया है। इसके अलावा, हमारे पास पूर्व विधान की भविष्यवाणियां भी हैं जो आने वाले मसीहा के बारे में बताती हैं। जब यीशु परमेश्वर होने का दावा करते हुए आये तो तथ्यों से पता चलता है कि उन्होंने उन भविष्यवाणियों को पूरा किया, अपनी पहचान साबित करने के लिए चमत्कार किये और मरकर ज़िंदा हुए।

अपनी मृत्यु के बाद उसने (यीशु) अपने आपको बहुत से ठोस प्रमाणों के साथ उनके सामने प्रकट किया कि वह जीवित है। वह चालीस दिनों तक उनके सामने प्रकट होता रहा और परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें बताता रहा। (प्रेरितों के काम 1:3, जोर दिया गया)।

"लेकिन यदि मैं अपने परमपिता के ही कार्य कर रहा हूँ, तो, यदि तुम मुझमें विश्वास नहीं करते तो उन कार्यों में ही विश्वास करो जिससे तुम यह अनुभव कर सको और जान सको कि परमपिता मुझमें है और मैं परमपिता में।" (यूहन्ना 10:38, जोर दिया गया)।

बाइबिल के अनुसार, देवदूत पौलुस (पुनर्जीवित यीशु के साक्षी - 1 कुरिन्थियों 15:8) यहूदी मंदिरों में गए और उन्होंने यहूदियों को समझाया कि यीशु मसीहा हैं। इस अगली आयत में, पौलुस स्पष्ट रूप से बताते हैं कि एक ईसाई का विश्वास बेकार जाता यदि वास्तव में पुनर्जन्म नहीं हुआ होता:

और यदि मसीह को ज़िंदा नहीं किया गया तो हमारा उपदेश देना बेकार है और आपका विश्वास भी बेकार है। (1 कुरिन्थियों 15:14)

मैं पौलुस से सहमत हूँ, और मैं ईसाई नहीं होता यदि जिन तथ्यों की हम जांच कर सकते हैं वो दर्शाते कि सच कुछ और था। यदि ईसाई धर्म सहित, परमेश्वर के बारे में कोई भी मत गलत है तो दुनिया की सारी आस्था मिलकर भी इसे सच नहीं बना सकती है।

आप दावा कर सकते हैं कि चमत्कार संभव नहीं हैं, और निर्जीव से जीवन नहीं आ सकता है, इसलिए पुनर्जीवित होना असंभव है, और ईसाई की आस्था बेकार है। यदि परमेश्वर नहीं है तो मैं इसे स्वीकार करता हूँ। लेकिन यदि तथ्य कहते हैं कि परमेश्वर सचमुच है तो आप पुनर्जीवन सहित चमत्कारों से इंकार नहीं कर सकते हैं। इसलिए, परमेश्वर का अस्तित्व है या नहीं यह पता लगाने के लिए हम अपने अगले चरण में वैज्ञानिक तथ्यों की जांच करेंगे। बाद में हम यह देखने के लिए तथ्यों की जांच करेंगे कि बाइबिल के दावों पर भरोसा करना उचित है या नहीं।

निष्कर्ष – ईसाई आस्था पुनर्जन्म जैसी ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है, जिसकी जांच की जा सकती है। शिष्यों ने यीशु में अपनी आस्था इसलिए रखी क्योंकि उन्होंने परमेश्वर होने के अपने दावे को उनके सामने

सिद्ध किया था।

साक्ष्य के अनुरूप

हालाँकि हम अनुभव से (बार-बार परीक्षण और अवलोकन से) परमेश्वर के अस्तित्व और उनकी पहचान को साबित नहीं कर सकते हैं, जैसा कि गुरुत्वाकर्षण के साथ किया जा सकता है, लेकिन कई लोगों का मानना है कि साक्ष्य साबित करते हैं कि यह निःसंदेह बिलकुल सत्य है। यह वही मापदंड है जिसे हम अपनी न्याय प्रणाली में हर दिन प्रयोग करते हैं।

जिम वालेस अनसुलझे आपराधिक जांच में हत्या के जासूस हैं जो साक्ष्य के आधार पर नास्तिक से ईसाई बने हैं। वो अपनी वेबसाइट coldcasechristianity.com/ पर बताते हैं कि जब वो अलमारी से किसी मामले की फाइल निकालते हैं तो उनका काम उस संदिग्ध का पता लगाना होता है जो साक्ष्य के सबसे ज्यादा अनुरूप होता है। मान लीजिये आप कोई जासूस हैं और आपके पास बीस साक्ष्य और पांच संदिग्ध हैं। यदि पांच विवरण एक संदिग्ध पर लागू होते हैं तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन अगर वही संदिग्ध बार-बार तथ्यों से मेल करता हुआ दिखाई देता है तो आप इसे लेकर रोमांचित होंगे। अब यदि कोई एक संदिग्ध ऐसा है जो सभी बीस साक्ष्यों से मेल करता है तो जिम आपसे कहेंगे कि वो संदिग्ध ही अपराधी है या शायद दुनिया का सबसे बदकिस्मत इंसान है। वह परमेश्वर के अस्तित्व और उनकी पहचान के बारे में सच्चाई का पता लगाने के लिए भी यही तर्क प्रयोग करते हैं और हम भी यही तर्क प्रयोग करते हैं। तो, चलिए परमेश्वर की इस अनसुलझी फाइल को अपनी अलमारी से बाहर निकालते हैं, इसपर से धूल झाड़िये और देखिये कि साक्ष्य से क्या सबसे ज्यादा मिलता है।

ज्यूरी बॉक्स

चूँकि हमने यह पता लगा लिया है कि सत्य आपके लिए महत्वपूर्ण है, हमें लगता है कि आप यह जानना चाहेंगे कि क्या यह मानना उचित है कि परमेश्वर का अस्तित्व है और बाइबिल सत्य है। ऐसा करने के लिए, आपको साक्ष्य पर एक ईमानदार और निष्पक्ष तरीके से विचार करने के लिए इच्छुक होना चाहिए। जहाँ तक परमेश्वर की बात आती है, कई लोग "जांच से पहले अवमानना" की धारणा पर काम करते हैं। इसका साक्ष्य या विषय की सच्चाई से कोई लेना-देना नहीं है। यह तथ्यों की ईमानदारी और निष्पक्ष तरीके से जांच करने से पहले, भावनाओं या इच्छा के आधार पर किसी चीज को अस्वीकार करने के बारे में है।

"एक ऐसा सिद्धांत है जो सभी जानकारियों के विपरीत मापदंड है, जो सभी तर्कों के विपरीत साक्ष्य है और जो किसी इंसान को हमेशा के लिए अज्ञानता में रखने में विफल नहीं हो सकता है-वो सिद्धांत है *जांच से पहले अवमानना का सिद्धांत।*" 19वीं सदी के दार्शनिक, हर्बर्ट स्पेंसर, ने 18वीं सदी के ब्रिटिश धर्मशास्त्री, विलियम पैले के एक पुराने उद्धरण से लिया था, *ईसाई धर्म को ध्यान में रखते हुए,* 1794। यह अल्कोहोलिक्स अनॉनिमस में एक लोकप्रिय वाक्यांश है।

निष्पक्ष फैसला करने के लिए, आपको ऐसे किसी भी विचार को दूर रखने की जरुरत होती है जो इससे संबंधित होता है कि परमेश्वर ने आपको कैसे निराश किया होगा, किसी ईसाई ने आपको कैसे चोट पहुंचाई होगी, या चर्च के बारे में किसी भी नकारात्मक भावना को खुद से दूर रखें। यदि बचपन में आपको चर्च जाने के लिए मजबूर किया गया था और यदि आप इस बात को एक बहाने की तरह इस्तेमाल करके परमेश्वर को अस्वीकार कर रहे हैं तो आप तथ्यों को नज़रअंदाज़ करने के लिए बहाने के रूप में उनकी गलतियों का इस्तेमाल करके, अभी भी अपने आपको उन लोगों द्वारा नियंत्रित होने दे रहे हैं जो उस समय आपको नियंत्रित करते थे। यदि आपका जीवन बर्बाद हो गया है और ईसाई होने का दावा करने वाले हर एक इंसान ने आपको निराश किया है तो इससे यह साबित नहीं होता कि बाइबिल और यीशु गलत हैं। आपको यह भी समझना होगा कि ईसाई यीशु होने का दावा नहीं करते और इसलिए वो सर्वश्रेष्ठ होने का दावा भी नहीं करते हैं। हम इस बात का दावा करते हैं कि हमें यीशु की जरुरत है क्योंकि हम अपनी खामियों को पहचानते हैं। हमें अपने जीवन के अंतिम दिन तक हर दिन यीशु की जरुरत होती है क्योंकि इस जीवन में हम कभी भी पापरहित नहीं होंगे।

साक्ष्य पर विचार करते हुए, आपका यह देखना होता है कि यह किसी तर्कसंगत संदेह के परे विश्वास करने योग्य है या नहीं। तर्कसंगत संदेह, मामले में सभी साक्ष्यों की निष्पक्ष जांच करने के बाद तर्क और सहज ज्ञान पर आधारित होता है। आप जिस साक्ष्य को देखने वाले है उसके सहित, जीवन में बहुत कम ही चीजें ऐसी होती हैं जो सभी संभव संशयों के बावजूद विश्वास करने लायक होती हैं। सच्चाई यह है कि यदि हम कोई भी फैसला करने से पहले सभी संभव संशयों के परे साक्ष्य की मांग करते तो हम बिस्तर पर लकवाग्रस्त पड़े रहते। इसकी कोई गारंटी नहीं है कि हमारी कार की टक्कर नहीं होगी, कि हमारा भोजन खराब नहीं होगा, या हमारा पड़ोसी हमें गोली नहीं मरेगा। यहाँ तक कि सबसे अच्छे साक्ष्य प्रदान करने वाले सबसे निश्चित मामलों में भी, न्यायाधीश अक्सर अपने निर्णय को लेकर संदेह के कारण अक्सर इससे पीछे हट जाते हैं।

जांच से पहले अवमानना और सभी संभव संशय के परे साक्ष्य चाहना किसी को जवाब दिए बिना सच्चाई को नज़रअंदाज़ करने और अपनी मर्ज़ी से कुछ भी करने की हमारी इच्छा और अभिलाषा के बारे में है। अपने आपको नास्तिक बताने वाले एक युवा आदमी स्लाई का साक्षात्कार लेते समय, मुझे पता चला कि उसके पास अपनी नास्तिकता का समर्थन करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं था। यह उन सभी नास्तिकों के लिए सामान्य है जिनसे मैं मिला हूँ, लेकिन चूँकि वे यह दावा कर रहे हैं कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है इसलिए उन्हें इसका समर्थन करने की भी जरुरत होती है। मैं स्लाई जैसे नास्तिकों को यह बताना चाहूंगा कि हमारे सबसे बुद्धिमान मस्तिष्क यह स्वीकार करते हैं कि मानव जाति संपूर्ण ब्रह्माण्ड का दस प्रतिशत से भी कम जानती है। इसलिए, यदि लोग तर्कसंगत हैं तो वे यह स्वीकार करेंगे कि परमेश्वर उस नब्बे प्रतिशत में हो सकता है जिसके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं है। हमारी बातचीत में तीन बार स्लाई ईमानदार हुआ और उसने कहा कि, "मैं नहीं चाहता कि कोई परमेश्वर हो।" जिसपर मेरा जवाब था कि, "तो क्या हुआ? अगर यह सच हुआ तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि आप क्या चाहते हैं।" स्लाई के रवैये को देखते हुए, क्या आपको लगता है कि वो साक्ष्य को निष्पक्ष होकर देखेगा, या अपने

चुनावों को उचित सिद्ध करना जारी रखने के लिए और तरीके नहीं खोजेगा? यदि आपके विचार स्लाई से मिलते हैं तो आपको यह समझना होगा कि सत्य को नज़रअंदाज़ करने से यह बदल नहीं जायेगा। सत्य का सामना करना वो सबसे अच्छी चीज होगी जो हम अभी कर सकते हैं ताकि अनंतकाल में हमें इसके परिणामों से ना जूझना पड़े।

आपकी जांच के लिए प्रेरणा

दुनिया में हर दिन लगभग 155,000 लोग मरते हैं। असल में कोई भी इस बात के लिए निश्चित नहीं होता कि उसका दिन कब आ जायेगा। मौत के दूसरे तरफ क्या है? क्या हम ज़मीन में सड़ते हैं, या हमारी कोई और मंजिल है? बाइबिल केवल दो विकल्प देती है - स्वर्ग या नर्क - और यह इन सत्यों को उजागर करती है:

1. यदि यह सभी सच्चाइयों की तरह सच है तो यह आपके ऊपर लागू होता है चाहे आप इसे माने या ना माने।
2. यदि आप परमेश्वर को अस्वीकार कर देते हैं तो <u>आपके पास कोई बहाना नहीं होगा</u>, भले ही आपने कभी बाइबिल ना पढ़ी हो।

बाइबिल आश्वासन देती है कि सृष्टि और हमारे अंतःकरण के माध्यम से परमेश्वर इतना ज्यादा स्पष्ट है कि जो लोग उसे अस्वीकार करते हैं वो किसी बहाने के बिना हो जाते हैं। निम्नलिखित आयतों पर विचार करिये:

वे अपने मन पर लिखे हुए, व्यवस्था के कर्मों को दिखाते हैं। उनका विवेक भी इसका ही साक्षी बनता है और उनका मानसिक संघर्ष उन्हें अपराधी बताता है या निर्दोष कहता है (रोमियों 2:15, जोर दिया गया)।

जब से संसार की रचना हुई उसकी अदृश्य विशेषताएँ, अनंत शक्ति और परमेश्वरत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं क्योंकि उन वस्तुओं से वे पूरी तरह जानी जा सकती हैं, जो परमेश्वर ने निर्मित की हैं। इसलिए लोगों के पास कोई बहाना नहीं (रोमियों 1:20, जोर दिया गया)।

इसलिए, इससे पहले कि आप इस बात का मज़ाक उड़ाएं और कहें कि परमेश्वर या नर्क का कोई अस्तित्व नहीं है, जैसा कि कुछ लोग करते हैं, चलिए इन दोनों आयतों के दावों को दिमाग में रखते हैं, तथ्यों की जांच करते हैं, इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के सहायक उद्धरण पढ़ते हैं और साक्ष्य पर विचार करते हैं। जासूस जिम वालेस के निम्नलिखित बयान पर विचार करिये:

"मैं 35 साल तक नास्तिक था। मैं ईसाई धर्म के लिए अपने विरोध को लेकर जुनूनी था, और मुझे अपने ईसाई दोस्तों से बहस करना पसंद था। ऐसा बहुत कम ही होता था जब वो उस चीज का बचाव करने के लिए तैयार होते थे जिसपर उन्हें भरोसा था। आगे चलकर मैं पुलिस अधिकारी बन गया और इसके बाद जासूस बन गया। अपने काम के दौरान, मैंने विवेकशील सच्चाई में साक्ष्य की भूमिका के लिए एक अच्छा सम्मान विकसित कर लिया, और मेरे पेशे ने मुझे उस चीज को अभ्यास में डालने का भरपूर अवसर दिया जो मैंने साक्ष्य की प्रकृति और ताकत के बारे में सीखा था। इन सबके बीच, मैं *गुस्सैल नास्तिक*, ईसाई धर्म का विरोधी

बना रहा और काफी हद तक ईसाई लोगों को अस्वीकार करता रहा। लेकिन अगर मैं सच कहूं तो मुझे यह मानना होगा कि मैंने पक्षपात और प्रकृतिवाद की पूर्व-कल्पना के बिना ईसाई वैश्विक दृष्टिकोण के लिए साक्ष्य की जांच करने के लिए कभी समय नहीं निकाला। मैंने ईसाई धर्म के मामले पर कभी न्यायोचित तरीके से जांच नहीं की। आखिरकार जब मैंने साक्ष्य की उचित तरीके से जांच की तो विशेष रूप से यदि मैं सच्चाई का पता लगाने में साक्ष्य के प्रयोग के लिए अपना सम्मान रखने की उम्मीद करता हूँ तब मुझे इसे अस्वीकार करना कठिन लगा। मुझे ईसाई धर्म के साक्ष्य विश्वसनीय लगे।" जिम वालेस, coldcasechristianity.com/

www.God-Evidence-Truth.com

क्या परमेश्वर है?

ब्रह्माण्ड की एक शुरुआत थी

ब्रह्माण्ड की शुरुआत के लिए मूलभूत ब्रह्मांड संबंधी तर्क कहता है कि:

1. **अस्तित्व में आने वाली हर एक चीज** के लिए एक कारण की जरुरत होती है।
2. ब्रह्माण्ड अचानक अस्तित्व में आया था।
3. इसलिए, ब्रह्माण्ड को एक कारण की जरुरत है।

तर्क और विवेक हमें बताते हैं कि कोई भी चीज जो नहीं है वो अपने आपको खुद अस्तित्व में नहीं ला सकती है। उदाहरण के लिए: अपने जन्म से पहले, क्या आप खुद को अस्तित्व में ला सकते थे, या आपके बाहर का कोई कारण (आपके माता-पिता) की आवश्यकता होती? यदि आपके बाहर कोई कारण नहीं होता तो आपका अभी कोई अस्तित्व नहीं होता। ब्रह्माण्ड बड़ा है, लेकिन इसपर भी यही सच्चाई लागू होती है।

"ब्रह्माण्ड की शुरुआत के लिए, जब प्राकृतिक नियमों का कोई अस्तित्व नहीं था, प्राकृतिक कारण की खोज जारी रखना यह साबित करने में अपना जीवन बिताने जैसा है कि आपने अपनी माँ को जन्म दिया था।" डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक, लेखक और वक्ता, *आई डोंट हैव इनफ फेथ टू बी एन अथेइस्ट*।

विज्ञान कारणों की खोज है, और हर प्रभाव का एक कारण होता है। यहाँ ऐसे कुछ तथ्य हैं जो दर्शाते हैं कि ब्रह्माण्ड की एक शुरुआत थी:

1. आइंस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत समय, स्थान और पदार्थ की शुरुआत की मांग करता है और कहता है कि ये सह-सापेक्ष हैं, अर्थात एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता है।
2. ऊष्मागतिकी का दूसरा निर्विवाद नियम कहता है कि ब्रह्माण्ड की प्रयोग करने योग्य ऊर्जा समाप्त हो रही है और यह व्यवस्था से अराजकता की ओर बढ़ रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर ब्रह्माण्ड हमेशा से अस्तित्व में होता तो अब तक हमारी सारी प्रयोग योग्य ऊर्जा समाप्त हो जाती और कोलाहल मच चुका होगा।

वैज्ञानिक साक्ष्य से जाहिर तौर पर पता चलता है कि सभी प्राकृतिक नियमों सहित, हमारा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड (समय, अंतरिक्ष, पदार्थ, ऊर्जा) अचानक से आया है। ब्रह्माण्ड का स्रोत स्वयं ब्रह्माण्ड से बाहर और इससे अलग होगा, जो अलौकिक की एक परिभाषा है। यह बहुत अधिक शक्तिशाली रहा होगा, क्योंकि इसने किसी स्रोत के बिना सबकुछ निर्मित किया। यह अनंत होगा, क्योंकि इसने समय बनाया। यह अभौतिक होगा क्योंकि इसने पदार्थ बनाया। ये तथ्य बाइबिल के परमेश्वर, एक आस्तिक परमेश्वर, की परिभाषा पर ठीक बैठते हैं, वो परमेश्वर जिनसे ब्रह्माण्ड को बनाया और जीवित रखा लेकिन रचना से अलग था।

इस सरल समानता पर विचार करिये जिसे मैंने livingwaters.com पर रे कंफर्ट से सीखा था। जब आप किसी इमारत को देखते हैं तो आपको कैसे पता कि इसका कोई निर्माता था? आप उससे कभी मिले नहीं या आपने उसे कभी देखा नहीं। क्या इमारत अपने आपमें इस बात का सबूत नहीं है कि इसका कोई निर्माता रहा होगा? जब आप कोई पेंटिंग देखते हैं तो आपको कैसे पता चलता है कि इसका कोई चित्रकार है? क्या पेंटिंग अपने आपमें इस बात का सबूत नहीं है कि कोई इसका चित्रकार होगा? तो, जब आपको पता चलता है कि प्राकृतिक नियमों के अस्तित्व में आने से पहले पूरा ब्रह्माण्ड अपने आप अचानक बना था तब आपको कैसे पता कि इसका कोई रचनाकार नहीं है? आपने पहले कभी उसे देखा नहीं है या उससे कभी मिले नहीं है। क्या इमारत और पेंटिंग की तरह ब्रह्माण्ड अपने आपमें इस बात का सबूत नहीं है कि इसका कोई रचनाकार है?

"ब्रह्माण्ड की एक शुरुआत थी। कभी यहाँ कुछ नहीं था और अब सबकुछ है।" जेना लेविन, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रयुक्त गणित और सैद्धांतिक भौतिकी विभाग (जोर दिया गया)।

"इस लेक्चर का निष्कर्ष यह है कि ब्रह्माण्ड हमेशा से मौजूद नहीं था। बल्कि, ब्रह्माण्ड, और स्वयं समय, महाविस्फोट में शुरू हुआ था।" स्टीफन हॉकिंग, सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी, समय की शुरुआत (जोर दिया गया)।

"वैज्ञानिक साक्ष्य अब इस बात पर बहुत बल देते हैं कि ब्रह्माण्ड की शुरुआत 'महा-विस्फोट' के साथ हुई थी। महाविस्फोट का सिद्धांत विश्व के निर्माण का सबसे ज्यादा व्यापक रूप से स्वीकृत सिद्धांत है।" डॉ. वंडर प्लूयम मिशिगन विश्वविद्यालय, www.godandscience.org (जोर दिया गया)

हबल दूरबीन में बैठे एक अज्ञेय खगोलशास्त्री, रॉबर्ट जेस्ट्रो, ने एक साक्षात्कार में निम्नलिखित कहा था। "खगोलविदों को अब पता चला कि उन्होंने अपने आपको एक कोने में चित्रित कर दिया है क्योंकि उन्होंने अपनी खुद की विधियों से यह साबित कर दिया है कि संसार रचना की एक गतिविधि में अचानक से बना था जिसमें आप प्रत्येक तारे, प्रत्येक ग्रह, इस ब्रह्माण्ड और धरती पर प्रत्येक सजीव वस्तु के बीजों का पता लगा सकते हैं। और उन्हें यह पता चल गया है कि यह सबकुछ ऐसे बलों के कारण हुआ था जिसका आप कभी भी पता लगाने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं...और ऐसी ही स्थिति में मैं या कोई भी इंसान यह कहेगा कि अलौकिक शक्तियां वैज्ञानिक रूप से सिद्ध तथ्य हैं।" "दो विश्वासों के बीच फंसा एक वैज्ञानिक" क्रिश्चियनिटी टुडे, 6 अगस्त, 1982 (जोर दिया गया)।

"महाविस्फोट में अचानक से उत्पन्न हुआ एक ब्रह्माण्ड एक बड़े धमाके के साथ हवा में गायब हो जायेगा, इसके कुछ अरब वर्षों का महान अस्तित्व एक स्मृति

भी नहीं है।" ब्रिटिश खगोल विज्ञानी पॉल डेविस, www.thinkexist.com (जोर दिया गया)

निष्कर्ष - ब्रह्माण्ड (समय, अंतरिक्ष, पदार्थ और ऊर्जा) की एक शुरुआत थी। निश्चित रूप से, किसी भी चीज के इस समय अस्तित्व में होने के लिए एक अनंत, अज्ञात पहला कारण होना जरूरी है। परमेश्वर सबसे तार्किक व्याख्या है।

एक बड़ा संकेत जिसे हम हर दिन देखते हैं

चूँकि हम साक्ष्य की तलाश कर रहे हैं, इसलिए इस विषय पर आगे विचार करना महत्वपूर्ण होगा। यदि परमेश्वर है तो हमें सृष्टि से कुछ सीखने में समर्थ होना चाहिए। क्या आपने यह ध्यान दिया है कि यदि हम सृष्टि (उदाहरण के लिए, तूफान से बचना) के बारे में सच्चाई का सम्मान नहीं करते हैं तो यह हमें मार डालेगी? *आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं,* आमतौर पर भूकंप, बवंडर या सृष्टि के संबंध में काम नहीं करता है। यहाँ तक कि गुरुत्वाकर्षण, जिसे हम सभी जानते हैं कि हमारे जीवन के लिए बहुत आवश्यक है, वार्षिक रूप से हज़ारों लोगों की मौत में अपनी भूमिका निभाती है। हर बार जब कोई किसी चोटी से फिसलता है, सीढ़ी से गिरता है या नारियल के गिरने से मरता (हर बार लगभग 150 लोग) है तो गुरुत्वाकर्षण वही करता है जो यह हर बार करता है। तो, हम इसका स्पष्ट साक्ष्य देख सकते हैं कि सृष्टि, जिसे भलाई के लिए बनाया गया था, पक्षपात नहीं करती है।

अक्सर यह कहा जाता है कि सृष्टि अपने रचयिता की झलक है। इसलिए, यदि तथ्य दर्शाते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है तो सृष्टि से हमने सीखा है कि हमें यह उम्मीद करने के बजाय कि परमेश्वर हमारा सम्मान करें और हमारे तरीकों का पालन करें, हमें परमेश्वर का सम्मान करने की और उनके तरीकों का पालन करने की जरुरत होती है। यदि हम ऐसा करते हैं तो यह हमारे लिए बेहतर रहेगा, बिलकुल उसी तरह जैसे यह हर बार गुरुत्वाकर्षण के संबंध में रहता है। इस महत्वपूर्ण तथ्य को दिमाग में रखने सहित, बाइबिल उस वास्तविकता की पुष्टि करता है जिसे हम सृष्टि में देखते हैं:

फिर पतरस ने अपना मुँह खोला और कहा: "अब मैं सचमुच समझ गया हूँ कि परमेश्वर कोई भेदभाव नहीं करता" (प्रेरितों के काम 10:34, जोर दिया गया)।

क्या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर ने हमें एक ऐसा विवेक दिया होगा जो ज्यादा बड़ी अच्छाई के लिए भी नैतिक मापदंड दर्शाता है? मुझे ऐसा लगता है। क्या आप किसी ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं जहाँ किसी के पास कोई विवेक नहीं है? क्योंकि सभी नियमों को, यहाँ तक कि गुरुत्वाकर्षण के नियम के लिए भी, नज़रअंदाज़ ना करने के लिए परिणामों की जरुरत होती है, क्या इससे यह समझ में नहीं आता कि हमारे अंतःकरण या विवेक पर लिखे गए परमेश्वर के नैतिक नियम के भी कोई परिणाम होंगे?

ब्रह्माण्ड की आयु

अक्सर मुझे कोई ना कोई ऐसा इंसान मिल जाता है जिसने पूरी बाइबिल को केवल इसलिए अस्वीकार किया होता है क्योंकि उन्हें लगता है कि सभी ईसाई इस बात पर जोर देते हैं कि ब्रह्माण्ड

केवल 6,000 साल पुराना है। सच्चाई यह है कि इस विवाद (नया बनाम पुराना) के दोनों तरफ अच्छी बहस करने वाले ईसाई मौजूद हैं। बाइबिल में कहीं पर भी ब्रह्मांड की असली आयु नहीं लिखी गयी है। जो लोग इस बात का दावा करते हैं वो बाइबिल में वंशावलियों से ब्रह्मांड की आयु जोड़ने का प्रयास करते हैं। बाइबिल यह भी कभी नहीं कहती कि किसी भी तरीके से विश्वास करना अनिवार्य है। इसलिए, यह हमारी चर्चा का महत्वपूर्ण कारक नहीं है। जहाँ तक ईसाई लोगों की बात आती है, ईसाई का मुख्य फोकस हमेशा यीशु होना चाहिए। इसलिए, बाइबिल को अस्वीकार करने का यह कोई वैध कारण नहीं है।

क्योंकि मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हारे बीच रहते हुए मैं यीशु मसीह और क्रूस पर हुई उनकी मृत्यु को छोड़कर किसी और बात को नहीं जानूँगा। (1 कुरिन्थियों 2:2, जोर दिया गया)।

परमेश्वर को किसने बनाया?

कई लोगों को यह लगता है कि वे यह सवाल पूछकर बहुत बड़ी आपत्ति जता रहे हैं कि *परमेश्वर को किसने बनाया?* इसका जवाब आसान है - किसी ने नहीं। केवल चीजों के अस्तित्व के लिए कारण की जरुरत होती है। इसीलिए लोगों को इस दिमाग चकराने वाले सवाल का जवाब पाने में कठिनाई होती है कि *अंडे या मुर्गी में से पहले कौन आया?* हमें पता है कि एक से पहले दूसरा नहीं आया था, ना ही अब आएगा। चूँकि ब्रह्मांड अनंत नहीं है, इसलिए प्राकृतिक ब्रह्मांड के बाहर किसी शुरूआती अज्ञात अनंत कारण का होना जरूरी है, वरना अभी कुछ नहीं होता।

अनंत परमेश्वर तुम्हारा निवास स्थान है (व्यवस्था विवरण 33:27, जोर दिया गया)।

ब्रह्मांड और जीवन बनाये गए हैं - परमेश्वर के लिए उद्देश्यवाद संबंधी (संरचना) तर्क

1. हर संरचना के लिए सर्जक की जरुरत होती है।
2. ब्रह्मांड और जीवन जटिल संरचना का प्रदर्शन करते हैं।
3. इसलिए, ब्रह्मांड और जीवन को एक सर्जक की आवश्यकता है।

यहाँ केवल दो प्रकार के कारण हैं: प्राकृतिक और बुद्धिमान। हमारा सहज ज्ञान बताता है कि ग्रैंड कैनियन का प्राकृतिक कारण था और माउंट रशमोर का एक बुद्धिमान कारण था। रेत पर पैरों के निशान या पेड़ पर उकेरे गए दिल जैसे सबसे सरल रूप में भी हम बुद्धिमत्ता वाली संरचना का आसानी से पता कर सकते हैं। सेटी (अलौकिक बुद्धिमत्ता की खोज) कार्यक्रम अपने किसी रेडियो टेलिस्कोप पर बाहरी अंतरिक्ष से कोई बेहद सरल व्यवस्थित संदेश सुनकर भी रोमांचित हो जायेगा। इससे उन्हें तुरंत पता चल जायेगा कि यह बुद्धिमान जीवन दर्शाता है। फिर भी वर्षों तक सुनने के बाद भी कोई ठोस साक्ष्य निकलकर नहीं आया है। तो, यदि बाहरी अंतरिक्ष से एक सरल संदेश या इस पृष्ठ पर शब्दों के लिए बुद्धि की जरुरत है तो मनुष्य के लिए ज्ञात सबसे जटिल संरचना के बारे में आपका क्या कहना है?

हमारे ग्रह को विशेष रूप से जीवन के लिए बनाया गया है। खगोल भौतिकशास्त्री ह्यूग रॉस 122 स्थिरांक-एंथ्रोपिक सिद्धांतों की एक बढ़ती हुई

सूची रखते हैं जो एक महत्वपूर्ण स्थिति पर सेट किये गए हैं। इनमें से किसी भी एक को थोड़ा सा भी बदलने पर हमारा अस्तित्व खत्म हो जाता है। मैंने आपके विचार करने के लिए छह सिद्धांतों को सूचीबद्ध किया है:

1. यदि ब्रह्माण्ड सामान्य की तुलना में दस लाखवें से भी ज्यादा धीमी दर से विस्तार करता तो ब्रह्मांड अस्तित्व में नहीं होता।
2. यदि बृहस्पति अपनी वर्तमान कक्षा में नहीं होता, तो इसका गुरुत्वाकर्षण बल हमें उन धूमकेतुओं से नहीं बचा पाता जो पृथ्वी को नष्ट कर सकते थे।
3. पृथ्वी का चक्कर: यदि लम्बा होता तो तापमान में अंतर बहुत ज्यादा होता; यदि कम होता है तो वायुमंडलीय पवन वेग बहुत ज्यादा होता
4. यदि पृथ्वी का 23-डिग्री धुरी का झुकाव यदि थोड़ा सा भी अलग होता तो तापमान जीवन के लिए बहुत ज्यादा होता
5. वातावरण में ऑक्सीजन-नाइट्रोजन का अनुपात: यदि ज्यादा होता तो जीवन की गतिविधियां बहुत तेजी से होती; यदि कम होता तो जीवन की गतिविधियां बहुत धीमी होती है
6. चुंबकीय क्षेत्र: यदि मजबूत होता तो विद्युत चुम्बकीय तूफान बहुत गंभीर होते; यदि कमजोर होता तो सौर पवन के कणों से कोई सुरक्षा नहीं मिलती।

डॉ. रॉस ने "इन 122 स्थिरांकों की संभावना की गणना की है जिनकी वजह से हमारा अस्तित्व संभव हो पाया है, जिनकी विशेष रूप से 10^{138} में एक बार होने की संभावना होती है। गणित में इसका मतलब है: एक के बाद 138 शून्य में एक संभावना।" डॉ. ह्यूग रॉस, *व्हाई आई बिलीव इन डिवाइन क्रिएशन*, www.reasons.org

इस संख्या को परिपेक्ष्य में रखने में सहायता करने के लिए: सांख्यिकीय शून्य, जहाँ वैज्ञानिक आमतौर पर किसी चीज को असंभव के रूप में लिखते हैं, 10^{50} में एक है: 1 के बाद 50 शून्य। एनओएए के अनुसार बिजली गिरने की संभावना दस लाख में एक, या एक के बाद दस शून्य में होती है। कैलिफोर्निया का सुपर लोटो जीतने की संभावना 41,416,353 में एक या 4 के बाद सात शून्य (लगभग) में होती है।

जॉन ओ'कीफे (नासा में खगोलशास्त्री): खगोलीय मानकों के अनुसार, हम लाड़-प्यार से पाले गए, सुरक्षित किये गए, दुलारे गए प्राणियों का समूह हैं। यदि ब्रह्माण्ड सबसे ज्यादा सटीकता के साथ नहीं बनाया गया होता तो हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं रहता। मेरे दृष्टिकोण से, ये परिस्थितियां दर्शाती हैं कि ब्रह्माण्ड को मनुष्य के रहने के लिए बनाया गया था।" हीरेन, एफ. 1995। *शो मी गॉड*। व्हीलिंग, आईएल, सर्चलाईट प्रकाशन, पृष्ठ 200 (जोर दिया गया)।

"[भौतिकी के] नियम अत्यधिक चतुर संरचना का उत्पाद प्रतीत होते हैं। ब्रह्माण्ड का निश्चित रूप से कोई उद्देश्य होगा।" पॉल डेविस: ब्रिटिश खगोल भौतिकशास्त्री, डेविस, पृष्ठ 1984, *सुपरफोर्स: प्रकृति के एक विराट एकीकृत सिद्धांत की खोज* (जोर दिया गया)।

"खगोल विज्ञान हमें एक अनोखी घटना की ओर ले जाता है, एक ब्रह्माण्ड की ओर जो ना जाने कहा से बना था, एक ऐसा ब्रह्माण्ड जिसमें जीवन को अनुमति देने के लिए आवश्यक स्थितियों का बहुत नाजुक संतुलन शामिल है, और एक ऐसा ब्रह्माण्ड जिसमें एक निहित (कोई इसे 'अलौकिक' भी कह सकता है) योजना है।" अर्नो पेनज़ियास, भौतिकी में नोबेल पुरस्कार, *कॉसमॉस, बायोस, थियोस: विज्ञान, परमेश्वर और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, जीवन, और होमो सैपिएंस* पर वैज्ञानिकों के विचार में

उद्धृत (जोर दिया गया)।

"भौतिक संसार की हमारी वैज्ञानिक समझ द्वारा प्रदर्शित उत्कृष्ट व्यवस्था दैवीय हस्तक्षेप की ओर इशारा करती है।" वेरा किस्टियाकोव्स्की, एमआईटी भौतिक विज्ञानी, *कॉसमॉस, बायोस, थियोस: विज्ञान, परमेश्वर और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, जीवन, और होमो सैपिएंस* पर वैज्ञानिकों के विचार में उद्धृत (जोर दिया गया)।

"क्या किसी सर्जक के बिना संरचना बनने की कोई संभावना है? एक खरब में शायद एक संभावना हो सकती है कि हवा से रेत पर अपने आप 'एस.ओ.एस.' लिख जाये। लेकिन एक खरब में एक की व्याख्या का प्रयोग कौन करेगा? कभी किसी ने कहा था कि अगर आप दस लाख बंदरों को दस लाख वर्षों के लिए दस लाख टाइप राइटर पर बैठा दें तो अंत में शायद उनमें से कोई एक पूरी हैमलेट टाइप कर देगा। लेकिन हैमलेट का टेक्स्ट मिलने के बाद, हम यह नहीं सोचते कि यह संयोग और बंदरों से मिला है। तो फिर अनीश्वरवादी ब्रह्माण्ड के लिए ऐसे बेहद अनुचित विवरण का प्रयोग क्यों करते हैं? स्पष्ट रूप से, क्योंकि यह उनके अनीश्वरवादी बने रहने का एकमात्र मौका होता है। इस मोड़ पर हमें ब्रह्माण्ड की तार्किक व्याख्या के बजाय, अनीश्वरवादी या नास्तिक की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की जरुरत है। हमारे पास ब्रह्माण्ड की तार्किक व्याख्या मौजूद है, लेकिन नास्तिक को यह पसंद नहीं आती। इसे परमेश्वर कहते हैं।" पीटर क्रीफ्ट, पीएचडी, बोस्टन कॉलेज में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर, www.peterkreeft.com

निष्कर्ष - ब्रह्माण्ड की जटिल संरचना के लिए एक बुद्धिमान सर्जक की जरुरत है।

जीवन की जटिल संरचना

प्रकृतिवादी जिस एक चीज की व्याख्या नहीं कर पाते हैं वो है जानकारी का स्रोत। कैसे निर्जीव रसायन डीएनए में पायी जाने वाली अत्यधिक जटिल जानकारी निर्मित करने के लिए आकस्मिक रूप से एक साथ आ सकते हैं? हम सभी को पता है कि सभी जानकारियां, लिखित भाषाएं या कोड हमेशा जानकारी से भरपूर स्रोत अर्थात दिमाग से आते हैं। दिमाग बुद्धिमान संचार करता है, ना कि प्राकृतिक कारण। जीवन की संरचना जटिलता के एक ऐसे स्तर को दर्शाती है जो सभी चीजों से परे है जिनके बारे में हमें जानकारी है।

"(1) डीएनए केवल पैटर्न वाला अणु नहीं है; यह एक कोड, भाषा, और जानकारी संग्रह तंत्र है। (2) जितने भी कोड हम जानते हैं उन्हें सचेत मस्तिष्क से निर्मित किया गया है। (3) इसलिए डीएनए को एक मस्तिष्क द्वारा बनाया गया है, और इसकी भाषा और जानकारी किसी उत्तम बुद्धिमत्ता के कार्य का साक्ष्य हैं।" पेरी मार्शल, सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ, www.cosmicfingerprints.com (जोर दिया गया)।

"सभी निर्देश, सभी शिक्षा, सभी प्रशिक्षण इरादे से आते हैं। निर्देश विवरण लिखने वाला व्यक्ति एक उद्देश्य से ऐसा करता है। क्या आपको पता है कि हमारे शरीर की हर एक कोशिका में बहुत विस्तृत निर्देश कोड मौजूद हैं, काफी हद तक किसी छोटे आकार के कंप्यूटर प्रोग्राम की तरह? कंप्यूटर प्रोग्राम एक और शून्य से बनता है, ऐसे: 110010101011000। जिस तरीके से उन्हें

व्यवस्थित किया जाता है उससे कंप्यूटर प्रोग्राम को पता चलता है कि क्या करना है। हमारी प्रत्येक कोशिका का डीएनए कोड भी बिलकुल ऐसा ही है। यह चार रसायनों से मिलकर बना है जिसे वैज्ञानिक ए, टी, जी और सी के रूप में संक्षिप्त नामों से पुकारते हैं। मनुष्य की कोशिका में इन्हें CGTGTGACTCGCTCCTGAT आदि के समान व्यवस्थित किया गया है। मनुष्य की प्रत्येक कोशिका में ये अक्षर तीन बिलियन की संख्या में होते हैं! जिस तरह आप विशेष कारणों से अपने फोन को बीप करने के लिए प्रोग्राम करते हैं, वैसे ही डीएनए कोशिका को निर्देश देता है। डीएनए तीन-बिलियन-अक्षर वाला प्रोग्राम है जो कोशिका को एक विशेष तरीके से कार्य करने के लिए कहता है। यह पूर्ण निर्देश विवरण है। प्रोग्राम की गयी जानकारी का समावेश होने पर प्राकृतिक, जैविक कारण कोई व्याख्या नहीं दे पाते हैं। आपको इस प्रकार का निर्देश, सटीक जानकारी तब तक नहीं मिल सकती है, जब तक कि कोई जानबूझकर इनका निर्माण ना कर रहा हो। फ्रांसिस एस. कोलिन्स, मानव जीनोम परियोजना के निदेशक, और *द लैंग्वेज ऑफ़ गॉड*, फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क, एनवाई, 2006 के लेखक, www.everystudent.com (जोर दिया गया)।

“यदि एक सूई की नोक के बराबर डीएनए में शामिल जानकारी की मात्रा को पेपरबैक किताबों में लिखा जाए तो ऐसी किताबों का ढेर यहाँ से चाँद तक की दूरी से भी 500 गुना ज्यादा ऊँचा होगा!” डॉ. वर्नर गिट रचनाकार सूचना वैज्ञानिक, www.creation.com

“मानव नेत्र एक बेहद अद्भुत चीज हैं। किसी वयस्क के वजन का केवल एक चौथाई-हज़ारवां हिस्सा होने के बावजूद, यह एक ऐसा माध्यम है जो अपने मालिक द्वारा बाहरी दुनिया से मिलने वाली लगभग 80% जानकारी संसाधित करता है। छोटे से रेटिना में 130 मिलियन रॉड के आकार की कोशिकाएं होती हैं, जो प्रकाश की तीव्रता का पता लगाती हैं और लगभग एक मिलियन स्नायु तंत्रों के माध्यम से मस्तिष्क के विज़ुअल कॉर्टेक्स को संवेग भेजती हैं, जबकि लगभग छह मिलियन कोन के आकार की कोशिकाएं लगभग यही काम करती हैं, लेकिन रंग भिन्नता के लिए विशेष रूप से प्रतिक्रिया देती हैं। आँखें एक साथ 500,000 संदेशों को प्रबंधित कर सकती हैं, और तरल की बिलकुल सटीक मात्रा उत्पन्न करने वाली नलिकाओं द्वारा साफ रखी जाती हैं, जिससे पलकें एक सेकंड के एक पांच हज़ारवें में दोनों आँखों को एक साथ साफ करती हैं।” जॉन ब्लैंचर्ड, *डस गॉड बिलीव इन अथेइसट्स?* 2000, पृष्ठ 213।

“मनुष्य का डीएनए कंप्यूटर प्रोग्राम जैसा है, लेकिन यह आज तक बनाये गए किसी भी सॉफ्टवेयर से कहीं ज्यादा उन्नत है।" माइक्रोसॉफ्ट के बिल गेट्स, *द रोड अहेड* (जोर दिया गया)।

"हालाँकि कभी मैं संरचना के तर्क का सबसे बड़ा आलोचक था, उसके बाद से मैंने देखा कि सही से तैयार करने पर, यह तर्क परमेश्वर के अस्तित्व के लिए एक ठोस मामला तैयार करता है।” एंथनी फ्लेव, 50 वर्षों तक नास्तिक, *देयर इज अ गॉड*, पृष्ठ 95 (जोर दिया गया)।

निष्कर्ष - जीवन की जटिल संरचना के लिए बुद्धिमान सर्जक की जरुरत है।

क्या ब्रह्माण्ड या जीवन आकस्मिक घटना हो सकते हैं?

"ऑक्सफ़ोर्ड के गणितज्ञ रोजर पेनरोज की गणनाओं से पता चलता है कि आकस्मिक घटना, भाग्य और संयोग से जीवन के लिए लाभदायक ब्रह्माण्ड के उत्पन्न होने की संभाव्यता 10^{10123} में एक है। 'अत्यधिक असंभव' वाक्यांश इसकी संभावना का वर्णन करने के लिए अपर्याप्त है। यह कल्पना करना भी कठिन है कि इस संख्या का क्या मतलब है। गणित में 10^{123} का अर्थ है 1 के बाद 123 शून्य। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में मौजूद परमाणुओं की कुल संख्या (10^{78}, एक के बाद 78 शून्य) से भी ज्यादा है। लेकिन पेनरोज का जवाब व्यापक रूप से इससे ज्यादा है: इसके लिए एक के बाद 10123 शून्य की जरुरत पड़ती है। यह असंभव है।" रोजर पेनरोज, *द एम्परर्स न्यू माइंड;* माइकल डेंटन की *नेचर्स डेस्टिनी* से।

"जैसे-जैसे जीव रसायनज्ञानी जीवन की अद्भुत जटिलता के बारे में ज्यादा से ज्यादा खोज करते हैं, यह स्पष्ट हो जाता है कि इसके अकस्मात रूप से उत्पन्न होने की संभावना इतनी कम है कि इसे पूरी तरह से खारिज किया जा सकता है। जीवन संयोग से उत्पन्न नहीं हो सकता है।" सर फ्रेड होयल, *इंटेलिजेंट यूनिवर्स*

"हमारे पास उपलब्ध सभी जानकारियों से युक्त, एक ईमानदार आदमी, केवल इतना कह सकता है कि किसी प्रकार से, वर्तमान में जीवन की उत्पत्ति लगभग एक चमत्कार प्रतीत हो सकती है, इसलिए इसे चलाने के लिए ऐसी कई शर्तें होंगी जिन्हें पूरा करना पड़ा होगा।" फ्रांसिस क्रिक, आणविक जीवविज्ञानी, जीवभौतिकीवेत्ता, बायोफिजिसिस्ट और न्यूरोसाइंटिस्ट, डीएनए अणु की संरचना के सह-आविष्कारक, *लाइफ इटसेल्फ,* साइमन और शूस्टर।

"पिछले तीस वर्षों में कई मशहूर वैज्ञानिकों ने इसकी संभावना की गणना करने का प्रयास किया है कि जीवाणु जैसा कोई स्वतंत्र-सजीव, एक कोशिका वाला जीव पहले से मौजूद बिल्डिंग ब्लॉक के संयोगवश जुड़ने से उत्पन्न हो सकता है। हेरोल्ड मोरोवित्ज़ ने इसकी संभावना को $10^{100,000,000,000}$ (एक के बाद 100 ट्रिलियन शून्य में एक) में एक के रूप में जोड़ा है। सर फ्रेड होयल ने केवल अमीबा के प्रोटीन के अकस्मात उत्पन्न होने की संभावना को $10^{40,000}$ में एक के रूप में जोड़ा है। मोरोवित्ज़ और होयल द्वारा जोड़ी गयी संभावनाएं चौंकाने वाली हैं। गणितज्ञ बताते हैं कि 1050 में एक से ज्यादा की संभावना वाली कोई भी घटना मेटाफिजिक्स अर्थात चमत्कार के दायरे में आती है।" मार्क ईस्टमैन, एमडी, *क्रिएशन बाइ डिज़ाइन,* T.W.F.T. प्रकाशक, 1996, 21-22, www.allaboutthejourney.org

"विज्ञान द्वारा किये गए अवलोकनों से, बीसवीं सदी में यह पता लगना एक चौंकाने वाली बात है कि जीवन की मूलभूत क्रियाविधियों को प्राकृतिक चयन के सिद्धांत से नहीं जोड़ा जा सकता है। लेकिन हमें अपनी हैरानियों का अच्छे से सामना करना चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए। माइकल बेह, पीएच.डी. प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री, *मॉलिक्यूलर मशीन्स, कॉस्मिक परसूट,* स्प्रिंग 1998, पृष्ठ 35।

फ्रैंकनस्टाइन का निर्माण

किसी असंभव स्थिति में वैज्ञानिक निर्जीव रसायनों से सबसे सरल जीवन का निर्माण करने में समर्थ हैं, क्या यह उपलब्धि बुद्धिमान रचयिता की जरुरत समाप्त कर देगी? नहीं, इसके बजाय यह रचयिता के मामले का समर्थन करेगी, क्योंकि यह दर्शाता है कि प्रकृतिवाद के अनुसार आकस्मिक घटना, भाग्य, संयोग और समय के बजाय, जीवन का निर्माण करने में मनुष्य की सदियों की बुद्धिमानी लगती है। आपको यह याद रखना होगा कि तथ्य हमें बताते हैं कि हर चीज अचानक आयी है। जीवन का निर्माण करने के प्रयास में, वैज्ञानिक किसी चीज के बिना शुरुआत नहीं करते, क्योंकि हम रेत का एक कण भी अपने आप नहीं उत्पन्न कर सकते हैं।

निष्कर्ष – तथ्यों से साबित होता है कि ब्रह्माण्ड और जीवन के आकस्मिक घटना, भाग्य और संयोग से उत्पन्न होने की संभावना असंभव से भी परे है। दोनों के लिए किसी बुद्धिमान कारण की जरुरत होती है।

यह अंतरों का परमेश्वर क्यों नहीं है

नास्तिक परमेश्वर में भरोसा करने वालों पर यह आरोप लगाते हैं कि वो कारण का पता ना होने पर हर चीज में परमेश्वर को घुसा देते हैं। पहले कभी-कभी यह सच हुआ है ("बिजली! परमेश्वर नाराज़ होंगे!"), और यह आज भी कुछ प्राथमिक जनजातियों में सच हो सकता है। लेकिन बुद्धिमान संरचना का समर्थन करने वाले वैज्ञानिक साक्ष्य को मानते हैं। यदि किसी चीज का कोई प्राकृतिक विवरण है तो कोई बात नहीं, लेकिन जब 100 प्रतिशत अवलोकन-योग्य साक्ष्य कहता है कि प्राकृतिक व्याख्या असंभव है तो बुद्धिमत्ता पर विचार किया जाता है।

यहाँ कुछ सर्वोत्तम उदाहरण दिए गए हैं: यदि कोई चीज हवा में, अकारण ही अस्तित्व में आ सकती है, तो ऐसा केवल ब्रह्माण्ड के साथ ही क्यों हुआ? ऐसा सभी चीजों के साथ क्यों नहीं हुआ? क्या इसे कभी देखा गया है? नहीं - तो ब्रह्माण्ड कोई अपवाद नहीं हो सकता है। जहाँ तक संरचना की बात आती है, क्या आपने कभी भी किसी जटिल संदेश, कोड, जानकारी या लिखित निर्देशों को दिमाग के अलावा कहीं और से आते हुए देखा है? क्या वैज्ञानिकों ने देखा है? नहीं, इसलिए डीएनए के जटिल संदेश को अपने स्रोत के रूप में दिमाग की जरुरत होती है। यह अचानक नहीं आ सकता। क्या कभी भी जीवन को अचानक, भाग्य, संयोग और समय से निर्जीव से आते हुए देखा गया है? नहीं, सूचीबद्ध की गयी इनमें से किसी भी चीज को नहीं देखा गया है। इसका कोई साक्ष्य नहीं है कि ये चीजें अचानक किसी घटना, नियति, संयोग और समय से हो सकती हैं। यदि ये अपने आप हुई थीं, लेकिन नियमित रूप से नहीं होतीं तो परिभाषा के अनुसार ये चमत्कार है। इसलिए, नास्तिक बनने के लिए और यह मानने के लिए कि ब्रह्माण्ड, जीवन, जानकारी और जटिल संरचना की उत्पत्ति संयोग से हुई है, व्यक्ति को चमत्कारों में विश्वास करना होगा।

"ऐसा नहीं है कि जैविक कोड के लिए हमारे पास प्राकृतिक व्याख्या की कमी है, लेकिन ऐसा संदेश एक बुद्धिमान मनुष्य के लिए सकारात्मक, अनुभवजन्य सत्यापन-योग्य साक्ष्य है। इसलिए हम उसपर नहीं जा रहे जो हमें नहीं पता, बल्कि उसपर जा रहे हैं जिसका हमें पता है।" डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक, Crossexamined.org, ईमेल संदेश।

विकास

विकास होता है, लेकिन तथ्य मैक्रोएवोल्यूशन (एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति में विकसित होने का सिद्धांत) को समर्थित नहीं करते हैं। मैक्रोएवोल्यूशन का सिद्धांत वहां दिखाई देता है जब जीवाणु जीवाणुनाशक का विरोध करने के लिए विकसित होते हैं, लेकिन ये फिर भी जीवाणु ही रहते हैं। इसे कुत्तों की विभिन्न नस्लों में भी देखा जा सकता है - लेकिन वो फिर भी कुत्ते रहते हैं। मैक्रोएवोल्यूशन का कभी कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला है। यदि यह सच होता तो वैज्ञानिक आज भी एक अनुपस्थित कड़ी का पहला जीवाश्म अभिलेख नहीं खोज रहे होते; अब तक उन्हें ऐसे लाखों अभिलेख मिल जाते। हर बार जब कोई अनुपस्थित कड़ी खोजने का दावा करता है, तब इसकी खबर बन जाती है। इसके बाद यह अस्पष्टता में बदल जाता है जब यह जाहिर हो जाता है कि वो किसी पूर्ण रूप से विकसित जानवर का जीवाश्म या उन कई चकमों में से एक था जिसपर विकासवादियों ने शुरू में विश्वास किया था।

नेब्रास्का मैन: यह अद्भुत खोज सूअर के दांत से ज्यादा कुछ नहीं थी।

लूसी: लूसी के अवशेषों को विलुप्त हो चुके वानर के रूप में पुनर्वर्गीकृत कर दिया गया है।

पिल्टडाउन मैन: जानबूझकर दिया गया चकमा साबित हुआ। मनुष्य की खोपड़ी को लंगूर के जबड़े से जोड़ा गया था और नष्ट करके बूढ़ा बनाया गया था।

रमपिथेकस: आरंगुटान का पाया गया।

जावा मैन: इन हड्डियों को लंगूर और मानव का मिश्रण बताया गया था। इसके खोजकर्ता ने बाद में इसे खारिज कर दिया था।

पेकिंग मैन: एक बार फिर, मानव और लंगूर की हड्डियों का मिश्रण।

चार्ल्स डार्विन ने *प्रजातियों की उत्पत्ति* में कहा था कि उनके सिद्धांत परिवर्तित जीवाश्मों पर आधारित हैं जिन्हें अब तक नहीं खोजा गया है। "अतीत में धरती पर मौजूद माध्यमिक किस्में बहुत बड़ी रही होंगी। तो फिर क्यों प्रत्येक भूवैज्ञानिक गठन और हर एक सतह ऐसी माध्यमिक कड़ी नहीं है? भूविज्ञान निश्चित रूप से ऐसी बारीकी से धीरे-धीरे बढ़ने वाली जैविक श्रृंखला को उजागर नहीं करता है; और यह, शायद, सबसे जाहिर और गंभीर आपत्ति है जो मेरे सिद्धांत के विरुद्ध हो सकती है।" चार्ल्स डार्विन, *प्रजातियों की उत्पत्ति* (जोर दिया गया)।

"मुझे विश्वास है कि एक दिन डार्विनियन मिथक को विज्ञान के इतिहास में सबसे बड़े धोखे का दर्ज़ा दिया जायेगा। सोरेन लोरवट्टुप, *डार्विनवाद: मिथक का खंडन* (जोर दिया गया)।

"(विकासात्मक प्रक्रियाओं के माध्यम से) जीवन के उच्च रूपों में उत्पन्न होने की संभावना को 'कूड़े के ढेर से गुजरने वाले बवंडर के इसमें मौजूद सामग्री से बोइंग 747 निर्मित करने' की संभावना से तुलना की जा सकती है।" सर फ्रेड होयल, खगोलविज्ञान के प्रोफेसर, "*होयल ऑन एवोल्यूशन*," नेचर, खंड 294, 12 नवंबर, 1981, पृष्ठ 105।

वर्तमान में, 600 से ज्यादा वैज्ञानिकों ने निम्नलिखित कथन पर हस्ताक्षर कर दिया है, और यह संख्या अभी भी बढ़ रही है। "हमें जीवन की जटिलता के लिए

अनियमित उत्परिवर्तन और प्राकृतिक चयन की क्षमता के जिम्मेदार होने के दावों पर संदेह है। डार्विन के सिद्धांत के साक्ष्य की सावधानी से जांच की जानी चाहिए।" www.dissentfromdarwin.org

"साहित्य में ऐसा दावा करने वाला कोई भी नहीं है कि एक प्रजाति को दूसरी प्रजाति में विकसित होते हुए देखा गया है। स्वतंत्र जीवन का सबसे सरलतम स्वरुप, जीवाणु, इस प्रकार के अध्ययन के लिए आदर्श होता है, जिसकी उत्पत्ति का समय बीस से तीस मिनट है, और अट्ठारह घंटे के बाद आबादी हासिल हो जाती है। लेकिन जीवाणु विज्ञान के पूरे 150 सालों में, इसका कोई सबूत नहीं मिला है कि जीवाणु की एक प्रजाति किसी और प्रजाति में बदली है।" ब्रिटिश जीवाणुविज्ञानी एलन एच लिंटन, "*स्केंट सर्च फॉर द मेकर*," द टाइम्स हायर एजुकेशन सप्लीमेंट, 20 अप्रैल, 2001 (जोर दिया गया)।

"और मुख्य तथ्य यह है कि: यदि विकास से हमारा मतलब मैक्रोएवोल्यूशन (जैसा कि आगे हमारा मतलब होगा) से है तो हम पूरी कठोरता के साथ यह कह सकते हैं कि यह सिद्धांत वैज्ञानिक अनुमोदन से पूरी तरह से अलग है। अब, निश्चित रूप से, वैज्ञानिक अचूकता के प्रभाव के साथ विकासवादियों द्वारा प्रचारित विकास के बारे में बहुत सारे दावों को देखते हुए, यह अजीब लग सकता है। और फिर भी तथ्य यही बताते हैं कि आज तक इस सिद्धांत के समर्थन में कोई भी ऐसा प्रमाणित साक्ष्य नहीं मिला है कि एक प्रजाति से दूसरी में परिवर्तन हुआ है।" वोल्फगैंग स्मिथ, *टीहिल्डिज्म एंड द न्यू रिलीजन*, रॉकफोर्ड., III टैन बुक्स, 1988, पृष्ठ 5-6 (जोर दिया गया)। डॉ. स्मिथ ने एमआईटी और यूसीएलए में पढ़ाते थे।

"बहुत सारी गायब कड़ियाँ, खोज में अलगाव, संरचनात्मक और कार्यात्मक जटिलताएं, और अस्पष्ट जैविक परिवर्तन हैं, और गूढ़ एवं असंभव संयोगों की संख्या बहुत ज्यादा है, जिसके कारण विकास को सिद्ध वैज्ञानिक सिद्धांतों में शामिल नहीं किया जा सकता है। अनुपस्थित कड़ियों की एक विशाल, तेजी से बढ़ती हुई लहर चार्ल्स डार्विन के समुद्रतट को बंद कर रही है, लेकिन फिर भी किनारे रहने वाले कुछ निवासी उसकी आवाज़ को नहीं सुन सकते हैं। कुछ लोग हमेशा बहरे रहेंगे।" जॉफरी सिमंस द्वारा, एम.डी. द्वारा *बिलियंस ऑफ मिसिंग लिंक्स*, हार्वेस्ट हाउस, 2007।

निष्कर्ष: मैक्रोएवोल्यूशन अर्थात एक प्रजाति के दूसरे में बदलने की प्रक्रिया का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

वैज्ञानिक तथ्यों में परमेश्वर को क्यों नहीं देख सकते हैं?

यह एक बहुत महत्वपूर्ण सवाल है, और इसका संबंध काफी हद तक विज्ञान की परिभाषा से है। अमेरिकी विरासत शब्दावली, http://education.yahoo.com/reference/dictionary/entry/science, में मौजूद विज्ञान की निम्नलिखित प्रमुख परिभाषा प्राकृतिक कारण की खोज को प्रतिबंधित करती है:

a) घटना का अवलोकन, पहचान, विवरण, प्रायोगिक जांच और सैद्धांतिक व्याख्या।
b) ऐसी गतिविधियाँ प्राकृतिक घटनाओं के एक वर्ग तक ही सीमित हैं।
c) ऐसी गतिविधियाँ जाँच या अध्ययन की वस्तु पर लागू होती हैं।

परिभाषा के अनुसार, विज्ञान साक्ष्य को देखे बिना ही परमेश्वर को अस्वीकार कर देता है। इसलिए, आपने चाहे जो भी खोजा हो, परमेश्वर कारण नहीं हो सकता है। इसकी तुलना जांच से पहले अपमान से की जा सकती है। इसीलिए कई वैज्ञानिक खोजी गयी अत्यंत जटिल संरचना के बावजूद हमें प्राकृतिक कारण बेचने की कोशिश करते रहते हैं।

यह समानता इस मामले पर थोड़ा प्रकाश डाल सकती है: अगर मैं एक जासूस होता जिसे निश्चित रूप से पता है कि किसी अपराध के केवल दो संभव संदिग्ध हैं, और व्यक्तिगत पक्षपात के कारण मैं साक्ष्य की जाँच किये बिना ही अपराधी को अस्वीकार कर देता हूँ तो मुझे जाहिर तौर पर कई सारे तथ्यों को नज़रअंदाज़ करना होगा और निर्दोष व्यक्ति को फंसाने के लिए साक्ष्य में हेराफेरी करनी होगी या कुछ नए साक्ष्य बनाने होंगे। जांच से पहले ही परमेश्वर को अस्वीकार करके, वैज्ञानिकों को यह मानने के लिए मजबूर किया गया है कि सब कुछ प्राकृतिक कारणों का उत्पाद है, जिसपर तथ्यों को देखते हुए संदेह उत्पन्न होता है।

इसके कारण वैज्ञानिकों को कभी-कभी गोल छेद में चौकोर खूंटी डालने का प्रयास करना पड़ता है, यह बताते हुए कि चीजें ऐसी आकस्मिक घटना, भाग्य, संयोग और समय से हुई हैं जिन्हें कभी भी नहीं देखा गया है। उदाहरण के लिए, जीवन बुद्धिमत्ता, जानकारी और जटिल संरचना को कभी भी निर्जीव और बुद्धिहीन से आते हुए नहीं देखा गया है, जैसा कि परमेश्वर के ना होने पर होता।

नास्तिक और कई वैज्ञानिकों को उसी कारण से परमेश्वर नहीं मिलते जिस कारण से चोर को पुलिस नहीं मिलता।

परमेश्वर को अस्वीकार करने वाले कई वैज्ञानिकों और साक्ष्य देखने से पहले ही अपना फैसला करने लेने वाले न्यायधीश में काफी स्पष्ट समानता होती है। यदि वैज्ञानिक इस रवैये के साथ न्यायाधीश का काम करने आते तो निश्चित रूप से उन्हें अयोग्य सिद्ध कर दिया जाता। आपके लिए उस चीज को देखना असंभव है जिसे आपने देखने से पहले ही अस्वीकार कर दिया है।

तुम मुझे खोजोगे और पाओगे, जब तुम मुझे अपने पूरे दिल से खोजोगे (यिर्मयाह 29:13)।

पक्षपात के बहुत सारे साक्ष्य

कुछ लोगों का दावा है कि आप पमरेश्वर के बारे में किसी ईसाई द्वारा लिखी गयी चीज पर भरोसा नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि बाइबिल सही है। लेकिन, क्या आपको हमारी विभिन्न मतों वाली सूची याद है? किसी भी मत से जुड़ने वाले सभी लोगों को यह लगता है कि उनका मत सही है। इसलिए, यदि कोई किसी विषय के बारे में प्रतिबद्ध और जुनूनी है तो यह जरूरी नहीं है कि यह गलत हो। अगर ऐसा होता तो आप वैज्ञानिक साहित्य सहित, किसी भी चीज पर भरोसा नहीं कर पाते। केवल तथ्यों से सच्चाई का पता लगाया जा सकता है। निम्नलिखित उद्धरण दर्शाते हैं कि कैसे कुछ वैज्ञानिक तथ्यों की जांच करने से पहले ही परमेश्वर की संभावना को अस्वीकार कर देते हैं, जिसे प्रकृतिवाद के लिए प्राथमिक प्रतिबद्धता के रूप में परिभाषित किया गया है,

साथ ही इसे भौतिकवाद के लिए प्राथमिक प्रतिबद्धता के रूप में भी जाना जाता है। इसका मतलब है कि साक्ष्य देखने से पहले ही, वे यह फैसला कर लेते हैं कि कारण किसी प्राकृतिक स्रोत से उत्पन्न हुआ होगा। मुख्यधारा के वैज्ञानिकों के बीच यह पक्षपात का स्पष्ट सबूत है।

"जीव विज्ञानियों को हमेशा इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि जो वे देखते हैं उसे निर्मित नहीं किया गया है, बल्कि यह विकसित हुआ है।" फ्रांसिस क्रिक, डबल हेलिक्स की सह-खोज के लिए नोबल पुरस्कार के विजेता, *व्हाट मैड पर्सूट।*

"विज्ञान की रचनाओं की कुछ पेटेंट विसंगतियों के बावजूद, स्वास्थ्य और जीवन के इसके कई बड़े वादों को पूरा करने में विफल होने के बावजूद, और प्रमाणरहित बेकार कहानियों के लिए वैज्ञानिक समुदाय की सहनशीलता के बावजूद, हम विज्ञान का पक्ष लेते हैं, क्योंकि हमारी इसके लिए एक पूर्व प्रतिबद्धता है, भौतिकवाद के लिए प्रतिबद्धता है। ऐसा नहीं है कि विज्ञान की विधियां और संस्थाएं हमें किसी भी प्रकार से अभूतपूर्व संसार की भौतिक व्याख्या को स्वीकार करने के लिए मजबूर करती हैं, बल्कि, इसके विपरीत, हम जांच का उपकरण और सिद्धांतों का समूह बनाने के लिए भौतिक कारणों का पहले से पालन करने के लिए मजबूर हैं जो भौतिक व्याख्याओं का निर्माण करते हैं, चाहे यह किसी विशेष जानकारी या अनुभव के बिना कितना भी सहज ज्ञान का विरोध करने वाला और रहस्यमयी क्यों ना हो। इसके अलावा, भौतिकवाद असीम है, क्योंकि हम दैवीय पक्ष की अनुमति नहीं दे सकते हैं।" प्रोफेसर रिचर्ड लेवेंटीन, आनुवंशिकीविद् और विकासवादी, *बिलियंस एंड बिलियंस ऑफ डेमन* (जोर दिया गया)।

"मेरी राय में, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल में महत्वपूर्ण सोच वाले अभ्यासों के लिए विषयों के रूप में रचना और विकास का प्रयोग करना निश्चित रूप से छात्रों को भ्रमित करता है और इसकी वजह से वो विज्ञान के एक प्रमुख विषय को अस्वीकार कर सकते हैं।" यूजिनी स्कॉट, विज्ञान शिक्षा के लिए सृजन विरोधी राष्ट्रीय केंद्र के प्रमुख, लैरी विथम, *वेयर डार्विन मीट्स द बाइबिल*, पृष्ठ 23।

"भले ही सभी डेटा बुद्धिमान रचनाकार की ओर इशारा करते हैं, लेकिन ऐसी कल्पना को विज्ञान से निकाल दिया गया है क्योंकि यह प्रकृतिवादी नहीं है।" डॉ. स्कॉट टॉड, केंसास राज्य विश्वविद्यालय में प्रतिरक्षाविज्ञानी, *"कॉरेस्पोंडेंस टू नेचर"* 401(6752): 423, 30 सितंबर, 1999 (जोर दिया गया)।

"आखिरकार सबकुछ 'परमेश्वर' के सिद्धांत के बारे में है। परिभाषा के अनुसार, किसी वैज्ञानिक के लिए यह जवाब नहीं हो सकता कि 'शायद परमेश्वर ने किया था', क्योंकि परमेश्वर को गैर-भौतिकवादी या प्रकृति के बाहर के रूप में परिभाषित किया गया है। इसलिए, अक्सर वैज्ञानिक यह बहस करते हैं कि अगर परमेश्वर है भी तो यह विज्ञान की खोज से परे है- अर्थात उसे किसी भी समीकरण में स्वीकार या अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।" सीन पिटमैन एम.डी. www.DetectingDesign.com (जोर दिया गया)।

बाइबिल की यह अगली आयत काफी उचित नज़र आती है क्योंकि इसने आज के वैज्ञानिकों का अनुमान लगा लिया था, जो विकास की पूजा करते हैं।

वो बुद्धिमान होने का दावा करके मूर्ख ही रह गये। और उन्होंने अविनाशी

परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्यों, पक्षियों, पशुओं और सांपों से मिलती-जुलती प्रतिमाओं में ढाल दिया (रोमियों 1:22-23)।

निष्कर्ष – कई वैज्ञानिक तथ्यों को देखने से पहले ही परमेश्वर को अस्वीकार करके स्पष्ट रूप से पक्षपात करते हैं।

वैज्ञानिकों के बीच सहकर्मी दबाव

एक किशोर के रूप में लोगों की स्वीकृति पाने और अपनी जगह बनाने या अस्वीकार होने का दबाव याद है? वैज्ञानिकों के साथ कुछ अलग नहीं है; प्रकृतिवाद के खिलाफ बोलने वाले वैज्ञानिकों को प्रतिशोध और उत्पीड़न झेलना पड़ सकता है और जिसकी वजह से उनकी नौकरी जा सकती है, उनके काम को अस्वीकार किया जा सकता एवं और भी बहुत सारी चीजें हो सकती हैं। इसी प्रकार का सहकर्मी दबाव वर्तमान समय की राजनैतिक प्रक्रिया में देखा जा सकता है जहाँ लोग उत्पीड़न के डर से अक्सर किसी के लिए अपना समर्थन भी खुलकर नहीं प्रकट करते हैं

वैज्ञानिकों द्वारा झेले जाने वाले सहकर्मी दबाव के उदाहरण देखें - www.discovery.org/a/2939

एलियंस हमें यहाँ लाये थे

हालाँकि लोगों ने यूएफओ देखने का दावा किया है, फिर भी किसी भी SETI कार्यक्रम से इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला है, जो 1960 के दशक में शुरू हुआ था। कुछ व्यापक रूप से कल्पनाशील वैज्ञानिक, यहाँ तक कि वर्तमान समय में अनीश्वरवाद के चैंपियन, ऑक्सफ़ोर्ड के प्रोफेसर रिचर्ड डॉकिंस, कहते हैं कि एलियंस धरती पर जीवन के कारण हो सकते हैं। हॉलीवुड ने अपनी यथार्थवादी साइंस-फिक्शन फिल्मों से हमारी कल्पना में इस सिद्धांत को बढ़ावा देने में मदद की है। लेकिन यदि सचमुच एलियन मौजूद हैं तो भी इस तथ्य का कोई जवाब नहीं है कि ब्रह्मांड अपने आप अचानक आया है, और यह जीवन के निर्माण को केवल एक कदम पीछे धकेल देता है; एलियंस को किसने बनाया? एक अज्ञात पहला कारण होना जरूरी है।

क्या कुछ वैज्ञानिकों के अंधविश्वास के इस प्रदर्शन का वास्तविक कारण उनकी यह जानकारी है कि निर्जीव रसायनों का आकस्मिक रूप से एक साथ मिलना और जीवन का निर्माण करना असंभव है? साक्ष्य देखने से पहले ही परमेश्वर को अस्वीकार करने के कारण, अब वे बुद्धिमत्ता का परिचय देने के तरीके के रूप में केवल एलियंस के साथ फंस गए हैं। एलियंस का अस्तित्व हो सकता है, लेकिन वे साक्ष्य के अनुरूप नहीं हैं।

क्या कोई भी वैज्ञानिक परमेश्वर में विश्वास करता है?

हाँ, कई वैज्ञानिक करते हैं। परमेश्वर के बारे में बहस के दोनों तरफ बेहद बुद्धिमान लोग मौजूद हैं। चूँकि, दोनों पक्ष सही नहीं हो सकते हैं, इसलिए

हम देखते हैं कि मनुष्य की सांसारिक बुद्धिमत्ता हर समय सच्चाई का सूचक नहीं हो सकती है। निम्नलिखित वेबसाइटें उन वैज्ञानिकों द्वारा समर्थित साइटों का नमूना हैं जो परमेश्वर में भरोसा करते हैं:

reasons.org

discovery.org

creation.com

godandscience.org

answersingenesis.org

सभी वैज्ञानिकों की तरह, ये पुरुष और महिलाएं भी कभी-कभी विवरणों के लिए अलग-अलग व्याख्या देते हैं, लेकिन वे सभी यह स्वीकार करेंगे कि परमेश्वर तथ्यों पर आधारित आवश्यकता है।

"नेचर पत्रिका में एक सर्वेक्षण को देखकर कुछ महीने पहले मुझे इसकी याद आयी थी। इसमें दर्शाया गया था कि 40% अमेरिकी भौतिक विज्ञानी, जीवविज्ञानी और गणितज्ञ परमेश्वर में विश्वास करते हैं और ना केवल किसी आध्यात्मिक सिद्धांत में, बल्कि एक ऐसे परमेश्वर में जो हमारे रोजमर्रा के मामलों में सक्रिय रूप से रूचि लेता है और हमारी प्रार्थना सुनता है: इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर। जिम होल्ट, "विज्ञान परमेश्वर को पुनर्जीवित करता है।" वाल स्ट्रीट जर्नल 97 (जोर दिया गया)।

"धर्म के बिना विज्ञान बेकार है, विज्ञान के बिना धर्म अँधा है।" अल्बर्ट आइंस्टीन, जर्मनी में जन्मे अमेरिकी भौतिक विज्ञानी, "विज्ञान, दर्शन और धर्म: एक संगोष्ठी।" 1941।

परमेश्वर के अस्तित्व के लिए नैतिक तर्क

हालाँकि यह भाग थोड़ा लंबा हो सकता है, लेकिन यह बहुत जरूरी है कि आप सत्य को समझें। इसलिए, मैं आपको इसे अच्छी तरह से पढ़ने के लिए प्रेरित करता हूँ।

यह एक सर्वव्यापक तथ्य है कि सबके अंदर (नास्तिकों सहित) एक विवेक होता है जो विशेष रूप से नैतिकता और उन चीजों से संबंधित होता है जिनके लिए हम एक प्रकार के दायित्व का अनुभव करते हैं। कोई भी समझदार व्यक्ति अपने विवेक का पूरी तरह से विरोध करके जीवित रहने के बारे में नहीं सोच सकता है। सही और गलत जानने के लिए किसी को भी बाइबिल की जरुरत नहीं है। हमारा विवेक यह स्पष्ट करके कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, हमें गलत निर्णय लेने से रोकने वाली चेतावनी प्रणाली के रूप में काम करता है। सवाल यह उठता है कि अगर परमेश्वर नहीं है तो दुनिया में हर एक इंसान के पास वो एक समान चेतावनी प्रणाली कैसे हो सकती है जो उन्हें बताती है कि झूठ बोलना, चोरी करना और हत्या करना गलत है? कुछ लोग तर्क

देते हैं कि यह विकास, हमारे माता-पिता और समाज से आता है। मैं मानता हूँ कि हमें उनसे नैतिकता मिली है और उन्होंने इसे मजबूत बनाया है, लेकिन सवाल यह नहीं है कि हम इसे कैसे सीखते हैं, बल्कि यह है कि हमारा विवेक यह कैसे जानता है कि हत्या और बलात्कार जैसे कुछ कार्य निःसंदेह गलत हैं।

मैं सबसे पहले यह बताना चाहता हूँ कि बुराई को पहचानने की हमारी क्षमता परमेश्वर के अस्तित्व का समर्थन करती है। किसी बुराई को पहचानने के लिए अच्छाई की जानकारी होना जरूरी है। किसी दोष को पहचानने के लिए गुण की जानकारी होना जरूरी है।

सी.एस लुईस बताते हैं:

"एक नास्तिक के रूप में, परमेश्वर के विरुद्ध मेरा तर्क यह था कि ब्रह्माण्ड कितना क्रूर और अन्यायी प्रतीत होता है। लेकिन न्याय और अन्याय की मेरी यह समझ कहाँ से आयी थी? कोई भी आदमी किसी रेखा को तब तक टेढ़ा नहीं कह सकता जब तक कि उसे सीधी रेखा की कोई जानकारी ना हो। अन्यायी कहने पर मैं इस ब्रह्मांड की किससे तुलना कर रहा था?" सी.एस लुईस, *मेयर क्रिश्चियनिटी*।

यदि हमें किसी एक ऐसे इंसान के जीवन का परीक्षण करना हो जिसके अंदर मनुष्यों में नैतिकता का स्तर सबसे ज्यादा है तो हम सभी जानते हैं कि वो सर्वश्रेष्ठ नहीं होंगे। वो बस आपके और मेरे बजाय सर्वश्रेष्ठता के ज्यादा करीब होंगे। लेकिन हम उस लगभग सर्वश्रेष्ठ इंसान की किससे तुलना कर रहे हैं, यह पता लगाने के लिए कि उनमें कमी है? हम उन उच्च मानकों का प्रयोग कर रहे होंगे जिनके अस्तित्व के विषय में हम सभी को जानकारी है। हमें कैसे पता कि सर्वश्रेष्ठ नैतिकता क्या होती है अगर यह मनुष्यों में मौजूद नहीं है तो? कई मानते हैं कि इसकी सबसे अच्छी व्याख्या यह है कि परमेश्वर है और उसने हमारे अंदर नैतिकता का समावेश किया है, जैसा कि बाइबिल दावा करती है।

वे (मनुष्य जाति) अपने मन पर लिखे हुए, व्यवस्था के कर्मों को दिखाते हैं। उनका विवेक भी इसकी ही गवाही देता है और उनका मानसिक संघर्ष उन्हें अपराधी बताता है या निर्दोष कहता है। (रोमियों 2:15, जोर दिया गया)।

कुछ लोग ईसाईयों को पाखंडी कहते हैं क्योंकि वो हमेशा वैसा व्यवहार नहीं करते जैसा कि यीशु ने निर्देश दिया था। फिर भी ऐसा कहने वाले लोगों ने हर बार झूठ बोलने पर, चोरी करने पर या किसी को धोखा देने पर अपने विवेक की सच्ची सलाह का अपनी इच्छा से उल्लंघन किया होगा। इस मापदंड से, हम सभी पाखंडी हैं।

नैतिक मुद्दों में क्रिया बनाम प्रतिक्रिया

इस भाग को पढ़ते समय इस बात को ध्यान में रखना और समझना महत्वपूर्ण है: हम अपनी क्रियाओं के बजाय अपनी प्रतिक्रियाओं से व्यक्तिपरक नैतिकता को ज्यादा अच्छे से समझते हैं। उदाहरण के लिए अगर मैं आपसे $20 चुराता हूं तो मुझे नहीं लगेगा कि यह गलत है लेकिन जैसे ही आप मुझसे $20 चुराएंगे मुझे निश्चित रूप से पता चल जाएगा कि यह गलत है।

हम सभी को पता है कि झूठ बोलना और चोरी करना गलत है। और फिर भी यदि हम चोरी करते हुए पकड़े जाते हैं तो हम बहाने बनाते हैं। यदि यह गलत नहीं है तो बहाने क्यों बनाना? जब कोई हमसे चोरी करता है या झूठ बोलता है तो हमें तुरंत पता चल जाता है कि यह गलत है। ओसामा

बिन लादेन को शायद लगा होगा कि अल्लाह में उसके विश्वास के कारण इमारतों में हवाई जहाज टकराना और निर्दोष लोगों को मारना उचित है, लेकिन यदि ऐसा हम उसके देश के साथ करते तो उसे तुरंत पता चल जाता कि यह गलत है। आप जो करना चाहते हैं वह सही है या गलत यह पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका इस चीज पर विचार करना है कि यदि ऐसा कुछ आपके साथ हो तो ऐसी स्थिति में आप कैसी प्रतिक्रिया देंगे।

तुम अपने लिए जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हो, तुम्हें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। (लूका 6:31)

वस्तुनिष्ठ बनाम व्यक्तिगत राय

कुछ लोग दावा करते हैं कि नैतिकता आपेक्षिक या व्यक्तिपरक है (एक राय बनाम दूसरी राय), जो परमेश्वर को अनावश्यक बनाता है। वस्तुनिष्ठ नैतिकता, आदर्श और कर्तव्य एक नैतिक सत्य को दर्शाते हैं, जो सभी मनुष्यों से ऊपर है, एक ऐसा नैतिक सत्य जो तब भी सत्य होगा यदि सभी लोगों को इसे असत्य मानने के लिए मना लिया जाए। यदि हमारा विवेक, हमारी सही और गलत की जानकारी, हमारी अपनी राय से कहीं ऊपर है तो जरूर इसका कोई ऐसा स्त्रोत होगा जो मानवता को ऊंचा उठाता है। इसलिए, निश्चित रूप से, यदि यह सत्य है कि वस्तुनिष्ठ नैतिकता मौजूद है तो परमेश्वर इसका तार्किक स्रोत है।

reasonablefaith.org के डॉ. विलियम लेन क्रैग परमेश्वर के लिए नैतिक तर्क देते हैं:

1. यदि परमेश्वर नहीं होता तो वस्तुनिष्ठ नैतिक मूल्य और कर्तव्य भी नहीं होते।
2. वस्तुनिष्ठ नैतिक मूल्य और कर्तव्य हैं।
3. इसलिए परमेश्वर भी है।

आगे हम यह पता लगाने के लिए साक्ष्य की जांच करेंगे कि दूसरा बिंदु सत्य है या नहीं। क्या नैतिकता उद्देश्य है, या सिर्फ राय?

वस्तुनिष्ठ नैतिकता परीक्षा

निम्नलिखित परीक्षा से हमें यह पता लगाने में सहायता मिलेगी कि वस्तुनिष्ठ नैतिकता का अस्तित्व है इसलिए परमेश्वर का भी अस्तित्व है। यह चार वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का प्रयोग करता है जिन्हें कुछ लोग स्वीकृत मानते हैं। जिससे दूसरे यह दावा करते हैं कि नैतिकता बस एक राय के विपरीत दूसरी राय है। पढ़ते समय, अपने आपको मानसिक रूप से पीड़ित के स्थान पर रखिये और इसके बाद फैसला करिये कि अपराधियों की राय के बावजूद कार्य गलत हैं या नहीं।

1. आप शोषित बच्चों में से एक हैं।

इंटरनेट पर "संयुक्त राज्य 72 लोगों को भयानक बाल पोर्न नेटवर्क का दोषी करार करता है" नामक 8-3-11 AFP लेख में छोटे बच्चों के साथ होने वाले भयानक यौन कृतियों के बारे में बताया गया है। दोषी मानते हैं कि जो काम वो कर रहे थे वो बिलकुल उचित था और कहीं से भी अवैध या अनैतिक नहीं था।

इस उद्धरण पर विचार करें:

"ड्रीमबोर्ड के निर्माता और सदस्य पूरी दुनिया में फैले हुए थे - लेकिन कथित तौर पर उनके इस आश्चर्यजनक विश्वास ने उन्हें संयुक्त किया था कि बच्चों का यौन शोषण उचित आचरण है और इसे अपराध की श्रेणी में नहीं डालना चाहिए।" वकील एरिक होल्डर।

2. आप उनमें से एक हैं जिन्हें सताया गया था और मारा गया था।

जब नाज़ियों को मानवता के खिलाफ उनके अपराधों के लिए गिरफ्तार किया गया था और मुकदमा चलाया गया था तब अपने बचाव में उनका यह दावा था कि बाहरी लोगों के पास यह अधिकार नहीं है कि वो आकर उन्हें बताएं कि उन्हें अपना समाज कैसे चलाना चाहिए। वे बस आदेश का पालन कर रहे थे और उन्होंने दावा किया कि करोड़ों निर्दोष लोगों को सताना और उनकी हत्या करना गलत नहीं था।

3. आप नामित गैर-व्यक्ति हैं।

गर्भपात, गुलामी और नाज़ियों द्वारा यहूदियों की हत्या की तुलना करने पर हमें कुछ विशेष दिखाई पड़ता है। वर्षों तक, अमेरिका ने गुलामों को गैर-व्यक्ति या संपत्ति के रूप में नामित करके दासता को स्वीकार किया। अपने दिनों में नाज़ी और आज के समय में कट्टर मुसलमान यहूदियों को गैर-व्यक्ति मानते हैं। आज, ज्यादा से ज्यादा लोगों को गलत रूप से यह लगता है कि यदि हम यहूदियों से छुटकारा पा लें तो कट्टरपंथी मुसलमान खुश हो जायेंगे और पूरे मध्य एशिया की समस्या का समाधान हो जायेगा। यदि कोई आपको गैर-व्यक्ति के रूप में वर्गीकृत कर दे—जिससे आपकी जान लेना वैध हो जाए—तो क्या यह अभी भी गलत होगा?

4. आप पांच महीने के अजन्मे बच्चे हैं।

आंशिक जन्म गर्भपात एक और पाप है और अपने विवेक को संतुष्ट करने के लिए और अपनी मन की चीज करने के लिए मनुष्य के प्रयास का एक निर्लज उदाहरण है। सिर के बिना, एक पूरा बच्चा (उनकी नज़रों में गैर-व्यक्ति) पैदा कर दिया जाता है। डॉक्टर बच्चे की खोपड़ी में छेद करके उसके पूरे दिमाग को खोखला कर देते हैं। यदि बच्चे को सिर सहित माँ के गर्भ से निकाला जाता तो इंसान के कानून के अनुसार बच्चा एक व्यक्ति होता, और इन कुछ इंचों के कारण मनुष्य को इसे हत्या का नाम देना होगा।

विडंबना यह है कि वैध गर्भपात की अनुमति देने के लिए रो वी. वेड में न्यायाधीशों को अजन्मे बच्चों को गैर-व्यक्तियों के रूप में देखना पड़ता था। यदि अजन्मे बच्चों को व्यक्तियों के रूप में माना जाता तो उनकी रक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी होती, क्योंकि हमारे संविधान में उनके अपने अधिकार होते और गर्भपात का मुद्दा समाप्त हो जाता।

"मैंने देखा है कि गर्भपात में मरने वाला हर बच्चा पहले ही जन्म ले चुका होता है।" रोनाल्ड रीगन

यदि आपने मेरे निर्देशों का पालन किया और मानसिक रूप से अपने आप को पीड़ित की भूमिका में रखा तो आप निश्चित रूप से जान गए होंगे कि यह सभी कार्य गलत हैं, भले ही कुछ लोग यह दावा क्यों ना करें कि यह सही है। किसी

भी व्यक्ति के लिए यह धारणा बनाने के लिए कि नैतिकता केवल एक व्यक्तिगत राय है उन्हें यह कहने की भी जरूरत होगी कि ऊपर दिए गए सभी चारों उदाहरण बिल्कुल स्वीकृत हैं। लेकिन चलिए अब एक कदम और आगे बढ़ाते हैं और कल्पना करते हैं कि हमें बचपन से ही सिखाया गया है कि ये सभी चारों कार्य उचित हैं तो क्या अब ये कार्य सही हो जायेंगे क्योंकि आप यह मानते हैं कि ये वैध हैं, या वे अभी भी गलत होंगे? यदि आप यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उनमें से सिर्फ एक गलत है, तो नैतिकता वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए, और मनुष्य इसका स्रोत नहीं हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, जो गलत है उसके बारे में अपने ज्ञान से छुटकारा पाने के व्यापक प्रयास, साथ ही इन्हें ढंकने के प्रयास, यह जाहिर करते हैं कि नैतिक कानून वस्तुनिष्ठ है। यदि नैतिकता केवल किसी एक राय के विपरीत दूसरी राय होती तो 9/11 गलत नहीं था। किसी को भी दंड नहीं मिलना चाहिए और सभी को जेल से रिहा कर देना चाहिए। कोई भी किसी चीज के खिलाफ नैतिक रवैया नहीं अपनाएगा और अनैतिक कार्यों को ढंकने का प्रयास करने के लिए यहूदियों, गुलामों और अजन्मे बच्चों को गैर-व्यक्तियों के रूप में परिभाषित करने की कोई जरुरत नहीं होगी।

मैं मानता हूँ कि हमारी परीक्षा निश्चित रूप से यह साबित करती है कि वस्तुनिष्ठ नैतिकता मौजूद है। इसलिए, डॉ. क्रेग के नैतिक तर्क का दूसरा बिंदु सही है; जो तर्क के निष्कर्ष को सही ठहराता है। परमेश्वर है।

नैतिक संघर्ष

यदि हम जांच करें तो हमें पता चलता है कि तथाकथित नैतिक संघर्षों की उचित व्याख्या होती है। इंसानों में स्वार्थी इच्छाएं होती हैं और अक्सर वो उन सच्चाइयों को अनदेखा कर देते हैं जो उनके इरादे में फिट नहीं बैठते हैं। बाइबिल कहती है कि हम अपनी मनचाही चीजें करने के लिए परमेश्वर को अस्वीकार करके या अपना खुद का परमेश्वर बनाकर सच्चाई को दबाने की कोशिश करते हैं।

सभी अधर्मी और अन्यायी लोगों पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप प्रकट होगा (रोमियों 1:18, जोर दिया गया)।

"कुछ तर्क दे सकते हैं: क्या यहाँ भी नैतिक संघर्ष नहीं है? उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में बहुविवाह की अनुमति है। जी हाँ, लेकिन विवाह को जोड़ने वाले रीति-रिवाज़ और वचन व्यभिचार को भी प्रतिबंधित करते हैं। हालाँकि नैतिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग और अभिव्यक्तियां हर संस्कृति में अलग-अलग हो सकती हैं, ऐसे कई मूलभूत नैतिक सिद्धांत हैं जो सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को प्रभावित करते हैं।" पॉल कोपन, www.4truth.net, www.paulcopan.com

कुछ कहते हैं कि गर्भपात स्वीकृत है और कुछ कहते हैं कि यह स्वीकृत नहीं है, जिसकी वजह से कुछ लोग दावा करते हैं कि नैतिकता केवल राय है। लेकिन यह असहमति वास्तव में इस बारे में है कि जीवन कब शुरू होता है। गर्भपात का विरोध करने वाले लोग कहते हैं कि जीवन गर्भधारण के समय ही शुरू हो जाता है, जबकि इसका समर्थन करने वाला पक्ष कहता है कि यह जन्म होने पर शुरू होता है। इसलिए, इसका समर्थन करने वाले व्यक्ति के लिए गर्भपात में कोई जीवन नहीं लिया जा रहा है। फिर भी गर्भपात को उचित

ठहराने वाले लोग भी किसी नवजात बच्चे को पूरे दिल से बचाएंगे। दोनों पक्ष मानते हैं कि जीवन अनमोल है, लेकिन वो इसकी शुरुआत को लेकर एक दूसरे के साथ सहमत नहीं हैं।

एक अतिरिक्त टिप्पणी के रूप में, 1973 में रो वी. वेड के बाद से, संयुक्त राज्य में हुए 55 मिलियन गर्भपातों में से 97 प्रतिशत केवल सुविधा के लिए कराये गए थे। चीन और एशिया में, पिछले 30 वर्षों में 163 मिलियन बच्चियों का गर्भपात केवल इसलिए कराया गया है क्योंकि वो लड़के नहीं थे। *अप्राकृतिक चयन*, एम. ह्विस्टेंडहल। यहाँ वो कारण दिया गया है जिसके कारण गर्भपात का विरोध करने वाले लोग गर्भधारण के समय को जीवन की शुरुआत मानने का आग्रह करते हैं:

"दिन 22: दिल धड़कना शुरू हो जाता है। सप्ताह 7: पलके और पैरों की उंगलियां बनती हैं, नाक अच्छे से बन जाता है। बच्चा लात मारना और तैरना शुरू कर देता है। सप्ताह 8: बच्चे का हर अंग तैयार हो जाता है, हड्डियां उपास्थि का स्थान ले लेते हैं, उंगलियों के निशान बनने लगते हैं और बच्चा सुनना शुरू कर देता है। सप्ताह 12: बच्चा दर्द महसूस कर सकता है, तंत्रिकाएं और स्वर रज्जु निर्मित हो जाते हैं। बच्चा अपना अंगूठा चूस सकता है।" www.nrlc.org

नैतिक दायित्व केवल व्यक्तियों के लिए हैं

कुछ लोग दावा करते हैं कि परमेश्वर एक अवैयक्तिक बल है। इस सिद्धांत की एक समस्या यह है कि हमें कभी भी गुरुत्वाकर्षण जैसे अवैयक्तिक बल के लिए नैतिक दायित्वों का अनुभव नहीं होता है, ऐसा अनुभव केवल दूसरे लोगों के लिए होता है। हमारे द्वारा अनुभव किया जाने वाला नैतिक दायित्व एक व्यक्तिगत, आस्तिक परमेश्वर के अस्तित्व का समर्थन करता है जैसा कि बाइबिल में बताया गया है।

सही और गलत, न्याय और अन्याय

अपने मन में सही और गलत का निर्विवाद ज्ञान पाने के लिए, कृपया निम्नलिखित सूची पढ़ें और हमारी दुनिया के अन्याय पर ईमानदारी से विचार करें। यदि आपने अपने जीवन में किसी अन्याय का अनुभव किया है तो उसे भी अपने मन में लाएं।

9/11 में कई निर्दोष लोग मारे गए। युद्धों में करोड़ों निर्दोष लोग मारे गए हैं। कुछ लोग परमेश्वर की सहमति का दावा करते हुए दूसरों को मारते हैं। निर्दोष बच्चों का अपहरण किया जाता है और मार दिया जाता है। कुछ लोगों को ऐसे ही मार डाला जाता है। वयस्क लोग निर्दोष बच्चों का यौन शोषण करते हैं। हर रोज़, हर 24 मिनट पर, 30,000 बच्चे भूख और इलाज योग्य बीमारियों से मारे जाते हैं। इस समय ऐसे कई लोग जेल में हैं जिनपर झूठा आरोप लगाया गया है। कट्टर मुस्लिम देशों में यीशु में अपने विश्वास को बताने मात्र से कारावास, अत्याचार और मौत जैसे परिणामों को झेलना पड़ सकता है। कुछ लोग केवल अपने परिवार के कारण बेहद अमीर हैं। कुछ अपराध करके अमीर हुए हैं। कई कठिन मेहनत के बाद भी गरीब हैं।

यदि यहाँ सूचीबद्ध चीजों ने आपकी अंतरात्मा को झकझोरा है तो ऐसा इसलिए क्योंकि आपको पता है कि वे गलत और अनुचित हैं। सवाल यह उठता है कि इन तथ्यों को देखते समय आपके मन में आने वाली अन्याय की इस गहन समझ का क्या कोई मतलब है, या यह आतंरिक समझ केवल एक बेकार भ्रम है?

परमेश्वर के अस्तित्व के संबंध में अपने निम्नलिखित नैतिक तर्क में, दार्शनिक इम्मैनुएल कैंट ने यह निष्कर्ष निकाला है कि यदि सही और गलत, न्याय और अन्याय की इस आंतरिक समझ का कोई भी मतलब बनता है तो निम्नलिखित का अस्तित्व जरूर है:

1. न्याय जरूर होगा। चूँकि इस जीवन में न्याय नहीं है, इसलिए मृत्यु के बाद जीवन होगा।
2. न्याय के लिए, एक निर्णय भी होगा।
3. सर्वश्रेष्ठ निर्णय के लिए, सर्वश्रेष्ठ नैतिक न्यायाधीश जरूर होना चाहिए।
4. न्यायाधीश के पास सारी जानकारी होनी चाहिए, ताकि उससे निर्णय में कोई गलती ना हो।
5. न्यायाधीश सर्वशक्तिमान होना चाहिए, ताकि वो अपराधी को कोई भी दंड दे सके।

कैंट का निष्कर्ष बाइबिल का प्रयोग किये बिना बाइबिल के परमेश्वर की ओर इशारा करता है और परमेश्वर के अस्तित्व की जरुरत की पुष्टि करता है।

"सभी लोगों को कुछ निश्चित सिद्धांतों की जानकारी है; ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ हत्या गुण और कृतज्ञता दोष है।" टोरंटो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और लेखक जे. बुडिज़ीज़वस्की, *रिटेन ऑन द हार्ट: द केस फॉर नेचुरल लॉ।*

"नैतिक अनुभव में हम नैतिक मूल्यों और कर्तव्यों के एक दायरे को समझते हैं जो हमारे ऊपर लागू होते हैं। भौतिक संसार की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की तुलना में नैतिक मूल्यों की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता से इंकार करने का कोई कारण नहीं है।" विलियम लेन क्रेग, www.reasonablefaith.org

नैतिक बुराई साबित करती है कि कोई परमेश्वर नहीं है

मैंने थोड़े समय तक इस आपत्ति का सामना किया है, लेकिन क्योंकि यह एक अत्यधिक भावनात्मक आपत्ति है जिसे अक्सर परमेश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करने के लिए प्रयोग किया जाता है, इसलिए मैं एक अन्य पहलू से इसपर चर्चा करना चाहता हूँ। मुझे पता है कि अगर मैं केवल दुनिया की बुराइयों पर ध्यान दूँ तो मेरे लिए भी परमेश्वर पर भरोसा करना मुश्किल हो जायेगा। लेकिन बुराई परमेश्वर के अस्तित्व को झूठा साबित नहीं करती है, विशेष रूप से उन सभी साक्ष्यों को ध्यान में रखने पर जो परमेश्वर की जरुरत को दर्शाते हैं। इंसान की बुरा काम करने की क्षमता हमारी अपनी मुक्त इच्छा की वजह से, जो सभी नैतिक बुराइयों का स्रोत है। परमेश्वर को पता था कि मुक्त इच्छा के साथ बुराई का अस्तित्व होगा, और वो यह भी जानता था कि मनुष्य उसके इकलौते बेटे को सूली पर चढ़ा देगा, लेकिन फिर भी उसने हमें मुक्त इच्छा दी। बुराई मिटाने के लिए, परमेश्वर को सभी की मुक्त इच्छा को

समाप्त करना होगा, जो हमारी प्यार करने की क्षमता को भी समाप्त कर देगा। निश्चित रूप से परमेश्वर ने प्रेम को बहुत ऊँचा स्थान दिया है। क्या आप एक ऐसे संसार की कल्पना कर सकते हैं जहाँ प्यार संभव नहीं है? बाइबिल वादा करता है कि परमेश्वर बुराई समाप्त कर देगा, लेकिन अपने समय में, ना कि हमारे समय में। यहाँ लैकरे के रैप सांग के कुछ बोल दिए गए हैं, जो एक नौजवान व्यक्ति हैं और समझते हैं कि बुराई हमारी मुक्त इच्छा से जन्म लेती है।

"कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर वास्तविक नहीं है क्योंकि उन्हें यह समझ नहीं आता कि दुनिया भर में फैली हुई बुराइयों के साथ कोई अच्छा परमेश्वर कैसे रह सकता है। यदि परमेश्वर वास्तविक है तो उसे सभी बुराइयों को मिटाना चाहिए, क्योंकि वो सर्वशक्तिमान है, है ना? लेकिन बुराई क्या होती है, दोस्त? यह वो हर चीज है जो परमेश्वर के खिलाफ है। यह वो हर चीज है जो नैतिक रूप से बुरी और गलत है। हत्या, बलात्कार, चोरी, झूठ, धोखा। लेकिन अगर हम चाहते हैं कि परमेश्वर बुराई को समाप्त करे तो क्या आप इसे पूरी तरह समाप्त करना चाहते हैं या थोड़ा-बहुत? यदि वो हमें बुरी चीजें करने से रोक देता है तो झूठ बोलने का क्या होगा, या हमारे बुरे ख्यालों का क्या होगा? मेरा मतलब है, आप कहाँ रुकते हैं, हत्या के स्तर पर, झूठ के स्तर पर, या सोच के स्तर पर? यदि आप चाहते हैं कि वो बुराई को समाप्त करे तो आपको दृढ़ रहना होगा; हम चुनाव नहीं कर सकते हैं। इसका मतलब है कि मैं और आप समाप्त हो जायेंगे, है ना? क्योंकि हम बुरी चीजें सोचते हैं। अगर यह सच है तो हमें भी समाप्त हो जाना चाहिए! लेकिन परमेश्वर की कृपा है कि यीशु हमें हमारे पापों से बचाने के लिए आगे आये! ईसा मसीह ने सभी बुराइयों के लिए अपनी जान दी! पश्चाताप करो, यीशु की ओर जाओ, दोस्त!" लैकरे, *रिबेल* एल्बम, *ट्रुथ*।

धर्म में अनैतिकता का भयानक अभिलेख है

मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि मैं उन सभी लोगों का बचाव नहीं कर रहा हूँ जो परमेश्वर में विश्वास करने का दावा करते हैं, मैं बस यीशु के सच्चे अनुयायियों का बचाव कर रहा हूँ। हमने पहले ही यह स्पष्ट कर दिया है कि परमेश्वर के बारे में विभिन्न मान्यताएं विरोधाभासी हैं और इसलिए एक समान नहीं हैं, भले ही वो सभी परमेश्वर के अस्तित्व की घोषणा करते हैं। परमेश्वर में भरोसा करने वाले सभी लोगों को एकत्रित करना, जैसा कि अक्सर नास्तिक करते हैं, और मानवीय गलतियों के लिए परमेश्वर को अस्वीकार करना गलत है।

यह सच है कि कुछ लोगों ने बुरा काम करने के लिए बहाने के रूप में ईसाई धर्म का प्रयोग किया है, और यह गलत है। हालाँकि, पिछले 2,000 सालों में ईसाई होने का दावा करने वाले लोगों द्वारा किये गए सभी अन्याय यह साबित नहीं करते कि बाइबिल गलत है, बिलकुल उसी तरह जैसे एक बुरा पुलिस वाला पूरे पुलिस बल और इसके लक्ष्य को बुरा साबित नहीं कर सकता है।

"किसी भी सिद्धांत को इसके दुरूपयोग से ना आंकें" (सेंट ऑगस्टाइन)।

यह आपत्ति करने वाले लोग दर्शाते हैं कि उनकी यीशु की शिक्षाओं में बहुत

कम समझ है। इस आपत्ति को बस यीशु की शिक्षा को अच्छी तरह से समझकर अस्वीकार किया जा सकता है, जिससे हमें ईसा मसीह के किसी अनुयायी को पहचानने में मदद मिलती है। यहाँ लागू होने वाले दो मुख्य सिद्धांत जो यीशु ने सिखाएं थे वो हैं अपने दुश्मनों से प्यार करना और ऐसे झूठे आस्थावान होंगे जो समस्या उत्पन्न करेंगे।

ईसाई को ईसा मसीह के अनुयायी के रूप में जाना जाता है। ईसा ने अपने अनुयायियों को अपने दुश्मनों से प्यार करने के लिए कहा था और उन्होंने सूली पर चढ़कर अपने दुश्मनों के लिए मरकर और परमपिता परमेश्वर से उन्हें सूली पर चढ़ाने वाले लोगों को क्षमा करने की विनती करके हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम को साबित किया था।

"तुमने सुना है यह कहा गया था कि, 'तुम्हें अपने पड़ोसी से प्रेम करना चाहिए और अपने दुश्मन से नफरत करनी चाहिए।' लेकिन मैं कहता हूँ अपने शत्रुओं से भी प्यार करो और जो तुम्हें यातनाएँ देते हैं, उनके लिए भी प्रार्थना करो" (मत्ती 5:43-44)।

और यीशु ने बोला, "हे परमपिता, इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34a)।

बाइबिल में, पापी परमेश्वर का दुश्मन है, फिर भी यीशु पापी को बचाने के लिए मरे।

...पर परमेश्वर ने हमारे लिए अपना प्रेम दिखाया, जबकि हम तो पापी ही थे, लेकिन यीशु ने हमारे लिए अपने प्राण त्यागे (रोमियों 5:8)।

कुछ नास्तिक दावा करते हैं कि स्टैलिन, हिटलर और ऐसे ही अन्य लोग अपने बचपन में ईसाई धर्म से परिचित थे और इसलिए वो ईसाई हैं। इस मापदंड के आधार पर तो अनीश्वरवाद का दावा करने वाले कई लोग वास्तव में ईसाई हुए क्योंकि कभी उन्होंने इसपर विश्वास करने का दावा किया था। हालाँकि हिटलर और दूसरों के बारे में ये काल्पनिक दावे हैं, लेकिन जो लोग भी यीशु की शिक्षाओं को जानते हैं उन्हें पता है कि वो लोग ईसाई नहीं थे, चाहे कोई कुछ भी कहे। सच्चाई बहुत साधारण है: कुछ लोग जो ईसाई होने का दावा करते हैं वो ईसाई नहीं हैं। बाइबिल झूठे पैगंबरों, शिक्षकों और धोखेबाजों के लिए स्पष्ट रूप से चेतावनी देती है। इसके अनुसार परमेश्वर इस बात को जानते हैं, और वो हमें तो बेवकूफ बना सकते हैं, लेकिन परमेश्वर को बेवकूफ नहीं बना सकते।

यीशु के बारह मुख्य शिष्य थे। उनमें से एक यहूदा इस्करियोती भी था, जो ईसा का अनुयायी प्रतीत हुआ था। फिर भी उसने यीशु को धोखा दिया और उन्हें गिरफ्तार करवाने और सूली पर चढ़ाने में योगदान दिया। आपको क्या लगता है यहूदा इस्करियोती ईसाई था या झूठा आस्तिक?

तब यहूदा इस्करियोती जो उनके बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान याजक के पास यीशु को धोखे से पकड़वाने के लिए गया (मरकुस 14:10)।

"प्रभु-प्रभु कहने वाला हर एक व्यक्ति स्वर्ग के राज्य में नहीं जा पायेगा। बल्कि वह जो स्वर्ग में स्थित मेरे परमपिता की इच्छा पर चलता है, वही उसमें प्रवेश पायेगा।" (मत्ती 7:21)।

फिर भी उन झूठे भाइयों के कारण जो चोरी-छिपे...(गलातियों 2:4)।

लेकिन लोगों के बीच झूठे नबी दिखाई पड़ने लगे थे, बिलकुल वैसे ही झूठे नबी तुम्हारे बीच भी प्रकट होंगे, वे घातक धारणाओं का सूत्रपात करेंगे और उस स्वामी तक को नकार देंगे जिसने उन्हें स्वतंत्रता दिलायी। ऐसा करके वे अपने शीघ्र विनाश को निमंत्रण देंगे (2 पतरस 2:1)।

आज ही किसी गिरजाघर में जाइये और देखिये कि वे क्या सीखा रहे हैं। कोई भी सच्चा आस्तिक यह भाषण नहीं देगा कि ईसाई धर्म में परिवर्तित नहीं होने वाले लोगों को कैसे मारा जाये। यीशु में मुक्त इच्छा से भरोसा होना चाहिए। इसके विपरीत, वर्तमान में हमें ऐसे कई ईसाई दिखाई देते हैं जिन्हें अपने विश्वास के लिए मार डाला जाता है:

https://www.opendoorsusa.org/christian-persecution/world-watch-list/

"धर्मयुद्धों को अक्सर उन लोगों द्वारा ईसाई धर्म को अस्वीकार करने के बहाने के रूप में लाया जाता है जो वास्तविक इतिहास से परिचित नहीं हैं। किसी भी युद्ध की तरह, धर्मयुद्धों में भी भयानक चीजें की गयी थीं। धर्मयुद्धों का उद्देश्य ईसाई धर्म को ना मानने वाले लोगों पर इसे थोपना नहीं था, जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं। इतिहास बताता है कि धर्मयुद्ध मुसलमानों के आक्रमण और विदेशी भूमियों पर विजय पाने के उनके प्रयासों के लिए प्रतिक्रिया थे।" थॉमस मैडेन, *"धर्मयुद्धों का संक्षिप्त इतिहास।" जेनिट, अंतर्राष्ट्रीय समाचार संस्था*
http://www.churchinhistory.org/pages/leaflets/the-crusades.htm

यदि धर्मयुद्ध नहीं हुए होते तो शायद आज हमारे पास धर्म चुनने का विकल्प ही नहीं होता। आपका धर्म इस्लाम होता या आपका जीवन आईएसआईएस जैसे साये में बीतता।

चलिए संख्याएं देखते हैं

आर.जे. रमल ने सामूहिक हत्यारों की संख्याएं संग्रहीत करने में तीस साल से भी ज्यादा का समय दिया। उनकी वेबसाइट पर दी गयी संख्याएं सबसे ज्यादा है जिन्हें मैंने ईसाईयों या ईसाई होने का

दावा करने वाले लोगों द्वारा की गयी क्रूरता के लिए बताया है। मैं उन्हें यहाँ प्रयोग कर रहा हूँ, और मैं अनीश्वरवादी व्यवस्थाओं के लिए भी उनकी संख्याओं का इस्तेमाल कर रहा हूँ।

www.hawaii.edu/powerkills/DBG.CHAP3.HTM

ईसाईयों द्वारा दो क्षेत्रों में मारे गए लोगों की संख्या के लिए रमल की साइट से मेरी गणनाएं निम्नलिखित हैं जिन्हें नास्तिकों द्वारा सबसे ज्यादा बताया गया है:

स्पेनिश खोज – 350,000 और धर्मयुद्ध – 1,000,000। अगर ये संख्याएं सही हैं तो यीशु के शब्दों के आधार पर ये वो नहीं है जो वो चाहते थे।

कुछ अनीश्वरवादी/धर्मनिरपेक्ष व्यवस्थाओं द्वारा मारे गए लोगों की संख्या के लिए रमल की साइट पर दी गयी संख्याओं को यहाँ दिया गया है: जोसेफ स्टैलिन - 42,672,000, माओ जेडोंग - 37,828,000, अडोल्फ हिटलर - 20,946,000, चियांग काई-शेक - 10,214,000, व्लादिमीर लेनिन - 4,017,000, हिदेकी तोजो - 3,990,000 और पोल पॉट - 2,397,0003, इनमें से कुछ हैं। आर.जे. रमल द्वारा "खतरनाक राजनीति और सरकार द्वारा मौत, www.hawaii.edu/powerkills/COM.ART.HTM,

परमेश्वर में विश्वास ना करने वाले लोगों द्वारा की जाने वाले हत्याओं की संख्या ईसाई होने का दावा करने वाले लोगों द्वारा की गयी हत्याओं की तुलना में कहीं ज्यादा है, इसलिए क्या इस तर्क के आधार पर अनीश्वरवाद को अस्वीकार करना उचित नहीं होगा?

“धर्म लोगों में जहर नहीं भरता, बल्कि लोग धर्म में जहर भरते हैं।" डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक, www.crossexamined.org

"चलिए सच्ची बात करते हैं। ऐसे लोग मौजूद हैं जो गर्भपात क्लीनिकों को बम से उड़ा देते हैं। आज के समय में ऐसे लोग भी हैं जो अपना खुद का परिसर बनाकर, इसका नाम अपने पिता के नाम पर रखकर, ईसा मसीह के नाम पर हत्या कर रहे हैं। लेकिन यहाँ एक मूलभूत बिंदु है। यीशु के नाम पर लोगों की हत्या करके, वो यीशु की शिक्षाओं की पूरी तरह से अवहेलना कर रहे हैं। एक मुस्लिम हमेशा पूर्वविधान, दाऊद और सुलेमान की बात करेगा। मैं कहता हूँ ये अच्छी बात है, लेकिन वो मेरे नेता नहीं हैं -- यीशु हैं। यीशु परमेश्वर हैं।"

“यह ईसाई धर्म का मुख्य बिंदु है। यदि यीशु परमेश्वर नहीं हैं तो मैं अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ। चलिए मेरे बिंदु पर वापस आते हैं -- ये लोग यीशु की शिक्षाओं की अवहेलना करके हिंसक चीजें करते हैं। 'उनके लिए प्रार्थना करो जो तुम्हें सताते हैं।' जब कोई मुस्लिम अल्लाह के नाम पर ये चीजें करता है तो वो मुहम्मद की शिक्षाओं और उनके उदाहरण का सख्ती और निष्ठा से पालन करते हुए ऐसा करता है।” डॉ. एर्गन केनर, अपने आधे जीवन तक मुस्लिम, आर्लिंगटन बैपटिस्ट कॉलेज में, अकादमिक मामलों के प्रोवोस्ट और उपाध्यक्ष।

“स्वतंत्रता के तथ्य के लिए परमेश्वर जिम्मेदार है। अपने स्वतंत्रता के कार्यों के लिए मनुष्य जिम्मेदार है।” www.youtube.com/watch?v=Rfd_1UAjeIA

निष्कर्ष – वस्तुनिष्ठ नैतिकता मौजूद है; यह व्यक्ति के विवेक से प्रदर्शित होती है और इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। यह एक कानून के समान है और सभी कानूनों के लिए एक कानून बनाने वाला होता है। एक पारलौकिक परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है।

तथ्य परमेश्वर के संबंध में तार्किक लगते हैं

अगर कोई परमेश्वर नहीं है तो जानकारी, बुद्धिमानी, प्यार, व्यक्तित्व, भावनाओं, सहज ज्ञान, तर्क के नियमों, प्राकृतिक नियमों, ज्ञान, गणित के नियमों,

संवेदनाओं, कारण के नियम और उन सभी सारहीन चीजों का स्रोत क्या है, जिन्हें हम जानते हैं कि वो हैं?

जो लोग कोई परमेश्वर ना होने का दावा करते हैं वो मानते हैं कि हर चीज का कोई प्राकृतिक या भौतिक कारण है। समस्या यह है कि उपरोक्त में से कोई भी चीज भौतिक नहीं है - फिर भी हमें पता है कि उनका अस्तित्व है। आपको हमारे अस्तित्व का उद्देश्य समझाने की भी जरुरत होगी। ज्यादातर प्रकृतिवादी कहेंगे कि हमारा कोई उद्देश्य नहीं है। लेकिन फिर यह सवाल उठता है कि हम नैतिक रूप से सही चीजें क्यों करते हैं? और यदि हम बस केवल कोई रसायन हैं जो अचानक, संयोगवश, भाग्य और समय से एक साथ जुड़े हैं तो हमें कौन सी चीज दूसरों की परवाह करने के लिए मजबूर करती है? परमेश्वर की उपस्थिति ऐसे सभी सवालों एवं और भी दूसरे सवालों के जवाब देती है।

तथ्यों का मूल्यांकन क्या परमेश्वर है?

1. ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क से: 100 प्रतिशत साक्ष्य हमें बताते हैं कि किसी भी चीज की शुरुआत के लिए एक बाहरी कारण की जरुरत होती है। ब्रह्माण्ड के बाहर का कारण अलौकिक होगा, जो तार्किक रूप से परमेश्वर होना चाहिए। इसका कोई साक्ष्य नहीं है कि चीजें अकारण एक साथ आ सकती हैं। कोई प्राथमिक अज्ञात कारण होना जरूरी है, कुछ ऐसा जो हमेशा से रहा हो, अन्यथा इस समय किसी चीज का अस्तित्व नहीं होता।
2. संरचना संबंधी तर्क से: 100 प्रतिशत साक्ष्य हमें बताते हैं कि किसी भी संरचना के लिए, विशेष रूप से ब्रह्माण्ड और जीवन (डीएनए) में पायी जाने वाली अत्यधिक जटिल संरचना के लिए, किसी सर्जक की जरुरत होती है और संरचना केवल एक मस्तिष्क से आती है—परमेश्वर। जटिल संरचना, ज्ञान और जीवन को कभी अचानक, संयोगवश, भाग्य और समय से निर्जीव से आते हुए नहीं देखा गया है।
3. नैतिक तर्क से: 100 प्रतिशत साक्ष्य हमें बताते हैं कि हर कानून का एक कानून निर्माता होता है और नैतिक दायित्व इंसानों के लिए होता है, ना कि व्यक्तिहीन बलों के लिए। सभी भाषाओं, देशों, लिंगों और संस्कृतियों में मौजूद विवेक एक पारलौकिक कानून निर्माता का ठोस सबूत है। परमेश्वर एक तार्किक निष्कर्ष है।
4. इस बात का कोई सबूत नहीं है कि जीवन अचानक, संयोगवश, भाग्य और समय के कारण निर्जीव से आ सकता है। अजीव जनन कभी भी नहीं देखा गया है। चमत्कार के अलावा, सभी सबूत इस बात की ओर इशारा करते हैं कि जीवन केवल सजीव से आ सकता है। परमेश्वर का अस्तित्व प्रारंभिक जीवन को स्पष्ट करता है।

निष्कर्ष – परमेश्वर जरूर होगा!

कोई बहाना नहीं जैसा कि वादा किया गया था

सृष्टि और हमारे विवेक के आधार पर एक अनंत, सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारी परम आवश्यकता है। विज्ञान और सही और गलत की हमारी अन्तर्निहित जानकारी रोमियों 1:20 में दिए गए बाइबिल के इस दावे को सत्यापित करती है कि परमेश्वर स्पष्ट है और इसलिए मनुष्य के पास कोई

बहाना नहीं है। क्या आप परमेश्वर के सामने यह बोलने की कल्पना मात्र भी कर सकते हैं कि आपको लगा था कि ब्रह्माण्ड की जटिल संरचना किसी कारण के बिना, अपने आप हवा में आयी है? यह कि जीवन संयोगवश उत्पन्न हुआ था और आपको नहीं पता था कि अपने विवेक की अवहेलना करना गलत है?

हम चमत्कारों को क्यों नहीं नकार सकते हैं

चूँकि इस बिंदु के लिए ठोस सबूत दर्शाते हैं कि यह आवश्यक है कि परमेश्वर होना चाहिए, इसलिए आप चमत्कारों से इंकार नहीं कर सकते हैं। चमत्कार एक घटना है जिसका प्रकृति में कोई विवरण नहीं होता और ना ही यह नियमित रूप से होती है। यहाँ तक कि नास्तिकों को भी यह विश्वास होगा कि यह चमत्कार वास्तव में हुआ था, जो यह दावा करते हैं कि जीवन शुरुआत में अचानक, संयोगवश, भाग्य और समय से निर्जीव से आया था। उनके पास अपने दावे का समर्थन करने के लिए इस तथ्य के अलावा कोई और साक्ष्य नहीं है कि जीवन का अस्तित्व है, जो इसे साबित करने के लिए कुछ नहीं करता है। सच्चाई यह है कि ईसाई धर्म और अनीश्वरवाद दोनों के लिए विश्वास और चमत्कारों की जरुरत होती है। ईसाईयों के पास एक चमत्कार करने वाला है और अनीश्वरवादी चमत्कार करने वाले के बिना चमत्कारों का दावा करते हैं। ईसाईयों के पास मृतोत्थान के साक्षी हैं जो इस गवाही के लिए अपनी जान देने के लिए तैयार थे कि जीवन परमेश्वर के हाथों निर्जीव से आया था, जब यीशु मरकर ज़िंदा हुए थे।

बाइबिल में सबसे बड़ा चमत्कार पहली आयत में होता है: *प्रारंभ में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया* (उत्पत्ति 1:1)। ब्रह्माण्ड और जीवन अपने आप अचानक निर्मित हुए थे, जिसका वैज्ञानिक साक्ष्य समर्थन करते हैं। यदि परमेश्वर वो कर सकता तो बाइबिल के हर एक चमत्कार पर भरोसा किया जा सकता है।

चूँकि साक्ष्य कहते हैं कि परमेश्वर होना चाहिए, इसलिए क्या आपको नहीं लगता कि चमत्कार—ऐसी चीजें जो प्रकृति में नहीं हो सकती हैं और आमतौर पर होती ही नहीं हैं—परमेश्वर के लिए मनुष्य का ध्यान आकर्षित करने का सबसे अच्छा तरीका होंगी।

बाइबिल यही कहती है जो परमेश्वर ने अपने संदेश और संदेशवाहकों को प्रमाणित करने के लिए किया था।

"हे इस्राएल के लोगों, इन शब्दों को सुनो: नासरी यीशु एक ऐसा पुरुष था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन शक्तिशाली कामों और आश्चर्य और चिन्हों से प्रकट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा करके दिखलाया था, जिसे आप खुद जानते हैं" (प्रेरितों के काम 2:22, जोर दिया गया)।

अब हमें ऐसे चमत्कार देखने को क्यों नहीं मिलते हैं? बाइबिल के ज्यादातर चमत्कारों को परमेश्वर के एक संदेश या संदेशवाहक की पुष्टि करने के लिए किया गया था। जब यीशु सूली पर थे तब उन्होंने कहा था, "*पूरा हुआ*" (यूहन्ना 19:30)। परमेश्वर का हर एक प्रकटीकरण बाइबिल में है। अब पुष्टि करने के लिए कुछ भी नया नहीं है क्योंकि परमेश्वर का काम पूरा हो गया है। समय के

बाहर, परमेश्वर उन सभी चीजों को देखता है जिन्हें वो अभी पूरा करना चाहता है। समय के अंदर, हम आस्था से परमेश्वर का विश्वास करते हैं कि जिसे भी उन्होंने पूरा बताया है वो उजागर होगा।

"यीशु, जोरास्टर, बुद्ध, सुकरात और मुहम्मद की तुलना करने पर, यदि हम बाद के काल्पनिक और खेदपूर्ण विवरणों को निकाल दें तो हमें पता चलता है कि प्रारंभिक विवरण केवल यीशु के चमत्कारों को बताते हैं।" एड्विन एम. यामूची, मियामी विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर एमेरिटस, क्रिश्चियनिटी टुडे में "(अ)तुलनीय मसीह पर ऐतिहासिक विवरण,", 22 अक्टूबर, 1971, पृष्ठ 7-11, www.irr.org/yamauchi.html (जोर दिया गया)

"लेकिन यदि हम परमेश्वर को स्वीकार करते हैं तो क्या हमें चमत्कारों को भी स्वीकार करना होगा? वास्तव में, इसके विरुद्ध आपके पास कोई बचाव नहीं है। यह अच्छा सौदा है।" सी.एस. लुईस, चमत्कार, पृष्ठ 109।

निष्कर्ष – परमेश्वर है; चमत्कार संभव हैं।

www.God-Evidence-Truth.com

क्या हम बाइबिल पर भरोसा कर सकते हैं?

क्या नव विधान सही है?

ज्यादातर बाइबिल के विद्वानों के अनुसार, नव विधान सही है। बेकर इनसाइक्लोपीडिया ऑफ अपोलोजेटिक्स, 2002, बेकर बुक्स: ग्रैंड रैपिड्स (एमआई), पृष्ठ 532- 533, में ब्रूस मेट्ज़गेर, एक अत्यधिक प्रसिद्ध विद्वान, को उद्धृत किया गया है, जिन्होंने आज हमारे पास मौजूद नव विधान को 99.5 प्रतिशत सटीक बताया है।

ग्रीक में लगभग 5,700 हस्तलिखित पांडुलिपियां मौजूद हैं, जो नवविधान की वास्तविक भाषा है। विभिन्न भाषाओं में कुल मिलाकर 25,000 से भी ज्यादा पूर्ण या आंशिक पांडुलिपियां हैं। ग्रंथों की विशाल संख्या के कारण, पुरानी पांडुलिपियों को ज्यादा महत्ता देते हुए, विद्वान एक की दूसरे से तुलना कर सकते हैं और पता लगा सकते हैं कि मूल पाठ ने क्या कहा है। पाठों में शब्दों के स्थान (जैसे, ईसा मसीह के बजाय मसीह ईसा), वर्तनी, व्यक्तिवाचक संज्ञा आदि की वजह से छोटी-छोटी असमानताएं होती हैं जिन्हें विद्वान रूप कहते हैं। ये त्रुटियां नहीं हैं, बल्कि केवल पाठ में विभिन्नताएं हैं। चूँकि 25,000 से भी ज्यादा पांडुलिपियां मौजूद हैं, इसलिए लगभग 400,000 रूप उपलब्ध हैं। यहाँ दो कृत्रिम आयतें हैं जो चार स्थानों पर अलग-अलग हैं, इसलिए इसके पांच रूप हैं:

ईसा मसीह हमारे पाप के लिए मरे और दोबारा ज़िंदा हुए थे।

मसीह ईसा आपके पापों के लिए मरे और दोबारा जीवित हुए थे।

वास्तविक पाठों में प्रति पंक्ति इस संख्या के आसपास कुछ भी नहीं है। यदि 1,000 पांडुलिपियों में से प्रत्येक में 100 वर्तनी अशुद्धियां होती तो यह 100,000 रूपों के बराबर होता है। इससे पता चलता है कि पांडुलिपियों में पाए गए लगभग 400,000 रूप क्यों ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं हैं। देखिये कि कई रूपों वाली किसी छोटी आयत में भी हम कैसे पता लगा सकते हैं कि आयत क्या

कहती है। यदि आपके पास एक ही आयत की 1,000 पांडुलिपियां होती तो क्या आपको लगता है कि आप समझ पाते कि यह क्या कह रही है? बाइबिल के विद्वानों के अनुसार, ऐसे नगण्य रूपों से अर्थ में कोई बदलाव नहीं होता और ये कुल में से 99 प्रतिशत हैं। केवल एक प्रतिशत रूप ऐसे हैं जो महत्वपूर्ण होते हैं, और ये ईसाई सिद्धांत को प्रभावित नहीं करते हैं। विडंबना यह है कि प्राचीन संसार में मनुष्य के लिए हज़ारों हस्तलिखित पांडुलिपियों को वितरित करने की परमेश्वर की योजना ने इसमें कोई भी संशोधन होने से बचा लिया, अन्यथा यदि मूल प्रति किसी एक इंसान के पास होती तो यह बदल सकती थी।

"हालाँकि नवविधान के दस्तावेज़ नहीं बचे हैं या उन्हें अब तक नहीं पाया गया है, लेकिन फिर भी हमारे पास मूल नवविधान दस्तावेज़ों की कई और सही प्रतिलिपियाँ मौजूद हैं–कुल मिलाकर प्राचीन साहित्य की दस से भी ज्यादा सर्वश्रेष्ठ प्रतियां। इसके अलावा, बची हुई हज़ारों पांडुलिपियों की प्रतिलिपियों की तुलना करके मूल प्रतियों का लगभग सर्वश्रेष्ठ पुनर्निर्माण किया जा सकता है। हमने दूसरी शताब्दी और पहली शताब्दी के मध्य के पाण्डुलिपि के टुकड़ों को खोजा है। जहाँ तक पाण्डुलिपि समर्थन की बात आती है प्राचीन संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं है जो नव विधान के समीप भी आया हो।" ट्यूरेक और गीस्लर, *आई डोंट हैव इनफ फेथ टू बी एन अथेइस्ट*, पृष्ठ 248।

"अनीश्वरवादी इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि हमारे नव विधान ग्रंथों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है, लेकिन वो साक्ष्य की जांच किये बिना इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। ईसाईयों के रूप में, हम जानते हैं कि हमारे पास सबसे विश्वसनीय और साक्ष्यांकित दस्तावेज़ हैं। यदि कुछ नहीं तो आप यह भरोसा कर सकते हैं कि हमारे पास आज वो सबकुछ है जो शुरुआत करने के लिए प्राचीन लोगों के पास था।" जासूस जिम वालेस, पूर्व नास्तिक, www.pleaseconvinceme.com

"सभी पांडुलिपियों के अलावा, पूर्व चर्च पिताओं द्वारा नव विधान ग्रंथों के 36,000 से भी ज्यादा उद्धरण मौजूद हैं। लगभग ग्यारह नवविधान आयतों को उद्धृत किया गया है, जो आभासी रूप से नवविधान के 100 प्रतिशत पुनर्निर्माण की अनुमति देते हैं। नॉर्मन गिस्लर और विलियम निक्स, *बाइबिल का सामान्य परिचय* (शिकागो: मूडी, 1986), 431।

कई आलोचक दावा करते हैं कि बाइबिल सटीक या सही नहीं हो सकती है क्योंकि इसे इंसानों ने लिखा था, और इंसान गलतियां करता है। लेकिन इंसान हमेशा सटीक और सच्ची पुस्तकें लिखते हैं। आप शब्दकोश या विश्वकोश देख सकते हैं। बाइबिल कहती है कि सभी ग्रंथ परमेश्वर से प्रेरित हैं—इसलिए जिस तरह आप कोई पत्र लिखने के लिए उपकरण के रूप में कलम का प्रयोग करते हैं, उसी तरह परमेश्वर अपने वचनों को अभिलेखित करने के लिए उपकरण के रूप में इंसानों का प्रयोग करता है।

संपूर्ण पवित्र ग्रंथ परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गए हैं। यह लोगों को सत्य की शिक्षा देने के लिए, उनको सुधारने के लिए, उन्हें उनकी बुराइयाँ बताने के लिए और धार्मिक जीवन के प्रशिक्षण के लिए उपयोगी हैं (तीमुथियुस 3:16)।

लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि आपको यह जान लेना चाहिए कि ग्रंथ की कोई भी भविष्यवाणी किसी नबी के निजी विचारों का परिणाम नहीं है, क्योंकि कोई मनुष्य जो कहना चाहता है, उसके अनुसार भविष्यवाणी नहीं होती। बल्कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से मनुष्य परमेश्वर की वाणी बोलते हैं (2 पतरस 1:20-

21)।

“नवविधान के वास्तविक निर्माण की तिथियों और सबसे पुराने साक्ष्य के बीच का अंतराल इतना छोटा है कि वास्तव में यह नगण्य हो जाता है और ग्रंथों के संबंध में किसी भी संदेह की नींव अब काफी हद तक समाप्त हो गयी है; नव विधान की पुस्तकों की प्रमाणिकता और सामान्य अखंडता को दृढ़ तरीके से स्थापित के रूप में माना जा सकता है।” सर फ्रेडरिक केनियन, ब्रिटिश संग्रहालय के निर्देशक, प्रमुख लाइब्रेरियन, प्राचीन पांडुलिपियों के विशेषज्ञ।

“केवल धार्मिक ग्रंथों को ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और साहित्यिक लेखों सहित सभी प्राचीन दस्तावेज़ों की जांच करने के लिए शाब्दिक आलोचना के विज्ञान का प्रयोग किया जाता है। यह आशावादी उम्मीदों और अनुमानों पर आधारित धर्मशास्त्रीय उद्योग नहीं है; यह एक भाषाई अभ्यास है जो स्थापित नियमों के एक समूह का पालन करता है। शाब्दिक आलोचना से सचेत आलोचक किसी भी कृति में सभावित गड़बड़ी की सीमा का पता लगा सकता है।" ग्रेग कॉकेल, 1990 से स्टैंड टू रीज़न रेडियो कार्यक्रम के होस्ट, लॉस एंजिल्स, सीए, www.str.org

निष्कर्ष – ज्यादातर बाइबिल संबंधी विद्वान मानते हैं कि हमारे पास संपूर्ण बाइबिल की असली प्रति है।

क्या नव विधान सही है?

पांच आकर्षक बिंदु जो बताते हैं कि नव विधान सही है।

1. ईश्वरीय दूतों की गवाही

कई लोग आज तक खोजी गयी लगभग 2,000 पूर्व विधान भविष्यवाणियों को परमेश्वर के उंगलियों का निशान मानते हैं। उनमें से 300 से भी ज्यादा ने यह भविष्यवाणी की थी कि एक मसीहा आएगा, और इन्हें यीशु के जन्म के 400 साल से भी पहले लिखा गया था। ये यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म से काफी मिलती हैं। निम्नलिखित भविष्यवाणियों को देखिये:

भविष्यवाणी पूर्ण	**भविष्यवाणी की गयी**	
एक कुँवारी से जन्मा मत्ती 1:18, 25	यशायाह	7:14
बेतलेहेम में जन्म मत्ती 2:1	मीका	5:2
वो एक दूत के बाद आएगा मत्ती 3:1-2	यशायाह	40:3
अपने लोग अस्वीकार करेंगे यूहन्ना 7:5; 7:48	यशायाह	53:3
करीबी दोस्त धोखा देगा	भजन संहिता	41:9

यूहन्ना 13:26-30

उसके हाथों में छेद किया जायेगा	जकर्याह 12:10	यूहन्ना 19:34
सूली पर चढ़ाया जायेगा	भजन संहिता 22:1, 11-18	लूका 23:33
वो कष्ट देने वालों के लिए प्रार्थना करेगा	यशायाह 53:12	लूका 23:34
उसके दोस्त, परिवार दूर खड़े होकर देखेंगे	भजन संहिता 38:11	लूका 23:49
कपड़े बांटे जायेंगे	भजन संहिता 22:18	यूहन्ना 19:23-24
पित्त और सिरका पिलाया जायेगा	भजन संहिता 69:21	मत्ती 27:34
परमेश्वर के लिए प्रतिबद्ध करेंगे	भजन संहिता 31:5	लूका 23:46
हड्डियां नहीं टूटेंगी	भजन संहिता 34:20	यूहन्ना 19:33
दिल फट जायेगा	भजन संहिता 22:14	यूहन्ना 19:34
पुनरुत्थान	भजन संहिता 16:10	प्रेरितों के काम 13:34-37

"पीटर स्टोनर ने एक व्यक्ति के केवल आठ भविष्यवाणियों को पूरा करने की गणितीय संभावना पर विचार किया और संभाव्यता के विज्ञान से संयोग को खारिज कर दिया। हमें पता चलता है कि आज तक जीवित किसी भी इंसान के लिए सभी आठों भविष्यवाणियों को पूरा करने की संभावना दस घात सत्तर में एक है। अर्थात, 100,000,000,000,000,000 में एक। स्टोनर इसे इस प्रकार से दर्शाते हैं कि मान लीजिये हम 100,000,000,000,000,000 सिल्वर डॉलर लेते हैं और टेक्सास पर बिछा देते हैं। ये राज्य को दो फीट गहराई में ढँक देंगे। अब किसी एक सिल्वर डॉलर पर निशान लगाइये और संपूर्ण राज्य में इस ढेर को अच्छे से हिला दीजिये। किसी आदमी की आँख पर पट्टी बांधिए और उसे कहिये कि वो जहाँ तक चाहे जा सकता है, लेकिन उसे केवल एक सिल्वर डॉलर उठाना होगा और कहना होगा कि यह सही वाला है। उसके सही चुनने की क्या संभावना होगी? उतनी ही जितनी कि इन आठ भविष्यवाणियों को लिखने वाले पैगम्बरों और किसी एक इंसान के लिए उन सभी के सच होने के लिए रही होगी। स्टोनर अड़तालीस (300 से ज्यादा में से) भविष्यवाणियों पर विचार करते हैं और रिपोर्ट देते हैं; 'हमें पता चला है कि किसी भी एक इंसान के सभी अड़तालीस भविष्यवाणियों को पूरा करने की संभावना 10 घात 157 में से एक होगी।' अर्थात एक के बाद 157 शून्य।" *साइंस स्पीक्स* में पीटर स्टोनर, *द न्यू एविडेंस दैट डिमांड्स अ वर्डिक्ट*, पृष्ठ 193, लेखक, वक्ता जोश मैकडोवेल,

क्या भविष्यवाणियां यीशु के जन्म से पहले लिखी गयी थीं?

यह बहुत महत्वपूर्ण सवाल है। पांडुलिपि तिथि निर्धारण के क्षेत्र में काम करने वाले विशेषज्ञ पूर्व-विधान पुस्तकों के लेखन की तिथि 1445 ईसा पूर्व से 425 ईसा पूर्व (ईसा पूर्व का अर्थ है *ईसा मसीह से पहले*) बताते हैं। विद्वान यीशु को सूली पर चढ़ाने की तिथि लगभग 33 ईसवी बताते हैं (एडी का अर्थ है एनो डोमिनी, यहोवा का वर्ष, और 33 ईसवी में, यीशु 32-33 वर्ष के थे)। तथ्य दर्शाते हैं कि सभी पूर्व विधान भविष्यवाणियों को यीशु के जन्म से हज़ारों वर्ष पहले लिखा गया था।

सबसे शुरुआती पांडुलिपि खोजों में से एक 100 ईसा पूर्व से पहले का पूरा 24-फीट लंबा यशायाह सूचीपत्र है। यह मृत सागर सूचीपत्रों का हिस्सा है और कोई भी प्रतिष्ठित विद्वान यह बता देगा कि साक्ष्य स्पष्ट करते हैं कि यह यीशु के जन्म से पहले मौजूद था, फिर भी उनके बारे में विस्तार से बताता है।

लेकिन उसे उन बुरे कामों के लिये बेधा जा रहा था, जो हमने किये थे। वह हमारे अपराधों के लिए कुचला जा रहा था। जो कर्ज़ हमें चुकाना था, यानी जो हमारा दण्ड था, उसे वह चुका रहा था। उसकी यातनाओं के बदले में हम क्षमा किये गये थे। लेकिन उसके इतना करने के बाद भी हम सब भेड़ों की तरह इधर-उधर भटक गये। हममें से हर एक अपनी-अपनी राह चला गया। यहोवा द्वारा हमें हमारे अपराधों से मुक्त कर दिये जाने के बाद और हमारे अपराध को अपने सेवक से जोड़ देने पर भी हमने ऐसा किया (यशायाह 53:5-6)।

नव विधान के लेखक और यीशु नव विधान के अंग्रेजी मानक संस्करण (इएसवी) में "यह लिखा हुआ है" (पूर्व विधान के ग्रंथों का संदर्भ देते समय) शब्दों का बहत्तर बार प्रयोग करते हैं। वास्तव में यीशु ने यशायाह की पुस्तक सहित, पूर्व विधान की चौबीस किताबों से उद्धरण लिए हैं या उनका जिक्र किया है। तथ्य स्पष्ट हैं कि पूर्व विधान की किताबों को यीशु के जन्म से पहले लिखा गया था।

यशायाह के अध्याय सात में, एक अन्य भविष्यवाणी कहती है, एक कुँवारी जन्म देगी और वो उसे इम्मानुएल कहा जायेगा, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ है।

लेकिन, मेरा स्वामी तुम्हें एक संकेत दिखायेगा: एक कुंवारी गर्भवती होगी और वह एक पुत्र को जन्म देगी, और वह इस पुत्र का नाम इम्मानुएल रखेगी (यशायाह 7:14)।

यशायाह के नौवें अध्याय में, बच्चे के बारे में अतिरिक्त जानकारी दी गयी है और उसकी पहचान बताई गयी है। वह एक कुंवारी की कोख से जन्म लेगा और उसे शक्तिशाली परमेश्वर और परमपिता कहा जायेगा। केवल यीशु ही इन भविष्यवाणियों के लिए सही लगते हैं।

क्योंकि हमें एक बच्चा हुआ है, हमें एक बेटा दिया गया है; और लोगों की अगुवाई का उत्तरदायित्व उसके कंधों पर होगा, और उसे अद्भुत, उपदेशक, शक्तिशाली परमेश्वर, परमपिता और शांति का राजकुमार कहा जायेगा

(यशायाह 9:6, जोर दिया गया)।"

"सेप्टुआगिंट और मृत सागर सूचीपत्र ईसाई धर्म के लिए एक बहुत शक्तिशाली साक्ष्य स्थापित करते हैं—यह कि निश्चित रूप से पूर्व विधान में मसीहा के आने के लिए की गयी भविष्यवाणियां यीशु के धरती पर आने से पहले की हैं। जब हमें पता चलता है कि यशायाह 53 और भजन संहिता 22 जैसे भविष्य-सूचक ग्रंथ ईसा मसीह से कम से कम 100, और शायद उससे भी कहीं ज्यादा साल पुराने रूप में लिखे गए थे तब पहली सदी ईसवी की साजिशों और भविष्यवाणी में हेरफेर जैसे कई सिद्धांत खारिज हो जाते हैं।" www.septuagint.net

"दुनिया हमें यह विश्वास दिला देती कि समय के साथ हमारे ग्रंथों को भ्रष्ट कर दिया गया है, लेकिन यहाँ दिए गए साक्ष्य स्पष्ट हैं। बेवकूफ मत बनिए। प्राचीन दस्तावेज़ों के किसी भी अन्य अध्ययन के बजाय शायद इस एक मुद्दे पर ज्यादा छात्रवृत्ति खर्च की गयी है। दुनिया जो सोचती है सोचने दीजिये; हम इस जानकारी पर भरोसा कर सकते हैं कि पूर्व विधान का इतिहास सही है और यह अद्भुत रूप से सटीक है।" जासूस जिम वालेस, www.pleaseconvinceme.com (जोर दिया गया)।

पैंतालीस से भी ज्यादा भाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में धाराप्रवाह बाइबिल के विद्वान, रॉबर्ट डिक विल्सन, ने जीवनभर पूर्व विधान का अध्ययन करने के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला: "मैं यह बता सकता हूँ कि बाइबिल के अपने 45 वर्षों के अध्ययन के परिणामस्वरूप पूर्व विधान में मेरा विश्वास पहले से भी कहीं ज्यादा दृढ़ हुआ है, हमारे पास इस्राएलियों के इतिहास का सच्चा ऐतिहासिक विवरण है।" encycl.opentopia.com/term/Robert_Dick_Wilson

हमारी पीढ़ी में भविष्यवाणी

जबकि हम इस विषय पर बात कर रहे हैं, इसलिए मैं ऐसी चार विशेष भविष्यवाणियों को प्रकाशित करना चाहता हूँ जिन्हें हज़ारों साल पहले बताया गया था। बाइबिल दर्शाता है कि पहली तीन, जो पूरी हो चुकी है, इस बात का संकेत हैं कि यीशु की धरती पर वापसी ज्यादा दूर नहीं है। चौथी भविष्यवाणी जहाँ यीशु अपनी वापसी की भविष्यवाणी करते हैं, उसका पूरा होना बाकी है।

1. यहूदियों का अपनी मातृभूमि में इकट्ठा होना (यहेजकेल 34:13)।
2. एक दिन में इज़राइल का पुनर्जन्म (यशायाह 66:8-9)। 70 ईसवी में यहूदियों के अपना देश हारने के लगभग दो हज़ार साल बाद, यह 1948 में हुआ था।
3. धरती के देशों ने इज़राइल के विरुद्ध गठबंधन किया (जकर्याह 12:2-3)।
4. जीवित और मृत का न्याय करने के लिए यीशु की भावी वापसी (मत्ती 24:29-3)। किसी को समय नहीं पता है (मत्ती 24:36-37)।

इन भविष्यवाणियों पर विचार करिये जो नकली ईसा मसीह और झूठे पैगम्बरों के बारे में चेतावनी के साथ हमारी आँखों के सामने पूरी हो रही हैं:

"हमें बताइये कि ये चीजें कब होंगी, और आपके आने और इस संसार के

समाप्त होने का क्या संकेत होगा?" और यीशु ने उन्हें जवाब दिया, "देखना कि कोई तुम्हें छलने न पाये। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि ऐसे बहुत से हैं जो मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे 'मैं मसीह हूँ' और वे बहुतों को छलेंगे। तुम युद्ध के बारे में या युद्धों की अफवाहें सुनोगे पर देखो तुम घबराना मत! क्योंकि ऐसा तो होगा ही लेकिन अभी अंत नहीं आया है। क्योंकि एक देश दूसरे के विरोध में खड़ा होगा, एक साम्राज्य दूसरे के विरोध में खड़ा होगा, अकाल पड़ेंगें और कई जगहों पर भूचाल आयेंगे (मत्ती 24:3-7)।

लोग स्वार्थी, लालची, अभिमानी, उद्दण्ड, परमेश्वर के निंदक, माता-पिता की अवहेलना करने वाले, निर्दयी, अपवित्र, प्रेम रहित, क्षमाहीन, निंदा करने वाले, असंयमी, बर्बर, जो कुछ अच्छा है उसके विरोधी, विश्वासघाती, अविवेकी, अहंकारी और परमेश्वर-प्रेमी होने की अपेक्षा सुखवादी हो जायेंगे (2 तीमुथियुस 3:2-4)।

निष्कर्ष – यीशु के जन्म से 400 या उससे भी ज्यादा साल पहले लिखी गयी 300 विशेष भविष्यवाणियां बताती हैं कि यीशु मसीहा हैं।

2. शर्मनाक गवाही

"शर्मिंदगी का सिद्धांत" इतिहासकारों द्वारा यह पता लगाने का एक तरीका है कि ग्रंथ के लेखक सच बता रहे हैं या नहीं। यह सिद्धांत कहता है कि यदि ग्रंथ लेखक या लेखकों के लिए शर्मिंदगी भरा है तो यह शायद सच है। क्योंकि लोग ऐसे प्रसंग नहीं बनाते हैं जो उन्हें बुरा दिखाते हैं। बल्कि, अच्छा दिखने के लिए वो ऐसे प्रसंगों को छोड़ सकते हैं।

सोचिये कि जो आदमी आपको झूठ बेचने की कोशिश कर रहा है वो क्या कर सकता है। मान लीजिये कोई व्यक्ति चाहता है कि आप उसके साथ अपनी जीवन भर की बचत निवेश करें। वो अपने प्रस्ताव और साहित्य के साथ आपके मन में कैसी तस्वीर बनाएगा? जैसे कोई समस्या नहीं है, है ना? सोचिये कि यदि बाइबिल के लेखक एक ऐसा परमेश्वर बनाना चाहते थे जिसपर आप विश्वास करें। तो क्या वो यही नहीं करते और यह दावा करते कि कोई समस्या नहीं थी? फिर भी बाइबिल यीशु और उनके शिष्यों के बारे में लज्जापूर्ण विवरणों से भरा पड़ा है। उनके अनुयायियों की भी वही समस्याएं थीं जो आज के समय में ईसाई झेल रहे हैं। विशेषज्ञों की राय है कि इस प्रकार के शर्मनाक प्रमाण यीशु के परमेश्वर होने का झूठा दावा करने में बिलकुल फायदेमंद नहीं होंगे। इसलिए, यीशु के बारे में निम्नलिखित शर्मनाक विवरण उसकी सच्ची सूचना हो सकते हैं जो वास्तव में हुआ था। यह इस विश्वास को समर्थित करता है कि शिष्यों ने बिलकुल सत्य कहा था। ध्यान रखें कि निम्नलिखित दावे किसी तथ्यों द्वारा समर्थित नहीं हैं। ये बस इतना बताते हैं कि कुछ लोगों, विशेष रूप से यीशु के आलोचकों ने, क्या दावा किया था।

शराबी कहा गया - यूहन्ना 10:19

पागल कहा गया - यूहन्ना 10:20

उसके परिवार को लगता है कि वह पागल है – मरकुस 3:21

उसके भाइयों ने उसका विश्वास नहीं किया - यूहन्ना 7:5

कहा गया कि उसपर भूत का साया है - मरकुस 3:22, यूहन्ना 7:20, 8:48

उसे धोखेबाज़ समझा गया - यूहन्ना 7:12

कई अनुयायियों ने उसे छोड़ दिया - यूहन्ना 6:66

पेड़ पर लटका हुआ कोई भी इंसान श्रापित होता है, इस विश्वास के बावजूद उसे लटकाया गया, जिससे यह यहूदियों के लिए स्वीकार करना कठिन हो गया – व्यवस्था विवरण 21:23

"लोग अपने बारे में शर्मनाक विवरण नहीं बनाते हैं।" डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक। शर्मनाक प्रमाण समर्थन ट्यूरेक और गिस्लर के *आई डोंट हैव एनफ़ फेथ टू बी एन अथेइस्ट* से लिया गया।

निष्कर्ष - यदि आप कोई ऐसा मनगढंत परमेश्वर बना रहे हैं जिसपर आप चाहते हैं कि सभी विश्वास करें तो आप शर्मनाक विवरणों को शामिल नहीं करना चाहेंगे, विशेष रूप से यीशु के बारे में, जब तक कि यह वास्तव में हुई घटना का सच्चा विवरण ना हो।

3. प्रारंभिक गवाही

यदि आप इराक और सद्दाम हुसैन के बारे में कोई ऐतिहासिक किताब पढ़ते और वहां अमेरिका के हमले या हुसैन की तानाशाही के पतन का कोई उल्लेख ना होता तो आपको क्या लगता कि किताब घटना से पहले लिखी गयी थी या बाद में? इसका सबसे तर्कसंगत उत्तर होगा कि इसे अमेरिका के हमले से पहले लिखा गया होगा, क्योंकि किताब में इसका कोई जिक्र नहीं था।

ऐसी दो स्थापित ऐतिहासिक घटनाएं हैं जिनपर आभासी रूप से सभी विद्वान अपनी सहमति जताते हैं: लगभग 33 ईसवी में यीशु को सूली पर चढ़ाने की घटना और 70 ईसवी में यहूदी मंदिर का नाश। 66-70 ईसवी में, जब रोमनों ने इजराइल पर हमला किया तब यहूदियों को अपना देश खोना पड़ा था, उन्होंने यहूदी मंदिर का नाश कर दिया और लाखों से भी ज्यादा यहूदियों को मार डाला गया या बंदी बना लिया गया। नव विधान के मत्ती 24:2 में यीशु की भविष्यवाणी को छोड़कर, कभी भी इस प्रलयकारी घटना का उल्लेख नहीं किया गया है। कई विद्वानों का मानना है कि यदि इस विशाल तबाही के लिए यीशु का पूर्वानुमान नव विधान के लिखे जाने से पहले सच हुआ होता तो उनके पूर्वानुमान के सत्य होने के कारण ईसाई धर्म का मामला ज्यादा मजबूत होता। चूँकि इसका कोई अभिलेख नहीं मिलता है, इसलिए काफी हद तक यह संभव है कि यदि पूरा नहीं तो कम से कम अधिकांश नव विधान 66-70 ईसवी में मंदिर की तबाही के पहले लिखा गया था। यह नव विधान के सभी लेखों को पुनरुत्थान के सैंतीस वर्ष के अंदर रखता है।

"यहाँ तक कि 'परमेश्वर की मौत' अभियान की शुरुआत करने के लिए प्रसिद्ध जॉन ए.टी. रॉबिंसन जैसे प्रमुख विद्वानों के बीच भी, प्रारंभिक नव विधान की तिथियों को लेकर स्वीकृति बढ़ी है। उन्होंने अपनी किताब *रि-डेटिंग द न्यू टेस्टामेंट* की तिथियों में किसी भी रूढ़िवादी विद्वान की तुलना में दस्तावेजों को पहले रखते हुए लिखा, और उन्होंने यह निष्कर्ष भी निकाला कि एक या दो सुसमाचारों को यीशु को सूली पर चढ़ाने के सात सालों में ही लिखा गया होगा। हाल में, उन्हें साक्षियों के जीवनकाल में शामिल किया गया है।" डॉ.

नॉर्मन गिस्लर, वक्ता, 60 से भी ज्यादा किताबों के लेखक या संपादक, *बेकर इनसाइक्लोपीडिया ऑफ अपोलोजेटिक्स।*

"मेरी राय में, नव विधान की हर किताब को पहली सदी के 40वें और 80वें दशक (50 और 70 ईसवी के बीच संभव) के बीच बपतिस्मा देने वाले यहूदी द्वारा लिखा गया था।" विलियम एफ, अलब्राइट एक अग्रणी बाइबिल पुरातत्वविद्, *क्रिश्चियनिटी टुडे # 7*।

"चूँकि नव विधान के दस्तावेज़ों को अन्य लेखकों द्वारा लगभग 100 ईसवी से उल्लेखित किया गया है, इसलिए उन्हें उससे पहले लिखा गया होना चाहिए।" ट्यूरेक और गिस्लर, *आई डोंट हैव इनफ फेथ टू बी एन अथेइस्ट*, पृष्ठ 249।

निष्कर्ष - ठोस सबूत बताते हैं कि यदि पूरे नहीं तो कम से कम अधिकांश नव विधान को 70 ईसवी से पहले, साक्षियों के जीवनकाल के दौरान, लिखा गया था।

4. साक्षी का बयान

संशयवादी कहीं से भी नव विधान की आलोचना करने का मौका नहीं छोड़ते हैं। कई लोग साक्षियों से भी ज्यादा सत्य जानने का दावा करके इतिहास को दोबारा लिखने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, दा विंची कोड नामक किताब यह कहने की कोशिश करती है कि यीशु ने कभी भी परमेश्वर होने का दावा नहीं किया, कि वह केवल एक मनुष्य थे, और वो शादीशुदा थे और उनके बच्चे थे, जो उससे बिलकुल अलग है जो नव विधान में दिया गया है। दा विंची कोड एक काल्पनिक कहानी है, लेकिन इसे खरीदने वाले 40 मिलियन लोगों को तथ्यों के बारे में कोई जानकारी नहीं है और वो इसे सच मानते हैं। शिष्यों ने अपने दावों के लिए अपने प्राण त्यागे थे। किसी कल की चीज के लिए या 2,000 साल पहले की बात के एकाधिक साक्षी आज भी मान्य हैं। साक्षी के दावों पर विश्वास करने का एक तरीका यह पता लगाना है कि वो उन अन्य क्षेत्रों में सच बोल रहे थे या नहीं, जिन्हें हम प्रमाणित कर सकते हैं। यदि हमें पता चलता है कि उन्होंने मनगढंत चीजें लिखी हैं तो हमें और आगे देखने की जरुरत नहीं होती है।

निम्नलिखित पढ़ें क्योंकि यह बाइबिल की सटीकता और सच्चाई को दर्शाता है।

तिबिरियुस कैसर के शासन के पन्द्रहवें साल में, जब यहूदिया का राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस था, और उस प्रदेश के चौथाई भाग के राजाओं में हेरोदेस गलील का, उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और त्रखोनीतिस का, तथा लिसानियास अबिलेने का अधीनस्थ शासक था, और हन्ना तथा कैफा महायाजक थे, तभी जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास जंगल में परमेश्वर का वचन पहुँचा (लूका 3:1-2)।

1. सही तिथि दी गयी है।
2. सभी लोगों को इतिहास से जाना जाता है।
3. सभी इसी समय पर ज़िंदा थे।

लूका ने लूका और प्रेरितों के काम पुस्तकें लिखी थीं। प्रेरितों के काम से,

चौरासी ऐतिहासिक विवरणों की पुष्टि की गई है। लूका भी प्रेरितों के काम में पैंतीस से अधिक चमत्कारों का विवरण देता है। नव विधान में तीस से ज्यादा लोगों के नाम दिए गए हैं जिनके धर्मनिरपेक्ष स्रोतों या पुरातत्व द्वारा उस समय के दौरान जीवित होने की पुष्टि की गयी है। *आई डोंट हैव इनफ फेथ टू बी अथेइस्ट* में गिस्लर और ट्यूरेक के अनुसार, यूहन्ना की किताब में उनसठ सत्यापित ऐतिहासिक विवरण मौजूद हैं।

"लूका प्रथम श्रेणी के इतिहासकार हैं। इस लेखक को सबसे महान इतिहासकारों के बीच रखना चाहिए।" सर विलियम रैमसे, पुरातत्वविद्, *द बियरिंग ऑफ रीसेंट डिस्कवरी ऑन द ट्रस्टवर्थिनेस ऑफ द न्यू टेस्टामेंट।*

यह जानते हुए कि शिष्यों को यीशु (अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति) ने शिक्षा दी थी और यह कि हमारा इस बिंदु तक सभी चीजों को प्रमाणित करने में समर्थ होना यह दर्शाता है कि शिष्यों ने सच कहा है, क्या उन्हें पुनरुत्थान सहित, चमत्कारों की उनकी प्रत्यक्षदर्शी सूचनाओं के साथ संदेह का लाभ दिया जाना चाहिए? इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिष्यों ने चालीस दिनों के दौरान कई बार पुनर्जीवित यीशु को देखा था। वे चाहते थे कि आप भी इसपर विश्वास करें, जो उनके सूक्ष्म तथ्य लेखन के बारे में बताता है। यहाँ कुछ ऐसी आयतें दी गयी हैं जहाँ वे साक्षी होने का दावा करते हैं।

और तुमने जीवन के रचयिता को मार डाला, लेकिन परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से फिर से जिला दिया। हम इसके साक्षी हैं (प्रेरितों के काम 3:15, जोर दिया गया)।

जिसने यह देखा था उसने गवाही दी; और उसकी गवाही सच है, वह जानता है कि वह सच कह रहा है ताकि तुम लोग विश्वास करो (यूहन्ना 19:35, जोर दिया गया)।

वह सृष्टि के प्रारम्भ से था, जिसे हमने सुना है, अपनी आँखों से देखा है, जिसकी हमने सराहना की है, और स्वयं अपने हाथों से छुआ है। हम उस वचन के विषय में बता रहे हैं, जो जीवन है। उसी जीवन का ज्ञान हमें कराया गया। हमने उसे देखा। हम उसके साक्षी हैं और अब हम तुम लोगों के लिए उसी अनन्त जीवन की उद्घोषणा कर रहे हैं जो पिता के साथ था और हमें जिसका बोध कराया गया था (1 यूहन्ना 1:1-2, जोर दिया गया)।

जब अपने प्रभु यीशु मसीह के समर्थ आगमन के विषय में हमने तुम्हें बताया था, तब हमने कुशलता से गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं लिया था क्योंकि हम तो उसकी महानता के स्वयं साक्षी हैं (2 पतरस 1:16, जोर दिया गया)।

आपराधिक जांचकर्ता अक्सर यह कहते हैं कि कभी-कभी आपराधिक दृश्यों पर मिलने वाली गवाहियां ऐसी प्रतीत हो सकती हैं जैसे गवाहों ने अलग-अलग अपराध देखे हों, लेकिन विवरण अक्सर अनुपूरक होते हैं, विरोधाभासी नहीं। जब वे मुख्य मुद्दे पर पहुँचते हैं तब सभी गवाहियों को आपस में मिला दिया जाता है: "हाँ, इस आदमी ने उस आदमी को मारा था।" यदि आप 9/11 को मैनहट्टन में थे, तो मुझे विश्वास है कि कई शुरूआती सूचनाएं विरोधाभासी प्रतीत हुई होंगी। कुछ लोगों ने इमारतों के टकराने वाले विमानों की संख्या अलग बतायी होगी, लेकिन अंत में, सभी यह कहेंगे कि विमान ट्विन टावर में लड़े थे

जिसके कारण इमारतें धराशायी हुई थी। कम महत्वपूर्ण विवरणों में छोटे-मोटे अंतर सामान्य हैं, जैसा कि निम्नलिखित ज्यूरी निदेशों से दर्शाया जाता है:

"कई गवाहों के विवरणों में छोटे-मोटे अंतर सामान्य हैं और ज्यूरी के निर्देश ज्यूरी में बैठे सदस्यों को इस तथ्य से अवगत रहने का निर्देश देते हैं। क्या गवाह का बयान दूसरे गवाहों के बयानों से अलग है? परस्पर विरोधी बयानों पर विचार करते समय, आपको इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि यह अंतर भौतिक तथ्य से संबंधित है या किसी नगण्य विवरण से।" आपराधिक स्वरूप ज्यूरी निर्देश, दसवें सर्किट 2005 एड के लिए अपील की अमेरिकी अदालत।

शिष्यों सहित, वहां एक से ज्यादा गवाह थे, जो इससे बहुत परिचित थे कि यीशु कैसे दिखते थे। अगली पांच आयतों में दूत पौलुस गवाहों को सूचीबद्ध करते हैं, जिन्हें आलोचक मानते हैं कि पुनरुत्थान के तीन से पांच वर्षों के अंदर लिखा गया होगा:

जो सर्वप्रथम बात मुझे प्राप्त हुई थी, उसे मैंने तुम तक पहुँचा दिया कि शास्त्रों के अनुसार: मसीह हमारे पापों के लिए मरा, और उसे दफना दिया गया, और शास्त्रों के अनुसार फिर तीसरे दिन उसे ज़िंदा कर दिया गया, और फिर वह पतरस के सामने प्रकट हुआ, और उसके बाद उसने बारहों प्रेरितों को दर्शन दिये। फिर वह पाँच सौ से भी अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, उनमें से बहुत सारे आज तक जीवित हैं, यद्यपि कुछ की मृत्यु भी हो चुकी है। इसके बाद वह याकूब के सामने प्रकट हुआ, और इसके बाद उसने सभी प्रेरितों को फिर दर्शन दिये। और आखिर में वह मेरे सामने भी प्रकट हुआ, जबकि मैं वक्त से पहले पैदा हुए बच्चे जैसा था (1 कुरिन्थियों 15:3-8)।

"यदि हम प्राचीन इतिहास में हुई किसी भी घटना को ईमानदारी से देख रहे हैं तो हमें प्राचीन लिखित अभिलेख और समर्थित पुरातत्व पर भरोसा करना होगा। हमें उनका मूल्यांकन करने की जरुरत होगी जैसा कि हम किसी भी अन्य गवाह के लिए करेंगे। बाइबिल संबंधी गवाहों का इन मानकों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। उन्होंने यीशु के जीवन के आसपास के समय में लिखा था, उनके बयान को पुरातत्व साक्ष्य बाहरी तौर पर समर्थित करते हैं, उनका भरोसेमंद ट्रैक रिकॉर्ड है (पुरातत्व द्वारा भी समर्थित हैं) और उनका कोई गुप्त उद्देश्य नहीं है। हालाँकि कई लोग यह तर्क देंगे कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमारे पास निष्पक्ष सत्य हो, हमें बाइबिल के अभिलेख के बाहर से यीशु के जीवन का लेखा-जोखा रखना होगा, लेकिन हमें यह याद रखने की जरुरत है कि बाइबिल अपने आपमें एक भरोसेमंद और विश्वसनीय साक्षी विवरण है।" जिम वालेस, अनसुलझे हत्या के जासूस, पूर्व नास्तिक, www.pleaseconvinceme.com

"हम इस तथ्य की व्याख्या कैसे करते हैं कि मसीहा के रूप में यीशु के साथ यह आंदोलन जंगल की आग की तरह फैला, भले ही यीशु को सूली पर चढ़ा दिया गया था? इसका जवाब होना चाहिए, और केवल यही जवाब हो भी सकता है, क्योंकि वह मृतकों में से ज़िंदा किया गया था।" एन.टी. राइट, एनटी अध्ययन के प्रोफेसर, ऑक्सफोर्ड, वीडियो वृत्तचित्र, *द सर्च कंटीन्यूज़*, www.johnankerburg.org

"क्या ये लोग (यीशु और उनके शिष्य), जिन्होंने समाज की नैतिक संरचना बदलने में मदद की थी, परम झूठे या पागल थे? पुनरुत्थान के तथ्य की तुलना में इन विकल्पों पर विश्वास करना कठिन है, और उनका समर्थन करने के लिए कोई सबूत नहीं है।" पॉल लिटिल, *नो व्हाई यू बिलीव*, व्हीटन, आईएल, स्क्रिप्चर

प्रेस।

सत्य, लेकिन हमेशा परमेश्वर द्वारा स्वीकृत नहीं

पूरी बाइबिल में गवाहों के द्वारा एक समान विवरण बताया गया है (शर्मनाक विवरणों सहित)। बताये गए कई विवरणों को अक्सर परमेश्वर के खिलाफ प्रयोग किया जाता है जैसे मानो वो उन्हें स्वीकृत थे। चूँकि हमें पता है कि प्रेम संभव होने के लिए मुक्त इच्छा होना जरूरी होता है, इसलिए मैं आपसे एक प्रश्न करता हूँ। यदि परमेश्वर है तो क्या वो आज के समय में होने वाली सभी अनैतिकता, व्यभिचार, मानव यौन दास के प्रचलन, बाल शोषण, दुष्टता और बुराई को स्वीकार करता है? मुझे लगता है, परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए विवेक के आधार पर जो कहता है कि ये चीजें गलत हैं, हमारे पास इसका 100 प्रतिशत साक्ष्य है कि उसे यह स्वीकार नहीं है। लेकिन यदि बाइबिल आज लिखा गया होता और चीजों को सही तरीके से बताया जाता तो हमें ग्रन्थ में ऐसी ही समान अनैतिक गतिविधियां देखने को मिलती। इसका यह मतलब नहीं होगा कि परमेश्वर इसे स्वीकार करता है। यह केवल इंसानों के रूप में हमारे अनैतिक चरित्र को दर्शाता है और इसका सटीक कारण बताता है कि बाइबिल क्यों कहती है कि हमें उद्धारक की जरुरत है। पूर्व विधान की दासता, हत्या और अन्य अनैतिक कार्यों का विवरण, इसके चालीस अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखा गया, केवल एक लिखित अभिलेख है। इन 1,500 वर्षों के दौरान यही हुआ था जिसमें वे चीजें लिखी गयी थीं जो अब बाइबिल का निर्माण करती हैं। (टिप्पणी: संपूर्ण नव विधान उस समयावधि के 100 वर्षों से भी कम समय में लिखा गया था।) इन विवरणों का समावेश लेखों की सत्यता का समर्थन करता है।

मुझे पिछला सप्ताह याद नहीं है

कुछ लोग सोचते हैं कि पुनरुत्थान देखने के वर्षों बाद यह घटना शिष्यों को याद नहीं होगी। लेकिन 9/11 वाले दिन आप कहाँ थे और क्या कर रहे थे? आपको याद है, है ना? ऐसा इसलिए क्योंकि 9/11 बहुत प्रभावशाली घटना थी। क्या आपको लगता है कि जो लोग इसमें सीधे शामिल थे वो कभी भी इसे भूल पाएंगे? हमें भयानक घटनाएं बहुत बारीकी से याद रहती हैं, भले ही आप इसमें सीधे ना शामिल हों। लेकिन यदि मैं आपसे अभी यह पूछूं कि एक साल पहले आज ही दिन इस समय पर आप क्या कर रहे थे तो शायद आपमें से ज्यादातर लोगों को इसके बारे कुछ याद नहीं होगा जब तक कि इससे कोई विशेष चीज ना जुड़ी हो।

तो, मान लीजिये आप सीधे शामिल थे और तीन वर्षों तक यीशु के शिष्य रहे थे। अब उन्हें सूली पर चढ़ाया जा रहा है और अभी भी आपको वे चीजें सही से समझ नहीं आती जो उन्होंने आपसे कहा था। आपको क्या लगता है कि आप भावुक होंगे, दुखी होंगे, परेशान होंगे और भयभीत होंगे कि शायद इसके बाद रोमन सैनिक या यहूदी अधिकारी आपको लेने आने वाले हैं? बाइबिल शिष्यों को ऐसे ही दिखाती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, यह आपके दिमाग में किसी स्मृति का प्रभाव डालने के लिए सबसे सही परिवेश है। वास्तव में, उस समय यीशु के शिष्य ऊपर के कमरे में छिपे हुए थे जहाँ वो पहले यीशु से मिले थे। क्या होगा अगर, आपके दुःख की स्थिति में ही, तीन दिन बाद यीशु आपके सामने ज़िंदा आकर खड़े हो जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कि उन्होंने भविष्यवाणी की थी? क्या यह आपको प्रभावित करेगा? क्या आप इस तथ्य के बारे में सोचकर बेहद

खुश होंगे कि वो मरने के बाद अब दोबारा ज़िंदा हो गए हैं? क्या अब आप अचानक उन्हें अलग नज़र से देखना शुरू कर देंगे? क्या आपको यह घटना कुछ समय के लिए याद रहेगी? इसके अलावा, यीशु ने कहा था कि आवश्यकता पड़ने पर परमात्मा शिष्यों की स्मृति में सबकुछ वापस ले आएंगे।

लेकिन सहायक, अर्थात पवित्र आत्मा, जिसे परमपिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सब कुछ बतायेगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे तुम्हें याद दिलायेगा (यूहन्ना 14:26, जोर दिया गया)।

"भावनात्मक रूप से तटस्थ घटनाएं आमतौर पर लम्बे समय के लिए आपके मन में छाप नहीं छोड़ती हैं, वहीं दूसरी ओर, भावनात्मक रूप से उत्तेजक घटनाएं, जैसे 11 सितंबर, एक ही अनुभव के बाद अच्छी तरह से याद रहती हैं क्योंकि ये प्रमस्तिष्कखंड को सक्रिय कर देती हैं।" सी. मैकइंटायर, पोस्टडॉक्टरल शोधकर्ता, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, www.livescience.com

निष्कर्ष - आमतौर पर जीवन की प्रभावशाली घटनाएं हमें बहुत बारीकी से याद रहती हैं, विशेष रूप से जिनमें हम शामिल होते हैं। शिष्य भूल नहीं सकते थे।

5. क्या आप यह जानते हुए किसी झूठ के लिए अपनी जान देंगे कि यह झूठ है?

मुझे लगता है हम सभी यह मानेंगे कि यदि शिष्यों द्वारा नव विधान में प्रस्तुत किये गए संदेश झूठ थे तो उन्हें यह पता था, क्योंकि उन्होंने ही इसे लिखा था। हालाँकि नौजवान आतंकवादी किसी ऐसी चीज के लिए अपनी जान दे सकते हैं जो उन्हें सच लगता है, लेकिन लोग ऐसी किसी चीज के लिए अपनी जान नहीं देते हैं जिसे वो जानते हैं कि निश्चित रूप से झूठ है। शिष्यों ने यीशु के पुनर्जन्म का साक्षी होने का दावा किया था। यदि वो एक शब्द भी नहीं लिखते तो भी अपने जीवन और अपनी मृत्यु के साथ उन्होंने जो भी बयान दिए थे वो बहुत कुछ कहते हैं।

एक साथ मिलकर उन्होंने सामान्य जीवन से उत्पीड़न, अत्याचार और आखिरकार बारह में से ग्याहर की क्रूर हत्या तक का जीवन तय किया। इसके अलावा, दूत पौलुस, जिन्होंने नव विधान लिखा था, उन्हें बहुत अधिक सहना पड़ा और आखिरकार उनका सिर कलम कर दिया गया क्योंकि उन्होंने मसीह को अस्वीकार नहीं किया। यह सबकुछ किसी सांसारिक लाभ के लिए नहीं था, बल्कि एक जगह से दूसरी जगह जाते हुए उन्होंने केवल उस सत्य के बारे में बताया जो उन्होंने देखा था।

क्या आप किसी सांसारिक लाभ की अपेक्षा किये बिना, अपने ग्यारह दोस्तों को एक मनगढंत झूठ बनाकर, दुनिया के सामने इस झूठ को प्रस्तुत करने के लिए अपना व्यवसाय, धार्मिक मान्यताएं, दोस्तों और परिवार को छोड़ने के लिए मना सकते हैं? क्या होगा अगर आप उन्हें उत्पीड़न, अत्याचार और क्रूर हत्या का प्रतिफल दें? सही दिमाग वाला कोई भी इंसान ऐसा करने के लिए राज़ी नहीं होगा। लेकिन यदि कोई यह दावा करता है कि शिष्यों ने पुनर्जन्म के बारे में मनगढंत कहानी कही है तो उन्हें यही याद रखने की जरुरत है।

शिष्यों के पास नया धर्म बनाने का कोई कारण नहीं था। यहूदियों के रूप में, उन्हें पहले ही ऐसा लगता था कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। यदि यहूदी धर्म सच था, जैसा कि उन्हें हमेशा से सिखाया गया था, तो अपने विश्वास में इस बदलाव के लिए उनकी निंदा की जाती। एकमात्र वास्तविक विकल्प यह है

कि शिष्य सच कह रहे थे और यह इतना महत्वपूर्ण था कि उन्होंने इसे अस्वीकार करने से इनकार कर दिया।

ज्यूरी के निर्देशों में यह प्रश्न शामिल होता है: "क्या साक्षी के पास सच ना बोलने का कोई विशेष कारण था?" विडंबना यह है कि शिष्यों के मामले में इसका उत्तर हाँ है, जैसा कि हमें अभी पता चला है। वे पुनरुत्थान के बारे में झूठ बोलकर और इसे अस्वीकार करके बेहतर रहते। कौन सा विकल्प अधिक समझ में आता है? या तो वे अपने द्वारा बनाए गए झूठ के लिए मरे, या उन्होंने जो कुछ भी देखा था उसके सत्य को नकारने के कारण उनकी मौत हुई।

निम्नलिखित प्रत्येक द्वारा भुगते गए हर एक मूल्य को बताता है। प्रत्येक दूत की मौत का साक्ष्य अलग-अलग है। कुछ के बारे में बाइबिल में बताया गया है। कुछ के बारे में प्रारंभिक चर्च पिताओं और अन्य ऐतिहासिक लेखों से पता चलता है।

66 ईसवी में पतरस को रोम में सूली पर चढ़ा दिया गया था।

74 ईसवी में अन्द्रियास को सूली पर चढ़ा दिया गया था।

जब्दी के पुत्र, याकूब, का तलवार से सिर कलम कर दिया गया था (प्रेरितों के काम 12:1-9)।

96 ईसवी में यूहन्ना को पतमोस द्वीप भेज दिया गया था (प्रकाशित वाक्य 1-9)।

52 ईसवी में फिलिप्पियों को हायरपोलिस, फ्राजिया में सूली पर चढ़ाया गया था।

52 ईसवी में बर्थोलोमेव को पीटकर, सूली पर चढ़ाया गया था और सिर कलम किया गया था।

52 ईसवी में थोमा को पूर्वी इंडीस में भाला घोंप दिया गया था।

60 ईसवी में मत्ती को पत्थर मारा गया था और तलवार से काट दिया गया था।

60 ईसवी में हलफै के पुत्र, याकूब, को पीटकर मार डाला गया था।

72 ईसवी में थडियास को तीरों से मार गया था।

74 ईसवी में साइमन को पर्शिया में सूली पर चढ़ा दिया गया था।

60 ईसवी में पौलुस का रोम में सिर कलम कर दिया गया था।

फोक्से की शहीदों की किताब, www.ccel.org/f/foxe/martyrs/fox101.htm

"लोग ऐसे झूठ के लिए हमेशा मरते रहते हैं जिसे वो सच मानते हैं लेकिन कोई भी ऐसे झूठ के लिए नहीं मरता जिसे वो जानते हैं कि वो झूठ है।" डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक www.Crossexamined.org

"बाइबिल संबंधी अभिलेख की शक्ति यह है कि बाइबिल के गवाहों का अपनी कहानी के लिए कोई सकारात्मक मकसद नहीं था, सिवाय इस तथ्य के कि यह सच था। उन्हें कोई धन नहीं मिला, कोई सुखी जीवन नहीं मिला, और दर्दरहित मौत का कोई आश्वासन नहीं मिला।

सत्य के अलावा किसी भी सकारात्मक मकसद के बिना गवाही देने वाला गवाह दुनिया का सबसे अच्छा गवाह होता है। जब आप उन्हें अपने बयान के लिए कष्ट सहते हुए देखते हैं तो आप इस बात के लिए आश्वस्त हो सकते हैं कि आप सच सुन रहे हैं।" जिम वालेस, अनसुलझे हत्या के जासूस, एक पूर्व नास्तिक, www.pleaseconvinceme.com

"कोई भी ऐसी चीज के लिए क्यों मरेगा जिसे वो जानता है कि झूठ है? कोई व्यक्ति धोखे में हो सकता है और गलती से झूठ के लिए मर सकता है। लेकिन दूत यीशु के पुनरुत्थान के बारे में तथ्यों को जानने की स्थिति में थे, और फिर भी उन्होंने अपनी जान दी।" इतिहास के प्रोफेसर लिन गार्डनर, *क्रिश्चियनिटी स्टेंड्स टू*, कॉलेज प्रेस, 1994।

निष्कर्ष – लोग ऐसी किसी झूठ के लिए अपनी जान नहीं देते जिसे वो निश्चित रूप से जानते हैं कि वो झूठ है। शिष्यों ने यीशु के पुनरुत्थान के बारे में सच कहा था।

नव विधान का क्या?

निम्नलिखित आंकड़ों के आधार पर, यह स्पष्ट है कि यीशु और नव विधान के लेखक यह मानते थे कि पूर्व विधान सही था।

1. रोजर निकोल का कहना है कि नव विधान में पूर्व विधान के उद्धरणों और संदर्भों की संख्या 4,105 से भी अधिक हो सकती है। *दी एक्सपोसिटर्स बाइबिल कमेंटरी*, 1979, खंड I, पृष्ठ 617

2. यीशु ने चौबीस अलग-अलग पूर्व विधान की किताबों से संदर्भ लिया है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि पूर्व विधान की सबसे महत्वपूर्ण घटनाएं सच हैं। यीशु द्वारा पुष्टि की गयी घटनाओं में निम्नलिखित शामिल हैं: सृष्टि (मरकुस 13:19), नूह और बाढ़ (मत्ती 24:39), आदम और हव्वा (मत्ती 19:4-5), सदोम और अमोरा (लूका 10:12), मूसा और जलती हुई झाड़ी (लूका 20:37), और योना और बड़ी मछली (मत्ती 12:40)। मत्ती 23 में, किताब के अंत के रूप में पहले और अंतिम नबियों का प्रयोग करते हुए, यीशु यह कहकर पूरे पूर्व विधान की प्रमाणिकता की पुष्टि करते हैं, "हाबिल के खून से लेकर जकर्याह तक।" यहूदी नव विधान प्रकाशन, यरूशलेम, 1989। home.comcast.net/~StudyTheBible/InfoJewish.rtf

उन अन्य सुसमाचारों का क्या जिनके बारे में हम सुनते हैं?

कोई भी जासूस आपको यह बता देगा कि सबसे भरोसेमंद बयान वो होता है जिसे गवाहों द्वारा वास्तविक घटना के सबसे निकटतम समय में लिखा गया है या वो गवाहों से सीधे जुड़े होते हैं। गैरी हैबरमास जैसे बाइबिल के विद्वान इस बात की पुष्टि करते हैं कि नव विधान के लेखों में हमारे पास बिलकुल यही है। मैंने डॉ. हैबरमास का कथन सुना है, "हम ऐसे लोगों के लेखों पर क्यों जाना चाहते हैं जिन्हें घटना के बहुत बाद में (दूसरी सदी या आगे) लिखा गया है और जो इसके साक्षी भी नहीं थे?" गैरी थोमा का सुसमाचार, यहूदा का सुसमाचार, मरियम का सुसमाचार और दूसरी सदी या उसके बाद लिखी गयी अन्य किताबों के बारे में बात करते हैं, जिन्हें उनके द्वारा लिखा गया है जो संभवतः साक्षी नहीं थे।

एक क्षण के लिए यहूदी नरसंहार या होलोकॉस्ट के बारे में सोचिये। ज्यादातर तर्कशील लोगों का मानना है कि यह हुआ था और ऐतिहासिक रूप से इसके काफी सबूत भी हैं। फिर भी जैसे-जैसे समय बीतता है और आखिरी साक्षी मरते हैं ज्यादा से ज्यादा लोग यह दावा करते हैं ऐसा कुछ कभी हुआ ही नहीं। ऐसे लोगों को संशोधनवादी कहा जाता है और इन्हें सम्पूर्ण मानव जाति के दौरान

देखा जा सकता है, जो अपने उद्देश्य का समर्थन करने के लिए इतिहास की सच्चाई को फिर से लिखने का प्रयास करते हैं। जो लोग बाइबिल के लेखों को बदलने की कोशिश कर रहे हैं वो परमेश्वर के दूत पौलुस के समय भी सक्रिय थे, जैसा कि गलातियों में दर्शाया गया है, जहाँ उन्होंने झूठे शिक्षकों की गलतियों की निंदा की है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि बाइबिल केवल एक स्रोत नहीं है। यह चालीस अलग-अलग लेखकों के लेखन का संग्रह है, जिनमें से आठ ने नव विधान लिखा था। यीशु के समय से लेकर अब तक, लोग बाइबिल को बदलने या समाप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, फिर भी यह अपनी जगह पर बना हुआ है। आज दुनिया भर में बाइबिल की अरबों प्रतियां मौजूद हैं, जिसके कारण प्रमुख संदेश में कोई भी अज्ञात बदलाव करना असंभव है। यदि आपने अपनी प्रति में कोई संशोधन कर दिया है और इसे दुनिया के किसी अन्य व्यक्ति को दिखाते हैं तो वे इसकी अपनी प्रति से तुलना करके बता सकते हैं कि इसमें संशोधन किया गया है। तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि हमारे पास बाइबिल में चश्मदीद गवाहों और उनके सहयोगियों के शुरुआती लेखन हैं। इसके अलावा, यीशु कई बार झूठे नबियों और झूठे मसीहा की चेतावनी देते हैं जो परमेश्वर के वचन को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं और झूठ का प्रचार करते हैं।

"झूठे भविष्यवक्ताओं से बचो! वे तुम्हारे पास सीधे-सादे भेड़ों के रूप में आते हैं लेकिन भीतर से वे खूँखार भेड़िये होते हैं" (मत्ती 7:15, जोर दिया गया)।

"क्योंकि कपटी मसीह और कपटी नबी उभरकर आएंगे और ऐसे आश्चर्यजनक संकेत और अद्भुत काम दिखायेंगे कि वह चुने हुओं को भी चकमा दे दें। लेकिन आप सावधान रहिये; मैंने पहले ही आपको ये चीजें बता दी हैं" (मत्ती 24:24, जोर दिया गया)।

क्या पुरातत्व बाइबिल का समर्थन करता है?

बाइबिल में ऐसे हजारों ऐतिहासिक तथ्य हैं जिनकी पुरातत्व द्वारा पुष्टि की गयी है।

"यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि किसी भी पुरातात्विक खोज ने कभी भी बाइबिल के संदर्भ को अमान्य नहीं बताया है। करोड़ों पुरातात्विक निष्कर्ष निकाले गए हैं जो स्पष्ट रूपरेखा या सटीक विस्तार से बाइबिल के ऐतिहासिक बयानों की पुष्टि करते हैं। और, इसी कारण से, बाइबिल के विवरण का उचित मूल्यांकन करने की वजह से अक्सर अद्भुत खोजें की गयी हैं।" डॉ. नेल्सन ग्लूक, *रिवर्स इन द डेजर्ट*

"मुझे पता है कि पुरातत्व में ऐसी कोई खोज नहीं की गयी है जो ग्रंथों के विरोध में किसी चीज की पुष्टि करती है। बाइबिल आज तक के इतिहास में दुनिया की सबसे सटीक ऐतिहासिक पाठ्यपुस्तक है।" डॉ. क्लिफोर्ड विल्सन, ऑस्ट्रेलियाई पुरातत्व संस्थान के पूर्व निदेशक, सृष्टि शोध संस्थान द्वारा रेडियो साक्षात्कार, आईसीआर रेडियो ट्रांस्क्रिप्ट नंबर 0279-1004।

"बाइबिल से पुरातत्व की तुलना करते समय यह याद रखना जरूरी है कि मनुष्य को ज्ञात सभी दस्तावेज़ों में से, बाइबिल अपने आप में सबसे उच्च क्षमता वाला पुरातात्विक दस्तावेज़ है, केवल हिब्रू-ग्रीक शास्त्रों ने पूर्वानुमान और

उनकी पूर्णता के स्वरुप से अपनी सटीकता और दैवीय अधिकार को प्रमाणित किया है जो किसी भी मनुष्य की क्षमता से बाहर है और केवल परमेश्वर के लिए संभव है।" आर्चर, *द एनसाइक्लोपीडिया ऑफ बाइबल डिफिकल्टीज़।*

"पुरातत्व ने बाइबिल के लेखकों को उन सैकड़ों अन्य विवरणों के बारे में सही साबित किया है जिनपर कभी सवाल उठाये गए थे, जैसे कि लिसानियास का अस्तित्व (लूका 3: 1), "मार्ग" नामक अदालत का अस्तित्व (या जिसे यूहन्ना 19:13 में "गब्बता" के रूप में बताया गया है), पिलातुस का अस्तित्व, रोमन क्रूस का विवरण, इकुनियुम शहर का अस्तित्व (प्रेरितों के काम 14: 6), सिरगियुस पौलुस नामक राज्यपाल का अस्तित्व (प्रेरितों के काम 13), और गल्लियो नामक व्यक्ति का अस्तित्व (प्रेरितों के काम 18), आदि! "जिम वालेस, हमारे परिचित जासूस, www.pleaseconninceme.com

"इसमें कोई संदेह नहीं है कि पुरातत्व ने पूर्व विधान परंपरा की महत्वपूर्ण ऐतिहासिकता की पुष्टि की है।" डॉ. विलियम एफ. अलब्राइट, *पुरातत्व और इजरायल के धर्म।*

क्या कोई भी गैर-ईसाई लेख बाइबिल का समर्थन करते हैं?

ज्यादातर लोगों को गैर-ईसाई लेखों के बारे में और इसके बारे कोई भी जानकारी नहीं है कि वे कितनी दृढ़ता से नव विधान के प्रमाण का समर्थन करते हैं। बाइबिल के विद्वान गैरी हैबरमास के अनुसार, ऐसे सत्रह धर्मनिरपेक्ष लेखन हैं जो नव विधान की घटनाओं की विश्वसनीयता के रूप में प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें पुनरुत्थान के 150 वर्षों के अंदर लिखा गया है। यहाँ तीन दिए गए हैं:

"इस समय के दौरान एक बुद्धिमान व्यक्ति था जिसे यीशु कहा जाता था। पिलातुस ने उसे मौत की सज़ा दी थी। और जो लोग उसके शिष्य बन गए थे, उन्होंने अपने शिष्यत्व को नहीं छोड़ा। उन्होंने बताया कि उनके सूली पर चढ़ने के तीन दिन बाद उन्होंने उन्हें दर्शन दिए थे और वह जीवित थे; इसके अनुसार, शायद वो वही मसीहा थे, जिनके विषय में भविष्यवक्ताओं ने बताया था।" जोसेफस (37 - 100 ईसवी) पहली सदी के सबसे बड़े यहूदी इतिहासकार, *यहूदियों की प्राचीनता,* xviii अध्याय 3, उपविषय 3, अरबी पाठ।

"ईसाईयों को रोशनी से पहले एक निश्चित दिन मिलने की आदत थी, जहाँ वे परमेश्वर के रूप में मसीह का गुणगान करते थे, और कोई भी बुराई का काम ना करने का, कभी भी सच्चाई से इंकार ना करने की दृढ़ शपथ लेते थे।" प्लिनी (छोटा) 112 ईसवी, *पत्र,* X.96, एक पत्र जो उन्होंने सम्राट ट्राजन को यह पूछने के लिए लिखा था कि ईसाईयों को उनके विश्वास के लिए कैसे दंड दिया जाये।

"इसलिए अफवाह को दबाने के लिए, उसे झूठे आरोप में फंसाया गया, और सबसे भयानक यातनाओं के साथ दंडित किया गया, उन लोगों को आमतौर पर ईसाई कहा जाता था, जिनकी दुष्टता के लिए उनसे नफरत की जाती थी। मसीह, ईसाई नाम के संस्थापक को, तिबिरियुस शासनकाल में यहूदिया के प्रतिनिधि, पुन्तियुस पिलातुस द्वारा मृत्युदंड दिया गया था: लेकिन थोड़े समय के लिए दबाया गया दुर्भाग्यपूर्ण अंधविश्वास दोबारा उभरकर सामने आया, ना केवल यहूदा में, जहाँ इस हानि की शुरुआत हुई थी, बल्कि सम्पूर्ण रोम में भी।" टैसिटस (56-120 ईसवी), रोमन इतिहासकार, *एनल्स* XV.44, नीरो का ईसाइयों पर दोष लगाकर रोम को जलाने के आरोप से बचने के प्रयास के बारे में लिखा गया।

जासूस जिम वालेस की वेबसाइट से इन लेखनों का निम्नलिखित संकलन इन सत्रह धर्मनिरपेक्ष स्रोतों से लिए गए तथ्यों की एक सूची है। मैंने संकलनों को संख्यात्मक रूप से विभाजित किया है, ताकि इसे पढ़ना आसान हो जाए। इसे पढ़ते हुए, आपको यह ध्यान रखना होगा कि ये स्रोत दूर थे। इसलिए, वे नहीं जानते थे कि वास्तव में क्या हो रहा था। इसलिए, उदाहरण के लिए, वे चमत्कार के बजाय जादू शब्द का प्रयोग करते हैं। मुख्य बिंदु यह है कि ये लेख नव विधान में बताए गए कई विशिष्ट विवरणों से मेल खाते हैं। यह इस बात का अतिरिक्त प्रमाण है कि नव विधान में दिए गए प्रमाण उन चीजों की सच्ची सूचना हैं जो वास्तव में हुआ था।

1) यीशु का जन्म फिलिप्पी में हुआ था।

2) माना जाता है कि उनका जन्म एक कुँवारी से हुआ था और उनका एक सांसारिक पिता था जो बढ़ई था।

3) वह एक शिक्षक था जिसने सिखाया कि पश्चाताप और विश्वास से, सभी अनुयायी भाई और बहन बन जाएंगे।

4) उन्होंने यहूदियों को अपने मतों से दूर किया।

5) वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था जिसने परमेश्वर और मसीहा होने का दावा किया था।

6) उनके पास असामान्य जादुई शक्तियां थीं और उन्होंने कई चमत्कार किये थे।

7) उन्होंने अपंग को ठीक किया था।

8) उन्होंने भविष्य की सटीक भविष्यवाणी की थी।

9) अपनी कही गयी चीजों के लिए यहूदियों ने उन्हें सताया था और यहूदा इस्करियोतो ने उन्हें धोखा दिया था।

10) उन्हें छड़ से पीटा गया था, जबरदस्ती सिरका पिलाया गया था और काँटों का ताज पहनाया गया था और फसह पर्व के दिन सूली पर चढ़ाया गया था।

11) तिबिरियुस के समय के दौरान, पुन्तियुस पिलातुस के निर्देश पर उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था।

12) उन्हें सूली पर चढ़ाने वाले दिन, आसमान काला हो गया था और भूकंप आया था। इसके बाद, उन्हें कब्र में दफना दिया गया था और बाद में कब्र खाली मिला था।

13) कब्र से दोबारा ज़िंदा होकर वो अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुए और उन्होंने उन्हें अपने घाव दिखाए।

14) इसके बाद इन शिष्यों ने दूसरों को बताया कि यीशु का पुनर्जन्म हुआ था और उन्हें स्वर्ग ले जाया गया था।

15) यीशु के शिष्यों और अनुयायियों ने एक उच्च नैतिक संहिता को बरकरार रखा।

16) उनमें से एक का नाम मथाई था।

17) उनके शिष्यों को भी अपने विश्वास के लिए सताया गया था लेकिन उन्होंने अपने दावों को बदले बिना अपनी जान दी।

18) यीशु की मौत की बाद भी वे उनकी उपासना करने के लिए मिलते रहे।

www.pleaseconvinceme.com/index/pg79645

निष्कर्ष – सत्रह गैर-ईसाई लेखन नव विधान में लिखी गयी बातों की पुष्टि करते हैं। यदि ईसाई धर्म एक मिथक या मनगढंत धर्म होता, तो ये धर्मनिरपेक्ष लेख मौजूद नहीं होते।

क्या बाइबिल विरोधाभासों से भरी है?

यह एक उचित सवाल है, लेकिन बाइबिल की उचित तरीके से जांच करने वाले लोगों की इसपर एक राय नहीं बनती है। बिलकुल उसी तरह से जैसे किसी जासूस को शुरुआत में ऐसा लग सकता है कि किसी घटना के एकाधिक साक्षियों के बयानों में विरोधाभास है, लेकिन ज्यादा जांच करने पर उसे पता चल सकता है कि उनके दिए गए बयान विरोधाभासी नहीं बल्कि एक दूसरे के अनुपूरक हैं।

आपको प्रत्यक्ष उदाहरण देने के लिए, इस किताब की शुरुआत में मैंने आपको बताया है कि मैंने सैकड़ों लोगों से सीधे बात की है। पांच अन्य पृष्ठों पर, मैं हज़ार लोग कहता हूँ। यदि यह बाइबिल में होता तो संदेहवादी लोग इसे अपनी वेबसाइट पर पोस्ट करके विरोधाभास का रोना रोते। अप्रासंगिक रूप से प्रस्तुत होने के कारण, यह विरोधाभासी लग सकता है। लेकिन यदि आप करीब से देखते हैं तो आप पाएंगे कि मैंने कहा है कि "मैंने सैंकड़ों लोगों से यही सवाल किया है।" दूसरे शब्दों में, मैंने हज़ारों लोगों से बात की है लेकिन यह सवाल केवल सौ लोगों ने पूछा है। इसलिए, यह अनुमानित विरोधाभास पूरक बन गया, ना कि विरोधाभासी, बिलकुल वैसे ही जैसे किसी भी घटना के संबंध में हम कई गवाहों के बयानों में देखते हैं। किसी भी किताब को पढ़ते समय संदर्भ महत्वपूर्ण होता है, लेकिन 1500 वर्षों के दौरान चालीस लेखकों द्वारा लिखी गयी किताब में यह और भी ज्यादा जरूरी होता है। और अधिक जानें: defendinginerrancy.com/bible-difficulties

क्या सचमुच पुनरुत्थान हुआ था?

पुनरुत्थान के संबंध में एक न्यूनतम तथ्य तर्क

पुनरुत्थान के संबंध में जो सबसे मजबूत साक्ष्य हमें देखने को मिलते हैं वो हैं वास्तविक शिष्यों और ईश्वर दूत पौलुस का अपनी इस गवाही के लिए प्राण त्यागने की इच्छा कि यीशु मुर्दों में से ज़िंदा हुए थे। हमारे पास गैर-ईसाई लेख भी हैं जो पुनरुत्थान का समर्थन करते हैं। अब हम 1,400 विद्वानों की सर्वसम्मति की समीक्षा करेंगे।

पुनरुत्थान के संबंध में न्यूनतम तथ्य दृष्टिकोण बाइबिल के विद्वान गैरी हैबरमास (garyhabermas.com) द्वारा उत्पन्न किया गया है। यह यीशु के सूली पर मरने और पुनरुत्थान के बारे में 1,400 विद्वत्तापूर्ण गहन शोधों पर आधारित है। डॉ हैबरमास केवल उन तथ्यों पर निर्भर हैं जो कई स्रोतों द्वारा समर्थित हैं और अधिकांश विद्वानों द्वारा स्वीकार किए जाते हैं। नीचे दिए गए तथ्यों को 1,400 विद्वानों के 100 प्रतिशत में से 95 प्रतिशत द्वारा स्वीकार किया जाता है, केवल चौथे तथ्य को छोड़कर। चौथे तथ्य को 75 प्रतिशत द्वारा स्वीकार किया जाता है:

1. यीशु की मौत सूली पर चढ़ाने के कारण हुई थी।
2. उन्हें दफनाया गया था।
3. उनकी मौत के कारण शिष्य हताश हो गए थे और उन्होंने उम्मीद छोड़ दी थी।
4. जिस कब्र में उन्हें दफनाया गया था वो खाली मिली थी।
5. शिष्यों को ऐसे अनुभव हुए थे जिन्हें वो मुर्दों में से जी उठे यीशु के वास्तविक दर्शन मानते हैं।
6. शिष्य संदेहवादी से साहसी गवाहों में बदल गए थे।
7. पुनरुत्थान केंद्रीय संदेश था।
8. उन्होंने यरूशलेम में यीशु के पुनरुत्थान के संदेश का प्रचार किया।
9. कलीसिया का जन्म और विकास हुआ।
10. मसीह में विश्वास करने वाले रूढ़िवादी यहूदियों ने रविवार को अपनी उपासना का प्राथमिक दिन बनाया।
11. दोबारा जी उठे यीशु को देखने के बाद याकूब ने अपना धर्म परिवर्तित कर लिया (याकूब को संदेहवादी माना जाता था)।
12. पौलुस ने अपना विश्वास बदल दिया (पौलुस दुश्मन और संदेहवादी था)।

बाइबिल के विद्वान और लेखक गैरी हैबरमास द्वारा न्यूनतम तथ्य तर्क। www.garyhabermas.com

यह तथ्य काफी आकर्षक है कि विद्वानों का एक बड़ा प्रतिशत इन बारह बिंदुओं

को स्वीकार करता है। एक चीज निश्चित है कि यीशु था। जहाँ तक चौथे बिंदु, अर्थात खाली कब्र, की बात आती है इसके खाली होने के बारे में और वास्तव में यीशु मरे हुओं में से ज़िंदा हुए थे या नहीं इसके बारे में काफी मतभेद देखने को मिलते हैं। वर्षों के दौरान प्रदान की गयी इन निम्नलिखित छह संभावनाओं को देखते हुए, सोचिये कि इनमें से कौन सी सम्भावना सबसे अच्छा विवरण देती है। इस बात को ध्यान में रखिये कि परमेश्वर है; इसलिए, चमत्कारों से इंकार नहीं किया जा सकता है।

1. मतिभ्रम का सिद्धांत

इस सिद्धांत के साथ यह समस्या है कि चालीस दिनों के दौरान यीशु अलग-अलग स्थानों और परिस्थितियों में (खाते हुए, चलते हुए, बात आदि करते हुए) 500 से ज्यादा लोगों के सामने आये थे। मतिभ्रम लम्बी अवधियों तक लोगों के अलग-अलग समूहों में बार-बार नहीं होता है। पुनर्जीवित यीशु ने थोमा को उन्हें छूने के लिए भी कहा था।

फिर उसने थोमा से कहा, "हाँ, यहाँ अपनी उंगली रखो, और मेरा हाथ देखो; और अपना हाथ फैलाकर मेरे पंजर में डालो। संदेह करना छोड़ो और विश्वास करो" (यूहन्ना 20:27, जोर दिया गया)।

सब लोगों के सामने नहीं बल्कि केवल उनके सामने जिन्हें परमेश्वर ने पहले ही साक्षियों के रूप में चुन लिया था, जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया और पिया (प्रेरितों के काम 10:41, जोर दिया गया)।

लेकिन उन्होंने उनसे बोला, "तुम ऐसे घबराये हुए क्यों हो? तुम्हारे मनों में संदेह क्यों उठ रहे हैं? मेरे हाथों और मेरे पैरों को देखो। मुझे छुओ, और देखो। क्योंकि किसी भूत की माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं और जैसा कि तुम देख रहे हो कि मेरे वे हैं" (लूका 24:28-39, जोर दिया गया)।

2. साक्षी के गलत कब्र पर जाने का सिद्धांत

यदि यह सच होता तो रोमनों ने ईसाई धर्म को शांत करने के लिए उनके शरीर को सामने लाकर रख दिया होता, जिन्होंने असली कब्र में सुरक्षाकर्मी लगा रखे थे, लेकिन उन्होंने कभी भी इस संभावना का सुझाव नहीं दिया। यदि आप किसी प्रियजन को कब्र में दफ़न होते हुए देखते हैं तो क्या आपको लगता है कि तीन दिन बाद आप उसके कब्र का स्थान भूल जायेंगे?

3. मूर्छा या आभासी मृत्यु का सिद्धांत

यह सिद्धांत कहता है कि कोड़े मारने, पीटने और सूली पर चढ़ाने से यीशु की मौत नहीं हुई और उनके पेशेवर हत्यारों को इसका पता भी नहीं चला। इसके बाद बुरी तरह से पीटे गए यीशु को उनके शिष्यों ने मृत्यु से उठा हुआ मसीह मान लिया, जिसे वास्तव में एक चिकित्सक की बहुत ज्यादा जरुरत होती। सहज ज्ञान और चिकित्सीय विशेषज्ञों के बयान इसपर अपनी सहमति नहीं दिखाते हैं।

"स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक और चिकित्सीय साक्ष्यों से पता चलता है कि यीशु के पंजरों पर घाव करने से पहले ही वो मर चुके थे जो इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि भाले घोंपने, दायीं पसलियों में घुसा मारने के कारण शायद ना केवल उनके दाएं फेफड़े में बल्कि हृदयावरण और हृदय में भी छेद हो गया था और जिससे उनकी मृत्यु हो गयी थी। इसके अनुसार, इस धारणा पर आधारित

विवेचन कि यीशु की मृत्यु सूली पर नहीं हुई थी, आधुनिक चिकित्सा जानकारी के साथ संगत प्रतीत नहीं होती है।" विलियम डी. एडवर्ड्स, वेस्ली जे. गैबेल और फ्लॉयड ई. होमर, अमेरिकी चिकित्सा संगठन के "ईसा मसीह की भौतिक मृत्यु पर," पत्रिका, पृष्ठ 255।

4. यीशु के स्थान पर किसी और को सूली पर चढ़ाया गया था

इस्लाम यह दावा करता है, लेकिन इसका समर्थन करने के लिए कोई सबूत नहीं है। यीशु की माँ, मरियम, यूहन्ना के साथ क्रूस के पैरों के पास खड़ी थीं। पतरस ने उन्हें गिरफ्तार होते हुए और पिलातुस के सामने ले जाते हुए, पीटते हुए, और सूली पर चढ़ाने के लिए ले जाते हुए देखा था। बाइबिल में नीकुदेमुस सहित उन लोगों के अभिलेख भी शामिल हैं जो उन्हें जानते थे और जिन्होंने सबकुछ होते हुए देखा था, जिन्होंने उनके शरीर को कब्र में दफनाया था। आपको नहीं लगता कोई यह कह सकता था कि, "उन्होंने गलत आदमी को मार दिया?"

5. शिष्यों ने शरीर चुरा लिया था

बाइबिल कहती है कि खाली कब्र के बारे में यहूदी नेताओं के पास केवल यही सफाई थी, और ऐसा करते हुए, उन्होंने यह स्वीकार किया कि कब्र खाली था। लेकिन इसे ऐसे सोचिये - यदि शिष्यों ने शरीर चोरी किया होता तो हम वापस उसी आधार पर आ जाते हैं कि वो रोमन सुरक्षाकर्मियों की चोरी से वहां गए होंगे, उन्होंने सुरक्षाकर्मियों के पता चले बिना दो टन का पत्थर हटाया होगा, और अपने आपको शहीद करने के लिए पुनर्जन्म की पूरी मनगढंत कहानी बनाई होगी। यदि ऐसा है तो वो एक ऐसी चीज के लिए मरे जो उन्हें पता था कि झूठ थी।

6. यीशु मुर्दों में से ज़िंदा हुए थे

कई विद्वानों का मानना है कि यह सबसे अच्छा विवरण देता है। कोई भी व्यक्ति केवल चमत्कारों को स्वीकार ना करने के कारण इस विकल्प को अस्वीकार कर सकता है। लेकिन चूँकि तथ्यों से पता चलता है कि परमेश्वर है, इसलिए पुनरुत्थान जैसे चमत्कार निश्चित रूप से संभव हैं।

"आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता हैं कि इस तरीके से सुसमाचारों की जांच करने वाले नव विधान के अधिकांश आलोचक यीशु के पुनरुत्थान को रेखांकित करने वाले केंद्रीय तथ्यों को स्वीकार करते हैं। मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि यहाँ मैं केवल ईसाई धर्म प्रचारक या रूढ़िवादी विद्वानों के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि नव विधान आलोचकों की एक विस्तृत श्रृंखला के बारे में बात कर रहा हूँ जो धर्मनिरपेक्ष विश्वविद्यालयों और गैर-ईसाई धर्म प्रचारक सेमिनार में पढ़ाते हैं। यह आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकता है कि उनमें से अधिकांश यीशु के पुनरुत्थान का समर्थन करने वाले ऐतिहासिक मूल तथ्यों को स्वीकार करते हैं।" ईसाई दार्शनिक और धर्मशास्त्री डॉ. विलियम लेन क्रेग, www.reasonablefaith.org

"मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि यीशु मसीह के पुनरुत्थान का सबूत इतना ठोस है कि यह सबूत द्वारा स्वीकृति के लिए मजबूर कर देता है जो संदेह के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ता है।" सर लियोनेल लक्खू, लगातार 245 हत्या के मामलों में जीत हासिल की, *द गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स* के अनुसार दुनिया के सबसे सफल वकील। *परमेश्वर के ठोस दावे*, ली स्ट्रोबेल।

"केवल यीशु ने यह भविष्यवाणी की थी कि वो मरने के बाद जीवित हो जायेंगे, और केवल उनके अनुयायियों को ऐसी किसी घटना पर विश्वास था। यीशु की सूली पर मौत ना केवल अपने तरीके में सबसे अलग थी, बल्कि अपनी तथाकथित मुक्ति के अर्थ में भी अलग थी। ज़ोरोस्टर, बुद्ध, सुकरात और मुहम्मद में से किसी ने भी यह घोषणा नहीं की थी कि उनकी मौत से मनुष्य अपने पाप से बचेगा।" एडविन एम. यामूची, इतिहास के प्रोफेसर एमेरिटस, मियामी विश्वविद्यालय, www.irr.org/yamauchi.html

www.God-Evidence-Truth.com

ईसा मसीह क्या होने का दावा करते थे?

परमेश्वर के बारे में विरोधाभासी मतों की सूची में यीशु की पहचान के बारे में बहुत सारे विरोधी मत शामिल हैं, जिन्हें हमने पहले देखा है। एक मनुष्य, एक अच्छे शिक्षक, एक देवदूत, और परमेश्वर के पुत्र, मानव रूप में परमेश्वर जैसे बहुत सारे मत प्रचलित हैं। अब चलिए देखते हैं कि यीशु कौन होने का दावा करते थे:

1. यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था

पूर्व विधान में, परमेश्वर खुद को "मैं हूँ" कहते हैं। नव विधान में, यीशु यही नाम प्रयोग करते हैं; यहूदियों ने जान लिया कि वो क्या कह रहे थे और उन्होंने उन्हें पत्थर से मारने के लिए पत्थर उठाये क्योंकि वे जानते थे कि वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा था।

परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ।" और उन्होंने कहा, "इस्राएल के लोगों से यह कहो, 'मैं हूँ' ने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है" (निर्गमन 3:14)।

यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, इब्राहीम से पहले भी मैं हूँ।" इसपर उन्होंने यीशु पर मारने के लिये बड़े-बड़े पत्थर उठा लिए लेकिन यीशु छुपते-छुपाते मंदिर से चला गया (यूहन्ना 8:58-59)।

2. यीशु ने प्रार्थना का उद्देश्य होने का दावा किया था

यीशु ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ होने का दावा किया था, इस प्रकार परमेश्वर होने का दावा किया था। अगर मैं आपसे कहूं कि मेरे नाम पर प्रार्थना करो तो आप क्या प्रतिक्रिया देंगे? *"और मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम लोग मेरे नाम से माँगोगे जिससे पुत्र के द्वारा परम पिता महिमावान हो"* (यूहन्ना 14:13)।

3. यीशु ने पापों को क्षमा करने का दावा किया था

हम सभी किसी इंसान को हमारे विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से पाप करने पर माफ़ कर सकते हैं। लेकिन कई बार यीशु ने ऐसे लोगों के पापों को भी माफ़ किया था जिनसे वो तुरंत मिले थे और जिन्होंने उनके खिलाफ व्यक्तिगत रूप से कोई पाप नहीं किया था। वह परमेश्वर के विरुद्ध किये गए उनके पापों को माफ़ कर रहे थे, जो केवल परमेश्वर कर सकता था।

"हे पुत्र, तुम्हारे पाप क्षमा किये गए।" उस समय वहाँ कुछ धर्मशास्त्री भी बैठे थे, जो अपने मन में सोच रहे थे, "यह व्यक्ति इस तरह बात क्यों कर

रहा है? यह तो परमेश्वर का अपमान कर रहा है! परमेश्वर के सिवा, और कौन पापों को क्षमा कर सकता है?" (मरकुस 2:5-7, जोर दिया गया)।

4. यीशु ने अपने आपको उस सम्मान के योग्य होने का दावा किया था जो केवल परमेश्वर के लिए होता है

पिता किसी का भी न्याय नहीं करता लेकिन उसने न्याय करने का अधिकार बेटे को दे दिया है, जिससे सभी लोग पुत्र का आदर वैसे ही करें जैसे वे पिता का करते हैं। जो व्यक्ति पुत्र का आदर नहीं करता वह उस पिता का भी आदर नहीं करता जिसने उसे भेजा है (यूहन्ना 5: 22-23)।

5. यीशु ने वो मसीहा होने का दावा किया था जिसका इंतज़ार था

फिर स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीहा (यानी "मसीह") आने वाला है। जब वह आयेगा तो हमें सब कुछ बताएगा।" यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझसे बात कर रहा हूँ, वही हूँ" (यूहन्ना 4:25-26)।

महायाजक ने उससे पूछा, "क्या तुम पवित्र परमेश्वर के पुत्र मसीह हो?" और यीशु बोला, "मैं हूँ, और तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली के दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों के साथ आते देखोगे" (मरकुस 14:61-62)।

6. यीशु ने अधिकार में परमेश्वर के बराबर होने का दावा किया था

"चाहे धरती और आकाश मिट जायें, लेकिन मेरा वचन कभी नहीं मिटेगा" (मत्ती 24:35)।

फिर यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे सौंपे गये हैं (मत्ती 28:18)।

7. यीशु ने यहोवा होने का दावा किया था

पूर्व विधान में, परमेश्वर को कई तरीके से संदर्भित किया गया है। नव विधान में भी, यीशु के लिए समान गुण लागू किये गए हैं जो बताते हैं कि वह मनुष्य रूप में परमेश्वर हैं।

पूर्व विधान	**नाम**	**नव विधान**
भजन संहिता 23:1	गड़ेरिया	इब्रानियों 13:20
यशायाह 44:4	पहला और अंतिम	प्रकाशित वाक्य 1:17
यशायाह 40:28	निर्माता	कुलुस्सियों 1:16-17
यशायाह 62:5	दूल्हा	मत्ती 25:1
भजन संहिता 27:1	प्रकाश	यूहन्ना 8:12
यशायाह 43:11	रक्षक	यूहन्ना 4:42
यशायाह 42:8	परमेश्वर की महिमा	यूहन्ना 17:5
1 शमूएल 2:6	जीवनदाता	यूहन्ना 5:21

व्यवस्था विवरण 32:4 चट्टान 1 कुरिन्थियों 10:4

योएल 3:12 न्यायाधीश 2 कुरिन्थियों 5:10

प्रकाशित वाक्य हमें बताता है कि यह "यीशु मसीह का प्रकाशित वाक्य है।" प्रकाशित वाक्य 1:17-18 में, हम देखते हैं कि यीशु पहला और अंतिम होने का दावा कर रहे हैं, यशायाह 44:6 में एक पूर्व विधान शीर्षक परमेश्वर के लिए आरक्षित है। उन्होंने यह भी कहा था, "मैं मर गया था और देखो, मैं हमेशा के लिए ज़िंदा हो गया हूँ," जो केवल यीशु पर लागू होता है।

मैंने जब उसे देखा तो मैं उसके चरणों पर मरे हुए के समान गिर पड़ा। लेकिन उसने मेरे ऊपर अपना दाहिना हाथ रखते हुए कहा, "डरो मत, मैं ही पहला हूँ और मैं ही अंतिम हूँ और मैं ही जीवित भी हूँ। मैं मर गया था, लेकिन देखो, अब मैं सदा-सदा के लिए जीवित हूँ। मेरे पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं" (प्रकाशित वाक्य 1:17-18)।

8. यीशु ने नौ अलग-अलग अवसरों पर उपासना स्वीकार की

1) यूहन्ना और याकूब की माँ – मत्ती 20:20

2) दुष्टात्मा की कैद में आदमी - मरकुस 5:6

3) एक अँधा आदमी - मत्ती 28:17

4) संदेह करने वाला थोमा - यूहन्ना 20:28

5) कब्र पर महिलाएं - मत्ती 28:9

6) एक कनानी औरत - मत्ती 15:25

7) उनके शिष्य - मत्ती 14:33

8) एक चंगा कोढ़ी - मत्ती 8:2

9) एक अमीर युवा शासक - मत्ती 9:18

यीशु एक रबी भी थे, और रबी का पहला कर्तव्य ईश्वर निंदा के बारे में बताना होता है। फिर भी यीशु ने कभी भी उन्हें नहीं फटकारा जो उनकी उपासना करते थे, और यहाँ तक कि यूहन्ना 20:29 में उन्होंने थोमा की प्रशंसा भी की है। इसके विपरीत, दूत यूहन्ना ने प्रकाशित वाक्य 22:9 में एक देवदूत की उपासना करने का प्रयास किया और उन्हें फटकार दिया गया था। वही, दूसरी तरफ यीशु केवल परमेश्वर के लिए आरक्षित उपासना को स्वीकार करते हैं। वह देवदूत से कहीं ज्यादा थे।

9. यीशु ने परमपिता परमेश्वर के साथ एक होने का दावा किया था

यह स्पष्ट है कि यहूदी साक्षियों को यह पता लगाने में कोई समस्या नहीं हुई थी कि यीशु परमेश्वर होने का दावा कर रहे थे। उन्होंने इसपर विश्वास नहीं किया कि वह परमेश्वर हैं, इसलिए उन्होंने अंत में उन्हें ईश्वरनिन्दा (परमेश्वर होने का दावा करना, बेकार में परमेश्वर का नाम लेना) के लिए सूली पर चढ़ा दिया। यदि वह परमेश्वर नहीं होते तो वे सही होते।

मेरा पिता और मैं एक हैं। फिर यहूदी नेताओं ने यीशु पर मारने के लिए पत्थर उठा लिए। यीशु ने उनसे कहा, "पिता की ओर से मैंने तुम्हें अनेकों अच्छे कार्य दिखाये हैं। उनमें से किस काम के लिए तुम मुझ पर पत्थर फेंकना चाहते हो?" यहूदी नेताओं ने उसे उत्तर दिया, "हम तुम पर किसी अच्छे काम के लिए पथराव नहीं कर रहे हैं, बल्कि इसलिए कर रहे हैं क्योंकि तुमने परमेश्वर का अपमान किया है और तुम, जो केवल एक मनुष्य है, अपने आपको परमेश्वर घोषित कर रहे हो" (यूहन्ना 10:30-33)।

10. यीशु ने अपने आपको मनुष्य का पुत्र कहा था

नीचे दी गयी पहली आयत में, "मनुष्य का पुत्र" पूर्व विधान में परमेश्वर का प्रतीक है।

रात को मैंने अपने दिव्य सपने में देखा कि मेरे सामने कोई खड़ा है, जो मनुष्य जैसा दिखाई देता था। वह आकाश में बादलों पर आ रहा था। वह उस सनातन राजा के पास आया था। इसलिए उसे उसके सामने ले आया गया। वह जो मनुष्य के समान दिखाई दे रहा था, उसे अधिकार, महिमा और सम्पूर्ण शासन सत्ता सौंप दी गयी। सभी लोग, सभी जातियाँ और प्रत्येक भाषा बोलने वाले लोग उसकी आराधना करेंगे। उसका राज्य अमर रहेगा। उसका राज्य सदा बना रहेगा। वह कभी नष्ट नहीं होगा (दानिय्येल 7:13-14)।

यूहन्ना 8:28 में, साथ ही नव विधान में बयासी अन्य स्थानों पर, यीशु ने अपने आपको मनुष्य का पुत्र कहा है।

तो यीशु ने उनसे कहा, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचा उठा लोगे तब तुम जानोगे कि वह मैं हूँ, और मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता, मैं यह जो कह रहा हूँ, वही है जो मुझे परम पिता ने सिखाया है" (यूहन्ना 8:28)।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप या लोकप्रिय संस्कृति में कोई भी अन्य व्यक्ति यीशु को क्या समझता है, साक्ष्य के आधार पर, यह कहना सही है कि यीशु ने कभी भी परमेश्वर होने का दावा नहीं किया। डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक के वीडियो सीरीज *आई डोंट हैव इनफ फेथ टू बी एन अथेइस्ट* से स्वीकृत स्वरुप।

"इसके अलावा अलग-अलग मतों के दूसरे प्रमुखों के दावों और यीशु ने जो होने का दावा किया था उनके बीच एक बड़ा अंतर है। यीशु ने पाप को माफ़ करने में समर्थ होने का दावा किया था, उन्होंने कई बार उपासना स्वीकार की थी, और उन्होंने कहा था कि वह परमपिता तक जाने का एकमात्र जरिया हैं। केवल यीशु ने उस एकमात्र, सर्वोच्च परमेश्वर के साथ बराबरी का दावा किया था।" ई.ओ. जेम्स के अनुसार, जो तुलनात्मक धर्मों पर अधिकारी हैं, कहीं पर भी यह दावा नहीं किया गया है कि किसी भी धर्म का कोई भी ऐतिहासिक संस्थापक एकमात्र और अकेला सर्वोच्च देवता था। केवल यीशु ने अपने निर्विवाद अधिकार पर बात की थी। ज़ोरोस्टर और मुहम्मद परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में काम करते थे, जबकि सुकरात और बुद्ध ने हर व्यक्ति से अपनी अंतरात्मा की सलाह लेने का आग्रह किया था।" एडविन एम. यामूची, इतिहास के प्रोफेसर एमेरिटस, मियामी विश्वविद्यालय, www.irr.org/yamauchi.html (जोर दिया गया)।

"आखिरकार, यह बहुत हैरानी की बात है कि यीशु के जीवन के समग्र व्यक्तिगत दावों, उन्हें सूली पर चढ़ाने, कब्र में दफनाने, उनकी खाली कब्र मिलने, मौत के बाद उनके वापस आने, और उनके शिष्यों का अचानक और सच्चे मन से यह विश्वास होना कि परमेश्वर ने उन्हें मरे हुओं में से ज़िंदा किया था

सहित, यीशु के कितने ज्यादा जीवन को स्थापित किया जा सकता है। इसलिए सुसमाचारों में उनके बारे में सुरक्षित किये गए ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर हमारे पास मसीह पर विश्वास करने के लिए काफी ठोस कारण हैं।" डॉ. विलियम लेन क्रेग, www.reasonablefaith.org (जोर दिया गया)।

निष्कर्ष – यीशु का परमेश्वर होने का दावा कई तरीकों से समर्थित है। उन्होंने अपने आपको मरे हुओं में से ज़िंदा करके हमें परम साक्ष्य प्रदान किया है। इसलिए यीशु मनुष्य रूप में अवतरित परमेश्वर है।

लेकिन मुझे लगा था कि यीशु परमेश्वर के पुत्र थे

वह परमेश्वर के पुत्र हैं; वह परमपिता और परमात्मा के साथ परमेश्वर की प्रकृति को साझा करते हैं। इसे ही हम त्रिमूर्ति कहते हैं—तीन अलग-अलग रूप में एक परमेश्वर: पिता, पुत्र और परमात्मा। एक बहुत सरल लेकिन सीमित सादृश्यता जिससे लोगों को त्रिमूर्ति को समझने में मदद मिल सकती है वो है H2O। यह पानी, बर्फ या भाप हो सकता है - लेकिन तीनों की प्रकृति H2O है। वैसे ही यह पिता, पुत्र और परमात्मा है - लेकिन तीनों की प्रकृति परमेश्वर है। त्रिमूर्ति को पूरी तरह से समझना कठिन है, लेकिन यह विरोधाभासी नहीं है क्योंकि एक ही समय पर तीन परमेश्वर या एक परमेश्वर नहीं हैं।

इसे ऐसे सोचिये। क्या आप अपने लौकिक पिता की तरह ही इंसान हैं? हाँ। तो, आपको ऐसा क्यों लगता है कि परमेश्वर का एकलौता पुत्र अपने पिता से कुछ भी कम होगा?

यीशु परमेश्वर और मनुष्य कैसे हो सकता है?

बाइबिल हमें बताती है कि यीशु मनुष्य और अवतरित परमेश्वर दोनों थे: ऐसे प्रभु जिन्होंने अपनी इच्छा से मानवता की पोशाक धारण की थी। बाइबिल पढ़ते समय, इस बात को समझना महत्वपूर्ण है कि कौन बोल रहा है और श्रोता कौन है। उदाहरण के लिए, बाइबिल में विश्वास ना करने वाले कई लोग दावा करते हैं कि यीशु ने कहा था, "परमेश्वर क्षमा करता है" और सोचते हैं कि यह सबके ऊपर लागू होता है। बल्कि वास्तव में, यह केवल उन लोगों के लिए बोला गया है जिन्होंने यीशु में अपनी आस्था लगायी है। संदर्भ की महत्ता जाहिर है।

यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों कैसे हो सकता है इस सवाल को दो तरीकों से पूछने की जरुरत है। क्या यीशु को भूख लगती थी? परमेश्वर के रूप में, नहीं; मनुष्य रूप में, हाँ। क्या यीशु को थकान होती थी? परमेश्वर के रूप में, नहीं; मनुष्य के रूप में, हाँ। क्या यीशु मरा था? परमेश्वर के रूप में, नहीं; मनुष्य के रूप में, हाँ। परमेश्वर की दो प्रकृतियों को समझाने के लिए डॉ. विलियम लेन क्रेग *अवतार* फिल्म से सादृश्यता का प्रयोग करते हैं:

"मैंने मसीह के दो प्रकृतियों वाला एक इंसान होने के सिद्धांत की व्याख्या की है और इस सिद्धांत को समझाने के लिए *अवतार* फिल्म का प्रयोग किया है ("अवतार" देह धारण के लिए एक अन्य शब्द है)। यह फिल्म एक अपंग सैनिक, जैक सली की कहानी बताती है, जो नवी नामक अलौकिक जाति के बीच अवतार बन जाता है। वह उनमें से एक के रूप में उनके बीच शारीरिक रूप से अवतरित बन जाता है। लेकिन साथ ही वह मनुष्य भी बना रहता है। इसलिए जैक में मनुष्य की प्रकृति है और नवी की प्रकृति है। फिल्म में इन दोनों प्रकृतियों में एक दूसरे से बिलकुल अलग शक्तियां होती हैं। यदि आप यह पूछते कि, 'क्या

जैक सली भाग सकता है?' इसका जवाब होगा, 'हाँ और नहीं: अपनी नवी प्रकृति में हाँ, लेकिन अपनी मानव प्रकृति में नहीं।' मैंने अपने श्रोताओं से कहा कि यदि आप *अवतार* को समझ सकते हैं तो आप मसीह के अवतरण को भी समझ सकते हैं। क्योंकि इसी तरह से, मसीह में एक दैवीय प्रकृति और एक मानव प्रकृति दोनों है। इन दोनों प्रकृतियों की अलग-अलग शक्तियां हैं। अपनी मानव प्रकृति में मसीह ने उन सभी सीमाओं का अनुभव किया जो मानव प्रकृति में अन्तर्निहित होती हैं। लेकिन अपनी दैवीय प्रकृति में उनके पास अलौकिक शक्तियां थीं। उसी तरह से जैसे जैक सली अपनी नवी की प्रकृति में नवी लोगों का रक्षक बन जाता है, इसलिए मसीह अपनी मानव प्रकृति में मानव जाति के रक्षक बन जाते हैं।" विलियम लेन क्रेग, ईसाई दार्शनिक और धर्मशास्त्री, युसुफ इस्माइल के साथ बहस, www.reasonablefaith.org

रूपांतरित जीवन

कुछ लोग जीवन के रूपांतरण को व्यक्तिपरक साक्ष्य समझ सकते हैं क्योंकि यह एक व्यक्तिगत अनुभव से संबंधित होता है। लेकिन जाहिर तौर पर परिवर्तित जीवनों और लोगों की बेहतरीन संख्या के आधार पर, जो खुद अपने जीवन में परमेश्वर की शक्ति के होने का प्रमाण देंगे, मैं मानता हूँ कि यह ईसाई धर्म के सबसे मजबूत साक्ष्यों में से एक है।

मैं अपने खुद के अनुभव में व्यक्तिगत रूप से यीशु की रूपांतरण शक्ति की पुष्टि कर सकता हूँ। इस संसार में उनके साथ निजी संबंध जैसा कुछ भी नहीं है। चाहे कुछ भी हो जाए, वह विश्वास करने वालों के लिए हमेशा मौजूद होते हैं जैसा कि उन्होंने इब्रानियों 13:5 में वादा किया था: *"...मैं तुम्हें कभी भी नहीं छोड़ूंगा ना ही तुम्हारा तुम्हारा त्याग करूँगा।"* हम सभी के अंदर मौजूद खालीपन को भर देते हैं और एक ऐसी शांति देते हैं जो संसार देने की उम्मीद नहीं कर सकता है—परमेश्वर के साथ शांति और किसी दुःख और पीड़ा के बिना अनंतता की आशा। हम जैसे हैं वो हमें वैसे ही प्रेम करता है, और समय के साथ हमें अपनी तरह बनने के लिए रूपांतरित करता है। यहाँ रूपांतरित जीवन के छह उदाहरण दिए गए हैं:

"मैं क्रिसमस के दिन एक मोटेल गया; मैं अपना जीवन खत्म करना चाहता था। मैंने अपना ज्यादातर जीवन अनियंत्रित रूप से बिताया था। मैं नशीले पदार्थ और शराब का प्रयोग करता था, मुझे मेरे घर से निकाल दिया गया था, और मेरी पत्नी ने मुझे छोड़ने की धमकी दी थी। जब मैं उस कमरे में बैठा हुआ था तभी मुझे टीवी के ऊपर एक किताब दिखाई दी। मैंने नीचे देखा और मुझे एक गिदोन बाइबिल दिखाई दी और मैंने सोचा इसकी किसे जरुरत होगी? मैंने इसे अपने हाथ से धकेलकर ज़मीन पर गिरा दिया। यह मेरे पैरों पर गिरकर अपने आप खुल गया। इसके बाद जो मैंने पढ़ा उसने मेरा जीवन बदल दिया।" इलियट, www.Gideons.org से वीडियो प्रमाण

"मैंने बाइबिल उठाया और इसे पढ़ना शुरू कर दिया। यह रोमियों 12:2 था, मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। यह आयत कहती है कि दुनिया की रीती पर मत चलो बल्कि अपने मन को नया करके अपने आपको बदलो। ना जाने किस कारण से मुझे कुछ समझ आया। मुझे अपने मन को नया करना था! अगर मैं अपना मन नया कर देता हूँ तो मेरे कार्य निश्चित रूप से उसका पालन करेंगे।" ब्रैडी जेम्स, एनएफएल डलास काउबॉय, www.lamsecond.com

"अपने जीवन के इस भयानक क्षण के दौरान यीशु की ओर मुड़ पाने के कारण मुझे शांति और आत्मविश्वास महसूस हुआ और मुझे लगता है केवल इसी चीज ने आज मुझे ज़िंदा रखा है।" बेथनी हैमिल्टन, शार्क के हमले में अपना हाथ खोने के बाद यीशु की ओर मुड़ने में सक्षम होने पर, www.lamsecond.com

"मुझे मसीह पर भरोसा है, मेरा मानना है वो मेरे जीवन में सबसे पहले आते हैं, उसके बाद मेरा परिवार आता है और बाकी सभी चीजें उसके बाद आती हैं। और उनके बिना आज मैं वहां नहीं होता जहाँ मैं आज हूँ क्योंकि मैंने अपने से जो भी करने का प्रयास किया उसने मेरा सबकुछ ले लिया। इसलिए आज मैं अपने जीवन में मसीह को सबसे पहले रखता हूँ।" जोश हैमिल्टन, टेक्सास रेंजर्स, www.lamsecond.com

लैकरे नशीले पदार्थों, चोरी, शराब और गैंग गतिविधि से भरी हुई दुनिया में फंसे हुए थे। "मैं कहीं के लिए अच्छा नहीं था। मैं बस एक नालायक इंसान था।" उन्होंने कहा।
उन्हें नहीं पता था कि जल्द ही जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल जायेगा, और उसके लिए उनकी आँखें खुल जाएँगी जो उनके जीवन को महत्वपूर्ण मानता है। जिसने उनके लिए अपनी जान दी। जो उनके संगीत के पीछे है। लैकरे मूरे, ईसाई रैप कलाकार, www.lamsecond.com

साक्ष्य के अनुरूप

निष्कर्ष का निम्नलिखित सारांश परमेश्वर के अस्तित्व और पहचान के लिए एक उचित तर्क है। यह अंतिम फैसले के लिए साक्ष्य का पालन करता है:

1. सत्य मौजूद है; इसका विपरीत हमेशा गलत होता है।
2. ब्रह्माण्ड अपने से अचानक आया है और इसके लिए एक बाहरी पारलौकिक कारण की जरुरत होती है।
3. ब्रह्माण्ड और जीवन अत्यधिक जटिल संरचना को दर्शाते हैं और इसके लिए बेहद बुद्धिमान निर्माता की जरुरत होती है।
4. हमारे विवेक द्वारा प्रमाणित, वस्तुनिष्ठ नैतिक कानून के अस्तित्व के लिए नैतिक व्यवस्थादाता की जरुरत होती है।
5. 2, 3 और 4 बिंदु परमेश्वर के अस्तित्व की आवश्यकता को साबित करते हैं। इसलिए परमेश्वर है।
6. चूँकि परमेश्वर है, इसलिए चमत्कार संभव हैं।
7. पांडुलिपि साक्ष्य के आधार पर, नव विधान 99 प्रतिशत सटीक है।
8. तथ्यों के आधार पर, पुनरुत्थान के विवरणों सहित, नव विधान सत्य है।
9. नव विधान सिखाता है कि यीशु परमेश्वर हैं।
10. यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था और इसे अपने चमत्कारों और पुनरुत्थान से प्रमाणित भी किया।
11. इसलिए, यीशु परमेश्वर है।
12. परमेश्वर जो भी शिक्षा देता है वो सच है।
13. यीशु ने सिखाया कि सम्पूर्ण बाइबिल सच है।
14. इसलिए, यह सच है कि बाइबिल परमेश्वर का वचन है, और इसका विरोध करने वाली हर चीज गलत है।

बिंदुओं को ट्यूरेक और गिस्लर के वीडियो सीरीज़/किताब *आई डोंट हैव*

इनफ फेथ टू बी एन अथेइस्ट से अनुकूलित और संशोधित किया गया है, पृष्ठ 375

निष्कर्ष – परमेश्वर है, बाइबिल सत्य है और यीशु परमेश्वर है।

आपका फैसला

जिनका भी मैंने साक्षात्कार लिया उनमें से पंचानबे प्रतिशत से भी ज्यादा लोगों ने यह माना कि सत्य बहुत महत्वपूर्ण होता है। ज्यादातर लोगों ने यह भी स्वीकार किया कि जहाँ तक सत्य की खोज करने की बात आती है, अपनी भावनाओं या दूसरे की आस्था पर विश्वास करने के बजाय साक्ष्य का पालन करना कहीं ज्यादा बेहतर होता है। इसलिए, यह संभावना है कि आप भी यह मानते होंगे कि सच्चाई महत्वपूर्ण है और साक्ष्य सच्चाई का पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका है।

मेरा मानना है कि वस्तुनिष्ठ साक्ष्य दृढ़ता से दर्शाते हैं कि परमेश्वर है और यीशु मानव रूप में परमेश्वर हैं। लेकिन यहाँ तक कि सबसे ठोस सबूतों वाले ज्यूरी ट्रायल में भी, ज्यूरी में बैठे हुए लोग आपसी सहमति नहीं दिखाते हैं।

यह आपका निर्णय है, और मैं आपके लिए यह बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि आप क्या फैसला करेंगे। एक क्षण के लिए कल्पना करिये कि आप एक भरी हुई अदालत में ज्यूरी में बैठे हुए हैं। मामले के सभी तथ्य आपके सामने प्रस्तुत कर दिए गए हैं, और कुछ ही क्षणों में, आप और अन्य ज्यूरी सदस्य विचार-विमर्श शुरू कर देंगे। जैसे ही आप अदालत से बाहर निकलने के लिए खड़े होते हैं, आप जानबूझकर प्रतिवादी को एक आखिरी बार देखते हैं। आपकी आँखें उससे मिलती हैं और आप उसकी प्यारी मुस्कान और उसकी आँखों में भरा प्रेम देखते हैं। यह नासरत का यीशु है, जिसे सदियों से अपनी ईमानदारी और नैतिक शिक्षाओं के लिए जाना जाता है। वह मनुष्य रूप में परमेश्वर होने का दावा करता है। आपको अचानक यह एहसास होता है कि आपका निर्णय अंत में इस बात कर निर्भर करता है कि आपको उसके दावे पर विश्वास है या नहीं। तथ्य परमेश्वर के अस्तित्व का समर्थन करते हैं। क्या परमेश्वर का पुत्र यीशु, अवतरित परमेश्वर है?

पूर्व नास्तिक और लेखक सी.एस. लुईस कभी उसी स्थिति में थे जहाँ इस समय आप हैं। वह मानते थे कि यीशु के असाधारण दावों ने यीशु के केवल एक अच्छा इंसान या अच्छा शिक्षक होने के विकल्प को समाप्त कर दिया है। इसलिए, केवल तीन संभव विकल्प शेष हैं। चूँकि यह तर्क एक ऐसे इंसान से आ रहा है जो कभी बिलकुल नास्तिक था और जिसे परमेश्वर में विश्वास करने की कोई इच्छा नहीं थी, इसलिए यह उद्धरण अच्छी तरह से गौर करने योग्य है।

यहोवा, झूठा, पागल

"मैं यहाँ किसी को भी बिलकुल बेवकूफी भरी बात कहने से रोकने की कोशिश कर रहा हूँ जो लोग अक्सर उनके बारे में कहते हैं: मैं यीशु को महान नैतिक शिक्षक के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ, लेकिन मैं उनके परमेश्वर होने के दावे को स्वीकार नहीं करता हूँ। हमें यही चीज नहीं कहनी चाहिए। अगर कोई इंसान ऐसी चीजें कहता जो यीशु ने कही थीं तो वो महान

नैतिक शिक्षक नहीं होगा। या तो वह पागल होगा या तो वह नर्क का शैतान होगा। आपको अपना चुनाव करना होगा। या तो यह इंसान, परमेश्वर का पुत्र था, और है या फिर कोई पागल या उससे भी बुरा था। अगर वो पागल है तो आप उसे चुप करा सकते हैं, अगर वो शैतान है तो आप उसपर थूक सकते हैं और उसे मार सकते हैं या आप उसके चरणों पर गिरकर उसे यहोवा और परमेश्वर पुकार सकते हैं, लेकिन उनके महान मानव शिक्षक होने जैसी कोई बेकार की बात मत करिये। उन्होंने हमारे पास वो विकल्प नहीं छोड़ा है। वो ऐसा विकल्प रखना भी नहीं चाहते थे।" सी.एस. लुईस, मेयर क्रिश्चियनिटी।

साक्ष्य ने लुईस को अपने अभिमान को किनारे रखकर, नास्तिकता छोड़ने और ईसाई बनने के लिए मनाया। लेकिन ऐसा किसी आंतरिक संघर्ष के बिना नहीं हुआ। उन्होंने द मोस्ट रिलक्टेंट कन्वर्ट नामक एक किताब भी लिखी जहाँ उन्होंने स्वीकार किया कि उनकी यीशु में अपनी आस्था रखने की कोई योजना नहीं थी। वह उन तथ्यों को अस्वीकार नहीं कर पाए जो बताते हैं कि यीशु परमेश्वर हैं। लुईस ने समझा कि सच्चाई अक्सर हमारी भावनाओं के विपरीत होती है। लेकिन उन्होंने फैसला किया कि वो केवल सच्चाई में ही रहना चाहते हैं, भले ही उन्हें अपने आपको नम्र बनाना पड़े और अपने जीवन की दिशा बदलनी पड़े।

जब हम छोटे होते हैं तो हमें लगता है कि प्यार केवल भावनाओं के बारे में है। लेकिन जब हम बड़े होते हैं तो हमें एहसास होता है कि प्रेम एक चुनाव है, जो अक्सर भावनाओं के बावजूद भी किया जाता है। सच्चाई कोई अलग नहीं है।

मामला बंद

आपको इस किताब की शुरुआत में दी गयी कहानी याद है जहाँ छह लोग एक ही संपत्ति का एकलौता उत्तराधिकारी होने का दावा कर रहे थे? जांच पूरी होने के बाद और सच्चाई का पता चलने के बाद यह स्पष्ट हो गया कि अन्य पांच कहानियां सही नहीं हो सकती हैं। यदि आपको उन तथ्यों पर विश्वास है जो दर्शाते हैं कि परमेश्वर है और यीशु परमेश्वर के अवतरित रूप थे तो बाकी अन्य मतों की जांच करना बेकार होगा। बाकी सभी मत बाइबिल का प्रतिरोध करते हैं, और इसलिए वो गलत होंगे। मैंने कई नया मतों पर शोध किया है, और उनमें में कोई भी ऐसे सत्यापन योग्य ऐतिहासिक तथ्य प्रदान नहीं करता जैसे तथ्य ईसाई धर्म में मिलते हैं। इसके अलावा, उनमें से किसी के भी पास ऐसा कोई संस्थापक नहीं था जिसने परमेश्वर होने का दावा किया था और जिसने मरे हुओं में से ज़िंदा होकर इसे साबित किया था। हमारी संक्षिप्त समीक्षा में, हमने साक्ष्य की साक्ष्यों के विशाल सागर की केवल सतह को छुआ है जो बाइबिल के परमेश्वर के ऊपर बिलकुल सही बैठती है। अगर कोई भी इंसान यह दावा करता है कि परमेश्वर के बारे में किसी अन्य धर्म का मत सही है तो उनसे निष्पक्ष साक्ष्य की मांग करिये।

www.God-Evidence-Truth.com

तो क्या?

चूँकि हमने यह पता लगा लिया है कि साक्ष्य बाइबिल को सही मानते हैं, इसलिए अब इस बात की जांच करना सही समझ में आता है कि ईसाई इसे

इतना महत्वपूर्ण क्यों मानते हैं, और व्यक्तिगत रूप से यह आपके ऊपर कैसे लागू होती है। इससे पहले कि हम शुरुआत करें, आपको यह याद रखना होगा कि जो सच है वो है, चाहे आप इसे पसंद करें या ना करें। शुरुआत में यह सच अपमानजनक लग सकता है और शायद आप इसे तुरंत समझकर स्वीकार ना कर पाएं। लेकिन हमारा अगला विषय सुसमाचार को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, जो सम्पूर्ण बाइबिल में से सबसे मुख्य संदेश है।

लोग यह सोचकर सबसे सामान्य गलती कर देते हैं कि उनकी गतिविधियां या अच्छे काम उन्हें स्वर्ग ले जाने के लिए पर्याप्त हैं। ज्यादातर लोग दूसरों के साथ अपनी तुलना करके इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं, जिन्हें वे मानते हैं कि उन्होंने उनसे बड़े पाप किये हैं। यदि मैंने एक बार चोरी की तो क्या हुआ? दूसरे ने तो बैंक लुटा है। यदि मैंने झूठ बोला तो क्या हुआ, ऐसा हर बार तो नहीं होता। यदि मैं गति सीमा से बारह मील प्रति घंटे की रफ्तार से जाता हूँ तो क्या हुआ, क्योंकि दूसरा तो बीस से भी ज्यादा की गति से जाता है। यदि मैं अपनी आय छिपाता हूँ और आईआरएस से झूठ बोलता हूँ तो क्या हुआ, दूसरे तो मुझसे भी बुरा करते हैं (और वैसे भी आईआरएस बेईमान होते हैं)।

बाकी समयों पर, लोग अपने व्यवहार की अपने पुराने व्यवहार से तुलना करते हैं और सोचते हैं कि वो कितना ज्यादा बेहतर हुए हैं। मैं पहले झूठ बोलता था और चोरी करता था, लेकिन अभी नहीं करता। मैं पहले शराब पीकर गाड़ी चलाता था लेकिन अभी नहीं करता। अब मैं गालियां नहीं देता। लोग अपने पापों को उचित ठहराने के लिए नियमों पर चलना शुरू कर देते हैं। हालाँकि, बाइबिल यह नहीं कहती कि परमेश्वर एक दूसरे की आपस में तुलना करके ग्रेड देते हैं। उनका मानक सर्वोत्तमता है। बाइबिल हमें आपस में एक-दूसरे से तुलना करने के विरुद्ध चेतावनी देती है। जब हम ऐसा करते हैं तो यह कहती है कि हम किसी समझ के बिना काम करेंगे। कुछ समझे बिना काम करना बेवकूफी से काम करना होता है।

हम उन कुछ लोगों के साथ अपनी तुलना करने का साहस नहीं करते जो अपने आपको बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। लेकिन जब वे अपने आपको एक-दूसरे से मापते हैं और परस्पर अपनी तुलना करते हैं तो वे यह दर्शाते हैं कि वे नहीं जानते कि वे कितने मूर्ख हैं। 2 कुरिन्थियों 10:12

इस समानता पर विचार करिये:

मान लीजिये आप किसी चिकित्सक के पास जाते हैं और आप परीक्षण कक्ष से यह सोचकर निकलते हैं कि आप स्वस्थ हैं। जैसे ही आप निकलते हैं, नर्स आपके पास आती है और आपको कैंसर के लिए कई दवाएं पकड़ा देती है। क्या आप उन्हें लेंगे? मैं नहीं लूंगा। निदान के बिना दवाएं लेना बेवकूफी होगी।

यही सत्य सुसमाचार पर भी लागू होता है, जो परमेश्वर के सामने हमारे निदान की सही जानकारी के बिना मूर्खतापूर्ण लग सकता है। हमें यह निदान कैसे मिलता है। निम्नलिखित आयत में, दूत पौलुस हमें बताए हैं। हमारी पापी स्थिति की जानकारी हमें परमेश्वर की व्यवस्था के सामने हमारे व्यक्तिगत परीक्षण के माध्यम से होती है, ना कि दूसरे से अपनी तुलना करके या हमारे अतीत के व्यवहार से तुलना करके।

व्यवस्था के कामों से कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि व्यवस्था से जो कुछ मिलता है, वह है पाप की पहचान करना

(रोमियों 3:20, जोर दिया गया)।

संक्षेप में, व्यवस्था हमें पवित्र, न्यायपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर के सामने हमारी स्थिति का निदान प्रदान करती है। याकूब 1:23-25 में, परमेश्वर की व्यवस्था की तुलना एक आईने से की गयी है। हम अपने बाहरी स्वरुप को लेकर चिंतित रहते हैं, जबकि परमेश्वर हमारे आतंरिक स्वरुप को देखता है। उसकी व्यवस्था एक आईने की तरह काम करती है जो दिखाती है कि हमारे हृदय में क्या है।

क्योंकि परमेश्वर उस चीज़ को नहीं देखता जिसे साधारण लोग देखते हैं: लोग व्यक्ति के बाहरी रूप को देखते हैं, लेकिन यहोवा व्यक्ति के हृदय को देखता है (1 शमूएल 16:7, जोर दिया गया)।

निम्नलिखित परीक्षण परमेश्वर की व्यवस्था परमेश्वर के कानून पर आधारित है और मानवता के निम्न मानक के आधार पर कठोर लग सकता है, लेकिन यह पवित्र परमेश्वर के सामने आपकी नैतिक स्थिति का अच्छी तरह निदान कर देगा।

आप एक बार फिर से चिकित्सक के कार्यालय में हैं। आपका सही निदान, और इस प्रकार आपका जीवन, आपकी सच्चाई पर निर्भर करता है। अपने फायदे के लिए, अपने गौरव को किनारे रख दीजिये, अपनी अंतरात्मा की सुनिए और परमेश्वर के सामने पूरी तरह से ईमानदारी बन जाइये। उनके सामने और अपने आपसे स्वीकार करिये कि आपने नीचे सूचीबद्ध पांच आदेशों का कितनी बार उल्लंघन किया है (आपको निर्गमन 20 में पूरे दस आदेश मिल सकते हैं)।

क्या परमेश्वर के मापदंड से आपको लगता है कि आप अच्छे इंसान हैं?

1. आपने अपने जीवन में कितने झूठ बोले हैं? (निर्गमन 20:16)
2. क्या आपने कभी चोरी की है, चाहे यह बचपन में ही क्यों ना हो? क्या आपने कर से बचने के लिए आय चुराई है, अवैध तरीके से संगीत या फिल्में डाउनलोड की हैं, कार्यस्थल से चीजें लाये हैं, किसी बीमा के दावे पर बेईमानी की है? (निर्गमन 20:15)
3. क्या आपने कभी भी बेकार में परमेश्वर का नाम लिया है? बेकार में परमेश्वर का नाम इस्तेमाल करना या गाली के रूप में प्रयोग करना भी ईश्वर निंदा का एक रूप है। (निर्गमन 20:7)
4. क्या आपने व्यभिचार किया है? यीशु ने कहा है कि सिर्फ यौन वासना के साथ देखना भी परमेश्वर की आँखों में व्यभिचार है (मत्ती 5:28)। कभी भी किया है?
5. क्या आपने कभी किसी की हत्या की है? यीशु ने कहा है कि किसी के लिए नफरत या घृणा को भी परमेश्वर की आँखों में हत्या माना जाता है। (मत्ती 5:21-22)। कभी भी किया है?

अपने जीवन में की गयी ऐसी किसी भी गुप्त चीज पर विचार करिये जिसे आपको लगता है कि परमेश्वर माफ़ नहीं कर सकता है। वैसे भी परमेश्वर सबकुछ जानता है।

ऐसा कुछ भी छिपा नहीं है जो प्रकट नहीं किया जायेगा। ऐसा कुछ भी अनजाना नहीं है जिसे जाना नहीं जायेगा। (लूका 12:2, जोर दिया गया)।

जिसके सामने हमें अपना लेखा-जोखा देना है, उस परमेश्वर की दृष्टि में कुछ भी छिपा नहीं है, सबकुछ किसी आवरण के बिना, आँखों के सामने है (इब्रानियों 4:13, जोर दिया गया)।

परमेश्वर के सामने अपनी स्थिति की सच्चाई देखने और स्वीकार करने के बाद, आपको एक रक्षक की जरुरत होगी और आपको सुसमाचार समझ आ जायेगा।

परमेश्वर को हमारी सोच पता है।

मानवीय मानकों के आधार पर, आप और मैं यह कह सकते हैं कि हम काफी अच्छे हैं। लेकिन परमेश्वर के श्रेष्ठता के मानक की तुलना में, मेरा विवेक कहता है कि मैं झूठा, चोर, ईश्वर की निंदा करने वाला, व्यभिचारी और हत्यारा हूँ। आपका क्या कहना है? यदि आप सच्चे हैं तो आप जानते हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था ने उसके सामने आपकी अपराधी स्थिति का निदान कर लिया है। यदि आप अभी भी अपनी गतिविधियों को कम आंक रहे हैं और सही ठहरा रहे हैं तो एक क्षण के लिए सोचिये कि जब कोई आपसे झूठ बोलता है या आपसे कुछ चुराता है तो वो कितना गलत होता है। या यह सोचना कितना मूर्खता भरा है कि परमेश्वर स्वर्ग में ऐसे झूठों, चोरों, ईश्वर निंदकों, व्यभिचारियों और हत्यारों को रहने देगा जिन्हें अपनी गलतियों का कोई पछतावा नहीं है। चूँकि आप अपराधी हैं, इसलिए आपको स्वर्ग ले जाया जायेगा या नर्क? जिन लोगों से भी मैं बात करता हूँ उनमें से ज्यादातर कहेंगे नर्क, लेकिन कुछ लोग इसे नहीं मानेंगे। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ, "क्या न्यायाधीश अपराधी को डिज़्नीलैंड भेजते हैं, या वे जेल जाते हैं?" बाइबिल हमें चेतावनी देती है कि परमेश्वर का जेल नर्क है। परमेश्वर और बाइबिल के ठोस सबूत पर विचार करते हुए, क्या आपको यह सोचकर चिंता होती है कि अगर आप आज मर जाते हैं तो बाइबिल के अनुसार आप नर्क जायेंगे?

आपको इसे लेकर बहुत चिंतित रहना चाहिए और परमेश्वर भी इसकी चिंता करता है। इसीलिए यीशु आये थे: ताकि वो हमें नियमों को तोड़ने के कारण मिलने वाले दंड से बचा सकें। परमेश्वर हमें सज़ा नहीं देते हैं; बल्कि हर बार अपने विवेक की सलाह को अस्वीकार करके हम अपने साथ ऐसा करते हैं। यीशु हमें व्यवस्था के उल्लंघन के परिणामों से बचाने के लिए आये थे।

भले ही लोगों ने शैतान के बारे में सभी प्रकार के चुटकुले और नर्क के बारे में फिल्में बनायी हैं, लेकिन बाइबिल हमें एक ऐसे स्थान की चेतावनी देती है जो अनंत है, जहाँ परमेश्वर की कोई उपस्थिति नहीं है और यह बुराई और कष्टों से भरा है। हमें नहीं पता कि यह कैसा होगा, लेकिन यीशु ने हमें बार-बार किसी भी कीमत पर नर्क से बचने की चेतावनी दी है। हमें यह पता है कि वहां पर रहने वाले हर एक इंसान ने परमेश्वर की सच्चाई को अस्वीकार किया था और हमेशा उस कष्टदायक चुनाव के साथ रहेंगे जिसे वो बदल नहीं सकते हैं।

निम्नलिखित आयतों को पढ़ते समय, आपको यह याद रखना चाहिए कि साक्ष्य बताते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है। साथ ही जहाँ तक हम तथ्यों की जांच कर सकते हैं बाइबिल भी बिलकुल सही साबित हुई है। ऐसा कोई अन्य मत

नहीं है जो पूरा परिदृश्य दिखाता है और जिसकी ठोस नींव हो। बाइबिल का मुख्य जोर हमें परमेश्वर के पाप के आवश्यक निर्णय से आगाह करना है और हमें बताना है कि इस निर्णय से कैसे बचा जाए। यहाँ पर आपको इस सवाल पर विचार करने की जरुरत होती है: यदि अब तक हर बिंदु दर्शाता है कि यह सच है तो क्या इसकी थोड़ी सी भी संभावना हो सकती है कि यह भी सच होगा? ये आयतें बताती हैं कि यीशु हमें किससे बचाने आये थे। अनंत काल के लिए परमेश्वर से अलगाव ऐसा दिखाई देगा।

"लज्जा और चिरस्थायी घृणा" दानिय्येल 12:2

"चिरस्थायी दंड" मत्ती 25:46

"रोना और दांत पीसना" मत्ती 24:51

"न बुझने वाली आग" लूका 3:17

"आक्रोश और क्रोध, दुःख और संकट" रोमियों 2:8,9

"प्रभु की महिमा से अनंत विनाश" 2 थिस्सलुनीकियों 1:9

"अनन्त अग्नि...हमेशा के लिए अंधकार का कालापन" यहूदा 7,13

प्रकाशित वाक्य 14:10-11 हमें पापी की अंतिम, अनंत नियति बताता है: *"उसे आग और भट्टी में तड़पाया जाएगा... युग-युगान्तर तक उसकी यातनाओं से धुआं उठता रहेगा: और उसे रात-दिन कभी चैन नहीं मिलेगा।"*

जब आप कोई अपराध करते हैं तो आप व्यवस्था को खुद को पकड़ने और दंड देने का अधिकार देते हैं। इस समय, आप एक भगोड़े हैं जिसने परमेश्वर के नियम को अनगिनत बार तोड़ा है। अंत में परमेश्वर अनिवार्य होता है।

ज्यादातर लोगों को हत्यारों, बलात्कारियों और सिलसिलेवार हत्यारों के लिए नर्क और सज़ा के विचार से कोई आपत्ति नहीं होती है। आखिरकार, ऐसी उम्मीद कौन कर सकता है कि परमेश्वर किसी सिलसिलेवार हत्यारे का बाँहें खोलकर स्वर्ग में स्वागत करेगा? हालाँकि, पश्चाताप ना करने वाले हर एक पापी के लिए नर्क सही लगता है, क्योंकि बाइबिल कहती है कि परमेश्वर न्याय करता है और पाप का दंड जरूर मिलता है। स्वर्ग का अस्तित्व वो चीज नहीं है जिससे ज्यादातर लोगों को समस्या है; यह वो लोग हैं जो वहां जा रहे हैं। फिर भी, यही लोग यह स्वीकार करेंगे कि यह बिलकुल सही समझ आता है कि परमेश्वर का मापदंड मनुष्य के मापदंडों से कहीं ज्यादा ऊँचा होगा। हमारा विवेक इसकी पुष्टि करता है। मानव मापदंडों के अनुसार, झूठ बोलना उतना बुरा नहीं है, लेकिन परमेश्वर का दिया गया विवेक इससे इंकार करता है। यह इस बात का सबूत है कि परमेश्वर झूठ बोलने को सहमति नहीं देता है। *विवेक का अर्थ होता है जानकारी के साथ*, इसलिए जब हम झूठ बोलते हैं तो हम यह जानते हुए करते हैं कि यह गलत है। आप इसे पसंद करें या ना करें, लेकिन परमेश्वर का मापदंड हमारे मापदंड से कहीं ज्यादा बड़ा है। परमेश्वर कर्ता है और हम कृति।

आप भ्रम में पड़े हैं। आप सोचते हैं कि मिट्टी कुम्हार के बराबर है। आप सोचते हैं कि कृति अपने कर्ता से कह सकती है कि "तुमने मेरी रचना नहीं की है!" यह वैसा ही है, जैसे घड़े का अपने कुम्हार से यह कहना कि, "तुम्हें नहीं समझ आता कि तुम क्या कर रहे हो।" (यशायाह 29:16)।

लूका 13:3 और 5 में, यीशु, केवल दो विकल्प देते हैं — पश्चाताप या दंड। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ मापदंड और सुसमाचार अपरिवर्तनीय सत्य हैं, आपको चाहे यह पसंद हो या ना हो। वो हमें पश्चाताप करने की (अपना मन बदलने की) और केवल सुसमाचार में मिलने वाले हमारे रक्षक के अनुग्रह में विश्वास करने की सलाह देते हैं। वह हमें चेतावनी देते हैं कि अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम नष्ट हो जाएंगे।

यदि बाइबिल सत्य है, तो अच्छाई के लिए निर्मित परमेश्वर के नैतिक कानून, बिलकुल गुरुत्वाकर्षण की तरह, केवल इसलिए नहीं बदलेंगे क्योंकि हमें किसी और चीज पर भरोसा है। परमेश्वर के नैतिक कानून का उल्लंघन करने के वास्तविक परिणाम होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे गुरुत्वाकर्षण के कानून का उल्लंघन करने पर होते हैं। हमें पता है कि सत्य ऐसे ही काम करता है। अपने खुद के शब्दों में वर्णित, परमेश्वर की योजना केवल जो यह है उसकी सच्ची व्याख्या है। अगली छह आयतों में यीशु बोल रहे हैं, मैं आपको उन्हें सुनने के लिए प्रेरित करता हूँ।

*"... यदि तुम **मन न फिराओगे** तो तुम सब भी वैसे ही मरोगे।"* (लूका 13:5, जोर दिया गया)।

*"समय पूरा हो चुका है, और परमेश्वर का राज्य आ रहा है; **मन फिराओ और सुसमाचार में विश्वास करो।"*** (मरकुस 1:15, जोर दिया गया)।

पश्चाताप करें = मन बदलें — अपने मन को अविश्वास से विश्वास में बदलने का चुनाव करें। परमेश्वर के सत्य को वास्तविकता के रूप में मानें, अपने आपको विनम्र बनाएं और परमेश्वर की ओर मुड़ें, अपने पापों को स्वीकार करें, और अपने आपको परमेश्वर के अनुग्रह और दया पर समर्पित कर दें, जो केवल ईसा मसीह में मिलता है।

"परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने अपने एकमात्र पुत्र को दे दिया, ताकि हर वह इंसान जो उसमें विश्वास रखता है, नष्ट न हो जाये बल्कि उसे अनंत जीवन मिल जाए। परमेश्वर ने अपने बेटे को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि वह दुनिया को अपराधी ठहराये बल्कि उसे इसलिए भेजा कि उसके द्वारा दुनिया का उद्धार हो। जो उसमें विश्वास रखता है उसे दोषी ना ठहराया जाए पर जो उसमें विश्वास नहीं रखता, उसे दोषी ठहराया जा चुका है क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम में विश्वास नहीं रखा है" (यूहन्ना 3:16-18, जोर दिया गया)।

"मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो मेरे वचन को सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, वह अनंत जीवन पाता है। न्याय का दण्ड उस पर नहीं पड़ेगा। इसके विपरीत वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश पा जाता है" (यूहन्ना 5:24, जोर दिया गया)।

"इसलिए मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपने पापों में मरोगे। यदि तुम विश्वास नहीं करते कि वह मैं हूँ तो तुम अपने पापों में मरोगे" (यूहन्ना 8:24, जोर दिया गया)।

उसके बाद लोगों ने उससे पूछा, "जिन कामों को परमेश्वर चाहता है, उन्हें करने के लिए हम क्या करें?" उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "परमेश्वर जो चाहता है, वह यह है कि जिसे उसने भेजा है उस पर विश्वास करो" (यूहन्ना 6:28-29, जोर दिया गया)।

और परमपिता परमेश्वर से:

आज मैं तुम्हें दो मार्ग को चुनने की छूट दे रहा हूँ। मैं धरती-आकाश को तुम्हारे चुनाव का साक्षी बना रहा हूँ। तुम जीवन चुन सकते हो, या तुम मृत्यु को चुन सकते हो। जीवन का चुनाव वरदान लाएगा और मृत्यु को चुनना अभिशाप। इसलिए जीवन को चुनो। तब तुम और तुम्हारे बच्चे जीवित रहेंगे। व्यवस्था विवरण 30:19

यीशु क्यों आये थे?

निम्नलिखित सूची में ध्यान दें कि संदेश कितना स्पष्ट है। यीशु अधर्मी -- पापी को बचाने आये थे -- और हम सभी उसके योग्य हैं।

पापियों को बचाने के लिए - 1 तीमुथियुस 1:15

पापियों को पश्चाताप करने के लिए कहने के लिए - मरकुस 2:17

खोए हुओं को खोजने और बचाने के लिए - लूका 19:10

पापियों के लिए खुद को रिहाई के रूप में देने के लिए – मत्ती 20:28

अधर्मी के लिए मरने के लिए – रोमियों 5:6

सच्चाई की गवाही देने के लिए - यूहन्ना 18:37

अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए - यूहन्ना 6:38

संसार का प्रकाश बनने के लिए - यूहन्ना 12:46

सुसमाचार की घोषणा और प्रचार

करने के लिए - मरकुस 1:38

सूली पर मरने के लिए - यूहन्ना 12:27

व्यवस्था का पालन करने के लिए –

मत्ती 10:34-35

उस पिता को प्रसन्न करने के लिए

जिसने उसे भेजा था - यूहन्ना 20:21

हमारे पापों का भुगतान करने के लिए

- 1 यूहन्ना 4:10

संसार का उद्धारक बनने के लिए -

यूहन्ना-3:16-18

हमें व्यवस्था के अभिशाप से मुक्त

करने के लिए – गलातियों 4:4-5

परमेश्वर का प्रेम दिखाने के लिए - 1

यूहन्ना 4:10

निरंतर आपत्तियां

मैंने हज़ारों लोगों को सीधे अच्छे इंसान की परीक्षा दी है, और मैं उन कुछ आपत्तियों के लिए अपनी प्रतिक्रिया देना चाहता हूँ जो अक्सर मुझे सुनने को मिलती हैं।

परमेश्वर सबको क्षमा करता है। बाइबिल यह नहीं सिखाती कि सभी लोगों को माफ़ किया जाता है, केवल उन लोगों को क्षमा मिलती है जो अपने मन को अविश्वास से विश्वास में बदलते हैं। व्यक्ति के विश्वास करने के बाद, वे खुद स्वाभाविक रूप से न्याय वाले दिन परमेश्वर से रक्षा के लिए यीशु के पास धार्मिकता में भागता है। यीशु ने हमारे पापों के लिए भुगतान कर दिया था, इसलिए हमें भुगतान करने की जरुरत नहीं है, इसलिए हमें माफ़ किया जा सकता है।

मैं झूठा नहीं हूँ। मैं बस सबकी तरह एक इंसान हूँ। यह हमारे पापों को सही ठहराने का केवल एक प्रयास है, यदि इसे जारी रखा जाता है, तो यह व्यक्ति को हमेशा अपनी जरूरतों के लिए अँधा बनाकर रखता है और परमेश्वर के रक्षक हाथों की शरण में नहीं जाने देता। सोचिये कि हत्यारा बनने के लिए आपको कितने खून करने होंगे या बलात्कारी बनने के लिए कितने बलात्कार करने होंगे। केवल एक, है ना? चूँकि ज्यादातर लोग मुझसे कहते हैं कि उन्होंने कई बार झूठ नहीं बोला है तो झूठा बनने के लिए आपको कितने झूठ बोलने पड़ते हैं? क्या ऐसी कोई निश्चित संख्या है और जिसके बाद घंटी

बजती है? यदि आप अभी भी अनिश्चित हैं तो अगर मैं आपसे कोई सफ़ेद झूठ बोल दूँ तो आप मुझे क्या कहेंगे?

मुझे नर्क में विश्वास नहीं है। तो क्या हुआ? तथ्य बाइबिल का समर्थन करते हैं। यदि यह सच है तो यह आपके ऊपर लागू होता है -- चाहे आप इसे माने या ना माने। यह स्पष्ट है कि यीशु हमें बचाने के लिए आये थे और वो हमें पश्चाताप करने या नष्ट होने की सलाह देते हैं। यदि हम सभी परिणामों को नहीं समझते हैं तो क्या यीशु का बलिदान और चेतावनी आपको सोचने पर मजबूर करने के लिए पर्याप्त नहीं है? यदि कोई परिणाम नहीं होते तो यीशु वो क्यों करते जो उन्होंने किया था?

मैं ऐसे परमेश्वर में विश्वास करने से इंकार करता हूँ जो मुझे नर्क में जलने की धमकी देता है। यदि आप सो रहे हैं और मैं आपको जगाने के लिए और यह बताने के लिए आपका दरवाज़ा खटखटाऊँ कि आपके घर में आग लग गयी है तो क्या वो धमकी होगी; यह चेतावनी होगी, जो मैं इसलिए दूंगा क्योंकि मुझे आपके जीवन की चिंता है। उसी तरह, यीशु हमें धमकी नहीं दे रहे हैं। हमारे लिए अपने प्यार के कारण वो हमें तथ्यों की चेतावनी दे रहे हैं, कि उनकी सहायता के बिना हमारा भविष्य क्या है। उन्हें हमारी अनंत नियति की परवाह है, और वह चाहते हैं कि हम सही चुनाव करें। विरोध करना छोड़ दीजिये और यीशु के पास जाइये, जो आपसे प्यार करते हैं और आपको बचा सकते हैं। हमारे निर्णय की गंभीरता पर जोर देने के लिए अतिशयोक्ति नामक भाषा के अतिरंजित रूप का प्रयोग करके, यीशु हमें चेतावनी देते हैं:

"और यदि तुम्हारी आँख तुम्हारे लिए बाधा बने तो उसे बाहर निकाल कर फेंक दो, क्योंकि स्वर्ग में काना होकर अनंत जीवन में प्रवेश करना तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है; बजाय इसके कि दोनों आँखों समेत तुम्हें नरक की आग में डाल दिया जाए" (मत्ती 18:9)।

मैं ऐसे परमेश्वर पर विश्वास नहीं करना चाहता जो मुझे अपने पास लाने के लिए भय का प्रयोग करता है। सच्चाई यह है कि परेमश्वर आपसे प्यार करता है और इसलिए आपको उसकी चेतावनी दे रहा है जो होना निश्चित है यदि आप उसके परामर्श को अनदेखा या अस्वीकार करते हैं। यदि मैं आपको एम्पायर स्टेट की इमारत के सबसे ऊपर ले जाकर, वहां रेलिंग से उल्टा लटका दूँ तो क्या आप इसलिए गुरुत्वाकर्षण का सम्मान करना बंद कर देंगे क्योंकि नीचे देखने पर आपको भय का अनुभव होता है? ऐसी कुछ चीजें हैं जिनसे भय होना उचित होता है, और यह जानकारी ही अक्सर हमें जीवन में ज़िंदा रखती है। बाइबिल कहती है:

यहोवा का भय मानना ज्ञान की शुरुआत है; लेकिन मूर्ख जन तो बुद्धि और अनुशासन को तुच्छ मानते हैं (नीतिवचन 1:7)।

यीशु हमारी प्राकृतिक प्रवृत्ति के विरुद्ध जाते हैं और, हमारे लिए अपने प्यार के कारण, हमें ऐसे इंसानों से भी ना डरने की चेतावनी देते हैं जो हमें मार सकते हैं, परमेश्वर की तुलना में जो हमारा जीवन ले सकते हैं और हमें नर्क में डाल सकते हैं।

"मेरे दोस्तों, मैं तुम्हें बताता हूँ, उनसे मत डरो जो बस तुम्हारे शरीर को मार सकते हैं, और उसके बाद ऐसा कुछ नहीं है जो उनके बस में हो। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि तुम्हें किससे डरना चाहिए। उससे डरो जो तुम्हें मारकर नरक में

डालने की शक्ति रखता है। हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ, बस उसी से डरो।" (लूका 12:4-5, जोर दिया गया)।

जब भी आप किसी चोटी के किनारे खड़े होते हैं या किसी ऊँची बालकनी की रेलिंग से नीचे देखते हैं तब गुरुत्वाकर्षण के लिए आपके मन में जो सम्मानपूर्ण डर आता है उसके बारे में सोचिये। यह दर्शाता है कि कैसे हमें गुरुत्वाकर्षण के निर्माता, अर्थात परमेश्वर, का सम्मान करने की जरुरत है। यीशु जब परमेश्वर, ब्रह्माण्ड के निर्माता, से डरने के लिए कहते हैं तब वो ऐसे ही भय की बात करते हैं। वह अपने हाथ में हमारी क्षमा रखते हैं। अच्छी खबर यह है कि बाइबिल भी कहती है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपको आपके पापों के लिए निंदा से बचाना चाहता है। यदि आपको डर लगता है तो इसे खुद को प्रोत्साहित करने दें। अपना मन बदलिये और परमेश्वर के पास जाइये, जो एकमात्र ऐसा है जो आपको बचा सकता है और आपकी रक्षा कर सकता है।

मुझे नर्क जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता। बाइबिल अनंत कष्ट की बात करती है। अगर आपके पास विकल्प हो तो क्या आप स्वर्ग जाना चाहेंगे? आप जरूर जाना चाहेंगे। बाइबिल हमें अच्छा समाचार सुनाती है—परमेश्वर आपको बचाना चाहता है। परमेश्वर हमें मृत्यु नहीं बल्कि जीवन चुनने के लिए भी कहता है। वह आपके लिए है, आपके विरुद्ध नहीं है।

जो सभी लोगों का उद्धार चाहता है और चाहता है कि वे सत्य को पहचाने (1 तीमुथियुस 2:4)।

प्रभु अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में देर नहीं लगाता, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं, बल्कि वह हमारे प्रति धीरज रखता है, क्योंकि वह किसी भी व्यक्ति को नष्ट नहीं होने देना चाहता, बल्कि वह तो चाहता है कि सभी पश्चाताप की ओर बढ़ें (2 पतरस 3:9)।

उनका क्या जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना? मैं नहीं मान सकता कि परमेश्वर केवल इसलिए किसी को नर्क भेजेगा क्योंकि वो उसपर विश्वास नहीं करता। यह सच है कि कुछ लोगों ने यीशु के बारे में नहीं सुना होगा, लेकिन हमने सीखा है कि बाइबिल कहती है कि सृष्टि और हमारे विवेक के माध्यम से सबके लिए परमेश्वर जाहिर है। मान लीजिये आप ऊपर हवाई जहाज़ में हैं और पैराशूट लिए बिना ही कूदने का चुनाव करते हैं। आपके मरने का पहला कारण यह नहीं होगा कि आपने पैराशूट नहीं पहना, बल्कि ऐसा इसलिए होगा क्योंकि आपने गुरुत्वाकर्षण के नियम का उल्लंघन किया। पाप के साथ भी हमारे पास ऐसी ही स्थिति है, क्योंकि हर व्यक्ति ने अपने विवेक पर लिखे परमेश्वर के नियम का उल्लंघन किया है। बाइबिल कहती है कि हमारे व्यवस्था के नियमों को तोड़ने के कारण ही हम दंड के पात्र बनते हैं। यीशु रक्षक हैं, एक पैराशूट, जिसे परमेश्वर हमें व्यवस्था के दंड से बचाने के लिए मुफ्त में प्रदान कर रहा है। यदि कोई पैराशूट पहनने से इंकार करता है तो यह उनका चुनाव है, परमेश्वर का नहीं।

जब हम उनके बारे में सोचते हैं जिन्होंने कभी यीशु या सुसमाचार के बारे में नहीं सुना है, तो यह उन स्थानों में से एक है जहाँ हमें आस्था को प्रवेश करने देने की जरुरत होती है। हमें पता है कि परमेश्वर की प्रकृति नैतिकता का शिखर है जैसा कि यीशु के जीवन और शिक्षाओं में प्रदर्शित होता है। उन्होंने हमें बचाने के लिए जो परम बलिदान दिया उसमें उनके बेशर्त प्यार को देखा जा सकता है। इसलिए, ईसाई, आस्था से, मानते हैं कि परमेश्वर उन सभी लोगों के साथ सबसे न्यायोचित तरीके से निपटेंगे जिन्होंने यीशु के बारे में नहीं सुना है।

इसके अतिरिक्त, बाइबिल दर्शाती है कि छोटे बच्चे मरने के बाद स्वर्ग जाते हैं। इसके अलावा, मध्य पूर्व से आयी हालिया रिपोर्ट के अनुसार मसीह के पास आने वाले पचास प्रतिशत मुस्लिम अपने सपनों के कारण ऐसा कर रहे हैं, जिससे पता चलता है कि परमेश्वर कहीं भी लोगों तक पहुँच सकता है। गूगल करें: मुस्लिम सपने और दर्शन के माध्यम से मसीह के पास आ रहे हैं।

reasonablefaith.org के डॉ विलियम लेन क्रेग द्वारा सुझावित एक अन्य संभावना यह है कि जिन लोगों ने यीशु के बारे में नहीं सुना उन्हें परमेश्वर ने ही ऐसी जगह पर रखा है जहाँ वो हैं क्योंकि उसे पता था कि अगर वो उसके बारे में सुनते तो भी उसे अस्वीकार कर देते। चूँकि आप उनमें से नहीं हैं जिन्होंने नहीं सुना, इसलिए सबसे अच्छी चीज आप यह कर सकते हैं कि आप परमेश्वर के सामने अपने पापों का प्रायश्चित करें और इसके बाद जाकर किसी को बताएं।

तीसरी संभावना यह है कि जिन लोगों ने यहाँ सुसमाचार नहीं सुना उन्हें मरने के बाद इसे सुनने का मौका मिलेगा। हालाँकि यह विवादस्पद है, लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत अच्छी संभावना है। बाइबिल कहती है कि केवल सुसमाचार सुनने वाले ही विश्वास कर सकते हैं। परमेश्वर न्यायपूर्ण हैं, और यदि कोई सुसमाचार नहीं सुनता तो उन्हें इसपर विश्वास ना करने के लिए दंड नहीं दिया जा सकता है। बाइबिल कहती है कि जब यीशु सूली पर मरे तब उन्होंने अधर्मियों को धर्मी घोषित किया जिन्होंने नूह के दिन परमेश्वर के नूह के संदेह में भरोसा नहीं किया था। अधर्मियों के लिए धर्मी सुसमाचार है।

सुसमाचार को केवल इसलिए घोषित किया जाता है ताकि लोग इसे सुनकर इसपर विश्वास कर सकें। ये आयतें हमें बताती हैं कि जिन लोगों के लिए उन्होंने इसे घोषित किया था उन्होंने पहले उन्हें नहीं माना था, जो दर्शाता है कि शायद बाद में उन्होंने यीशु के उपदेशों के लिए अपना मन बदल दिया होगा।

क्योंकि मसीह ने भी हमारे पापों के लिए दुःख उठाया, अर्थात वह जो निर्दोष था, हम पापियों के लिये एक बार मर गया, ताकि हमें परमेश्वर के समीप ले जाये। शरीर के भाव से तो वह मारा गया पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। आत्मा की स्थिति में ही उसने जाकर उन स्वर्ग की बंदी आत्माओं को संदेश दिया, जो उस समय परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानने वाली थी, जब नूह की नाव बनायी जा रही थी और परमेश्वर धीरज के साथ प्रतीक्षा कर रहा था, उस नाव में थोड़े, अर्थात केवल आठ व्यक्ति, ही पानी से बच पाये थे। 1 पतरस 3:18-20

मेरी राय में, यह अवसर उन लोगों के लिए नहीं लागू होता जिन्होंने अपने जीवन में सुसमाचार के बारे में सुनकर इसे अस्वीकार कर दिया था। यह केवल उनपर लागू होता है जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना। नूह के दिन वाले लोगों कभी सुसमाचार नहीं सुना था। चूँकि आपने इसे सुना है इसलिए यह तीसरी संभावना आपके ऊपर लागू नहीं होती है। अब आपके पास परमेश्वर के रक्षक हाथ, सुसमाचार, पर विश्वास करने या इसे अस्वीकार करने का अवसर है।

तीसरी संभावना के बारे में और अधिक पढ़िए। गूगल: माइकल एडवर्ड्स का नया वाचा बाइबिल अध्ययन - उनका क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु या सुसमाचार को नहीं सुना

मैं भरोसा नहीं कर सकता क्योंकि मेरा एक प्रियजन यीशु में विश्वास ना करते हुए मरा था और इसका मतलब होगा कि वो नर्क चला गया। मैं समझता हूँ आपको कैसा लग रहा होगा; मेरे भी ऐसे प्रियजन हैं जिनकी मृत्यु हो चुकी है और मुझे उनके गंतव्य के बारे में नहीं पता है। लेकिन यदि आप पहले मर जाते और नर्क की वास्तविकता का अनुभव कर लेते तो क्या आप यीशु द्वारा कही गयी निम्नलिखित कहानी के आदमी की तरह सच्चे दिल से यह नहीं चाहते कि कोई और वहां ना जाए? आपके परिवार और उन दोस्तों का क्या जो अभी भी ज़िंदा हैं? क्या आप चाहेंगे कि आपका परिवार परमेश्वर के अनुग्रह को केवल इसलिए अस्वीकार करे क्योंकि आपने ऐसा किया था?

तो फिर हे पिता, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप उसे मेरे पिता के घर भेज दें, क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं, वह उन्हें चेतावनी देगा ताकि उन्हें तो कम से कम इस यातना के स्थान पर न आना पड़े (लूका 16:27-28)।

यदि आपके परिवार के मृत सदस्य या दोस्त ने सुसमाचार सुनकर इसे अस्वीकार कर दिया था तो यह उनकी मुक्त इच्छा थी।

साक्ष्य मुझे सोचने पर मजबूर करते हैं, लेकिन फैसला करने से पहले मैं चीजों को थोड़ा और जांचना चाहता हूँ। बहुत अच्छा! मैं आपको इसी समय अपनी खुद की जांच करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। बस इस बात का ध्यान रखें कि यह परमेश्वर को नज़रअंदाज़ करने का कोई और बहाना ना हो। आप उन लगभग 155,000 लोगों में से एक हो सकते हैं जो आज मरने वाले हैं।

परमेश्वर ने मुझे इस जन्म में प्रसिद्धि और समृद्धि दी है। मुझे विश्वास है कि मैं जैसा हूँ उससे वो खुश है। यह गलत तर्क इस निष्कर्ष को दर्शाता है कि परमेश्वर दुनिया के अमीर अपराधियों से खुश हैं, और उन लोगों से खुश नहीं हैं जिन्होंने संपत्ति को छोड़कर अपना जीवन दूसरों की सहायता करने में लगा दिया है, या यीशु और उनके शिष्यों से खुश नहीं था जो गरीब थे। सभी लोगों को पश्चाताप करने की और यीशु पर भरोसा करने की जरुरत होती है। अपने आपको विनम्र बनाएं और ऐसा करना अमीरों के लिए बहुत कठिन हो सकता है:

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि एक धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर पाना कठिन है। हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि किसी धनवान व्यक्ति के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने की तुलना में एक ऊँट का सूई के छेद से निकल जाना आसान है।" (मत्ती 19:23-24).

लेकिन मुझे पता है कि मैं अच्छा इंसान हूँ

अपनी परमेश्वर के आदेशों से तुलना करने के बाद भी, कुछ लोग कहते हैं कि वो परमेश्वर की नज़रों में लायक हैं। दरअसल, आमतौर पर ये वो लोग होते हैं जिन्होंने मानव मापदंडों के हिसाब से अच्छा जीवन बिताया है और इसलिए लोग इन्हें अच्छा समझते हैं। स्वाभाविक रूप से, वे इस बात को सोच भी नहीं सकते कि वो नर्क में जा सकते हैं।

ऐसे हज़ारों लोगों से अपनी मुलाक़ात के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि जो लोग लगातार अपनी अच्छाई का बचाव करते रहते हैं उन्होंने अपने मन में परमेश्वर के मानक को कम कर दिया है और लगातार अपने आपकी दूसरों से

तुलना करते रहते हैं। उनका मानना होता है कि परमेश्वर हर इंसान के अच्छे और बुरे कर्मों को तौलेगा, और ऐसा करके, वो उन्हें स्वीकार करने योग्य मानेगा। आमतौर पर, वे अपने मन में एक लकीर खींच लेते हैं और कहते हैं कि अगर वो परमेश्वर होते तो उस लकीर के दूसरी तरफ खड़ा कोई भी इंसान (उदाहरण एक लिए: हत्यारे, बलात्कारी और चोर) स्वर्ग में नहीं आ पाता। दुर्भाग्य से, अन्य लोग परमेश्वर के मापदंड के अनुसार नहीं हैं। इसका आधार सूली के कदमों पर है; हर इंसान मोक्ष पाने के लिए मसीह के पास आ सकता है। हममें से कोई भी अपने आप में लायक नहीं है।

इस सच्चाई का विरोध अक्सर अभिमान से आता है, जिसे बाइबिल परमेश्वर के लिए तिरस्कार मानती है। जो लोग अभिमान में रहते हैं वो कभी भी परमेश्वर के रक्षक अनुग्रह को स्वीकार करने की जरुरत को नहीं पहचान पाएंगे। मैं अपने जीवन में बहुत अभिमानी रहा हूँ, इसलिए मुझे उम्मीद है कि आगे मैंने आपके लिए जो प्रस्तुत किया है उससे आप परमेश्वर की स्थिति को ज्यादा अच्छी तरह से देख पाएंगे। निम्नलिखित दृष्टांत में यीशु ऐसे किसी भी व्यक्ति की त्रुटि को स्पष्ट रूप से इंगित करता है जो मानता है कि वह परमेश्वर की नज़रों में लायक है।

"दो लोग मंदिर में प्रार्थना करने गए, एक फ़रीसी था और दूसरा कर वसूलने वाला। वह फ़रीसी अलग खड़ा होकर यह प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि मैं दूसरे लोगों जैसा डाकू, ठग और व्यभिचारी नहीं हूँ और न ही इस कर वसूलने वाले जैसा हूँ। मैं सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूँ और अपनी समूची आय का दसवाँ भाग दान देता हूँ।' लेकिन वह कर वसूलने वाला जो दूर खड़ा था और यहाँ तक कि स्वर्ग की ओर अपनी आँखें तक नहीं उठा रहा था, अपनी छाती पीटते हुए बोला, 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया करो।' मैं तुम्हें बताता हूँ, यही मनुष्य धर्मी बनकर अपने घर लौटा, न कि वह दूसरा। क्योंकि हर वह व्यक्ति जो अपने आप को बड़ा समझेगा, उसे छोटा बना दिया जायेगा और जो अपने आप को दीन मानेगा, उसे बड़ा बना दिया जायेगा।" (लूका 18:10-14).

फ़रीसी को लगता था कि वह लायक है, इसलिए उसके अभिमान ने उसे यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया कि परमेश्वर उससे संतुष्ट होगा, विशेष रूप से दूसरे आदमियों की तुलना में। वहीं दूसरी तरफ, उस कर वसूलने वाले व्यक्ति ने परमेश्वर के सामने अपने पाप को स्वीकार किया और अपने आपको परमेश्वर की दया और अनुग्रह में समर्पित कर दिया। यीशु बताते हैं कि जिस कर वसूलने वाले ने अपने आपको दीन समझकर परमेश्वर से क्षमा मांगी थी उसे क्षमा कर दिया गया, ना कि उस व्यक्ति को जिसे उसके साथ रहने वाले लोग अच्छे इंसान के रूप में देखते होंगे।

परमेश्वर के सामने कुछ को उचित ठहराने के प्रयास में आपको दूसरों पर राय बनाने की जरुरत पड़ती है। यह निष्कर्ष निकालने के लिए कि आप लायक है, जैसे फ़रीसी ने निकाला था, आपको यह जानने की जरुरत होती है कि क्या लायक है और क्या सर्वश्रेष्ठ है। जब आप यह कहते हैं कि आप लायक हैं तो आप यह कह रहे होते हैं कि कुछ लोग लायक नहीं हैं। जबकि, परमेश्वर सभी को न्याय और सज़ा से बचाना चाहता है।

कुछ लोग जो परमेश्वर के सामने अपनी अच्छाई बनाये रखते हैं उन्हें इस संभावना से दुःख होता है कि कुछ लोग अपना पूरा जीवन पाप में बिताकर अंत समय में प्रार्थना करके परमेश्वर को धोखा दे सकते हैं। यदि यह आप हैं तो चिंता ना करें। परमेश्वर सभी का स्वर्ग में स्वागत करता है, लेकिन ऐसी प्रार्थना परमेश्वर

को बेवकूफ नहीं बना सकती जिनमें विनम्रता, हृदय का सच्चा पश्चाताप और यीशु में सच्चा विश्वास ना हो। यह बस परमेश्वर के प्रस्ताव को अस्वीकार करने का एक और बहाना है। विशेष रूप से जब परमेश्वर की बात आती है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि और कोई क्या करता है, केवल इस बात से फर्क पड़ता है कि आप क्या करते हैं।

मैं यह स्वीकार करूँगा कि पापों के स्पष्ट इतिहास वाले लोगों के लिए अपने लिए रक्षक की जरुरत को देखना काफी आसान है। इसी कारण से वेश्याएं और चोर यीशु से आकर्षित हुए, और जो अपने आपको लायक समझते थे वो उनसे दूर रहे। लेकिन सच्चाई यह है कि हममें से सर्वश्रेष्ठ लोगों में भी कमियां मौजूद हैं।

और यीशु ने उन्हें जवाब दिया, "क्या तुम्हें लगता है कि ये गलीली दूसरे सभी गलीलियों से ज्यादा पापी थे, क्योंकि उन्हें ये सब भुगतना पड़ा? नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुम सब भी वैसी ही मौत मरोगे जैसे वे मरे थे" (लूका 13:2-3, जोर दिया गया)।

वे लोग जो खुद को अच्छा समझते हैं वे इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते कि जिन लोगों ने यीशु को सूली पर चढ़ाया था उन्हें भी माफ़ किया जा सकता है और बचाया जा सकता है। लेकिन जब यीशु ने सूली पर से उनका मज़ाक उड़ाने वाले और अपमान करने वालों को देखा, जो उन्हें बुरी तरह से पीटने और सूली पर चढ़ाने के दोषी थे, उन्होंने उसके विपरीत बात कहकर उनके लिए अपना प्रेम दिखाया जो हम कहते।

और यीशु बोला, "परम पिता, इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)।

लोग इसे सही से नहीं समझ पाते और सोचते हैं कि यह अच्छा बनने के बारे में है, जबकि असल में यह भटकने और इसे ना जानने के बारे में है। यीशु सभी भटके हुओं को बचाने का लक्ष्य लेकर आये थे। वो हमें आंशिक रूप से बचाने और यह देखने के लिए नहीं आये थे कि हम स्वर्ग जाने के लायक हैं या नहीं। उन्होंने नालायकों को भी लायक बनाया। वह दुष्ट, पापी के लिए मरा। अपनी आँखों के सामने सच्चाई (यीशु) को अस्वीकार करना ना बच पाने का एकमात्र तरीका है।

"आप मुझे कह रहे हैं कि आपको बदलने की जरुरत नहीं है, कि आप जैसे हैं वैसे ठीक हैं। जब मैं आपको देखता हूँ तो मैं आपको अपने जीवन में वो सब भरते हुए देखता हूँ जो आपको मिल सकता है। यह उम्मीद करते हुए और कामना करते हुए कि यह संसार आपके मन को थोड़ी शांति दे सकता है। खैर, खोजना बंद करिये, क्योंकि वो आपकी आँखों के सामने है।" शॉन मैकडोनाल्ड, *डोंट वाक अवे*।

मनुष्य का पतन

सभी के लिए रक्षक के रूप में यीशु की जरुरत पर ज्यादा बल देने के लिए, मैं यह बताना चाहता हूँ कि जहाँ तक पाप की बात आती है, परमेश्वर की व्यवस्था कितनी सख्त होती है। मनुष्य के पाप में गिरने के सामान्य विवरण को मनुष्य का पतन कहा जाता है। मैं इस स्थिति की तुलना गुरुत्वाकर्षण के नियम से करना चाहता हूँ, जहाँ अपनी मौत तक पहुँचने के लिए आपको चोटी के किनारे पर बस एक कदम बढ़ाने की जरुरत होती है। परमेश्वर के प्राकृतिक नियमों, जैसे गुरुत्वाकर्षण, को बहुत

अच्छाई के लिए स्थापित किया गया था, लेकिन वे लोगों का सम्मान नहीं करते, हमें उनका सम्मान करना चाहिए। इसका अर्थ निकलता है कि यही बात परमेश्वर के नैतिक कानून के साथ भी सत्य होगी, जिसे बाइबिल पाप और मृत्यु का नियम कहता है। बाइबिल के अनुसार हमें सर्वश्रेष्ठ नैतिकता की चोटी से गिरने में पाप के केवल एक कदम की जरुरत पड़ती है और हम अपने आपको गिरता हुआ पाते हैं, और हमारे पास खुद को बचाने की कोई उम्मीद नहीं होती है।

क्योंकि यदि कोई भी समग्र व्यवस्था का पालन करता है और एक बात में चूक जाता है तो वह समूची व्यवस्था के उल्लंघन का दोषी हो जाता है (याकूब 2:10, जोर दिया गया)।

हालाँकि यह कठोर प्रतीत होता है, लेकिन इसका मतलब है कि परमेश्वर से हमें अलग करने के लिए केवल एक पाप की जरुरत पड़ती है। वह हमारे भले के लिए यह चेतावनी देते हैं ताकि हम कार्यवाही कर सकें और समाधान खोजें। बाइबिल के मुख्य विषयों में परमेश्वर की पवित्रता, हमारा पाप, और परमेश्वर की हमें बचाने की योजना शामिल है। वो हमसे प्रेम करता है, और वो केवल आपके सहयोग से आपको बचा सकता है। आप केवल अपनी पापी स्थिति की सच्चाई को समझकर और स्वीकार करके उसका सहयोग कर सकते हैं। हमारे अध्ययन के इस मोड़ पर, परमेश्वर के प्रस्ताव को स्वीकार करने वालों के लिए एक अन्य चेतावनी पर ध्यानपूर्वक विचार करना सही समझ आता है, जिसमें मानव जाति के ऐसे पाप शामिल हैं जिन्हें वो उतना बुरा नहीं मानते हैं।

"लेकिन कायरों, अविश्वासियों, दुर्बुद्धियों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूटोना करने वालों, मूर्तिपूजकों और सभी झूठ बोलने वालों को भभकती गंधक की जलती झील में अपना हिस्सा रखना होगा, यही दूसरी मृत्यु है" (प्रकाशित वाक्य 21:8, जोर दिया गया)।

बाइबिल बिलकुल स्पष्ट है। भले ही आपने मदर टेरेसा की तरह दूसरों का भला करने में अपना पूरा जीवन बिताया है, फिर भी आप परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ मानक तक नहीं पहुँच पाएंगे। आपको पश्चाताप करना होगा (अपना मन बदलना होगा) और हमारे पापों के लिए सूली पर यीशु द्वारा किये गए बलिदानों को भुगतान स्वरुप स्वीकार करना होगा। जो लोग ऐसा नहीं करते उन्हें अनंत रूप से परमेश्वर से अलग रहकर अपने पापों का भुगतान खुद ही करना पड़ेगा।

बाइबिल कहती है कि यीशु हमें सही ठहराने आये थे—हमें परमेश्वर की नज़रों में सही बनाने के लिए। अपने आपको को लायक समझना आत्म-औचित्य है। यह परमेश्वर से यह कहना है कि आपको उसकी मदद की जरुरत नहीं है। वह आपकी मदद केवल तभी कर सकते हैं जब आप यह स्वीकार करते हैं कि आप अपनी मदद नहीं कर सकते और उसे पुकारते हैं।

कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों के अनुसार चलकर नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा ही धर्मी बन सकता है (रोमियों 3:28)।

आस्था परिदृश्य में आती है

क्या आपको जमी हुई झील के दूसरी तरफ बर्फ पर चलने वाली मेरी समानता याद है? इसे पार करना शुरू करने से पहले, हमने तथ्यों को भली-भांति जांच लिया था। लेकिन आखिरकार, दूसरी तरफ जाने के लिए हमने जो कुछ भी पता लगाया था उसमें हमें विश्वास जोड़ने की जरुरत पड़ी थी। परमेश्वर और बाइबिल के संबंध में हम अभी वहीं खड़े हैं। साक्ष्य ने हमारे कई सवालों के जवाब दे दिए हैं, और, अब तक, बाइबिल और परमेश्वर की जांच हो गयी है। हमने यीशु के बारे में सच्चाई का सत्यापन कर लिया है और हमें यह फैसला करने की जरुरत है कि हम उसके दावों पर विश्वास करना चाहते हैं या नहीं, जिसका सत्यापन नहीं किया जा सकता है। यहाँ पर हमें आस्था की जरुरत पड़ती है।

यह जानते हुए कि बाइबिल के अनुसार हम नर्क की ओर जा रहे हैं, पहली बार सुनने पर आशीर्वाद जैसा नहीं लगता — अगर आपको कोई भयानक लेकिन इलाज करने योग्य बीमारी होती और आप इसे नहीं जानते तो कभी इलाज

करवाने नहीं जाते। लेकिन एक बार बीमारी का पता चल जाने पर, मौत का डर आपको सभी चीजों को दरकिनार करके इलाज के लिए चिकित्सक के पास जाने के लिए प्रेरित करेगा। उसके पास जाने के बाद, आपको बचने के लिए उसकी सलाह पर ध्यान देने की जरुरत होगी। इसी प्रकार, अपनी पापी स्थिति के निदान को किसी भी भटकाव को दरकिनार करने के लिए प्रेरित करने दें। परमेश्वर को सुनें, जो आपसे प्रेम करते हैं और आपकी परवाह करते हैं और उनके पास आपके रोग का इलाज है—सुसमाचार यह है कि परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए सूली पर अपनी जान दी। यह परम साक्ष्य है और इस बात का निर्विवाद प्रमाण है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपको बचाना चाहता है।

क्योंकि जब हम अभी भी निर्बल थे तो मसीह ने सही समय पर हम अधर्मियों के लिए अपना बलिदान दिया। क्योंकि किसी धर्मी के लिए शायद ही कोई मरता होगा—हालाँकि किसी अच्छे इंसान के लिए शायद कोई मरने की हिम्मत कर लेगा। पर परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम दिखाया, जब कि हम तो पापी ही थे, लेकिन यीशु ने हमारे लिये प्राण त्यागे (रोमियों 5:6-8)।

हम अच्छे जीवन के लिए यीशु में अपनी आस्था और विश्वास नहीं लगाते। हमें विश्वास है कि वो हमें धर्मी बनाएंगे: परमेश्वर के सामने सही बनाएंगे। यह "महान विनिमय" है जिनमें यीशु हमारे पाप के लिए अपनी धार्मिकता प्रदान करते हैं।

क्या आप अनुग्रह से मिले?

जब हम परमेश्वर के सामने अपने अपराध को स्वीकार करते हैं तब पहली प्रतिक्रिया के रूप में हम अच्छा काम करके अपने आपको ठीक करने का प्रयास कर सकते हैं। लेकिन किसी ऐसे इंसान के बारे में सोचिये जिसने कई अपराध किये हैं और सालों तक नहीं पकड़ा गया है। उसे पता है कि जो उसने किया वो गलत था, इसलिए वो अपने जीवन को सुधारने में लग जाता है। एक दिन, सालों बाद, कोई उसका दरवाज़ा खटखटाता है—यह पुलिस है। कानून ने उसे पकड़ निकाला और भले ही अब वो सुधर गया है, लेकिन उसके अपराधों के लिए उसे सज़ा मिलनी चाहिए। हम नाज़ी युद्ध के अपराधियों के संबंध में इसका स्पष्ट उदाहरण देख सकते हैं जिन्हें वर्षों तक छिपने के बाद आज भी गिरफ्तार करके सज़ा दी जा रही है। यही बात उन सभी पापों के लिए भी सत्य है जो हम पहले कर चुके हैं। बाइबिल कहता है कि पापों की सज़ा जरूर मिलती है और भले ही कितने ही नेक इरादों से अच्छे कर्म किये जाएँ लेकिन ये पापों के जवाब नहीं हैं। बाइबिल के अद्भुत समाधान प्रदान करता है: अनुग्रह, अर्थात परमेश्वर की कृपया, द्वारा मोक्ष का उपहार।

अनुग्रह को समझना बहुत महत्वपूर्ण है, और बाइबिल का ईसाई धर्म ही परमेश्वर में एकमात्र ऐसा विश्वास है जो केवल आस्था के माध्यम से अनुग्रह द्वारा मोक्ष पाने का दावा करता है। अगली आयत हमें सिखाती है कि हम केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही बचाये जा सकते हैं।

परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा अपने विश्वास के कारण तुम्हारा उद्धार हुआ है। यह तुम्हें अपने से प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि यह तो परमेश्वर का वरदान है। यह हमारे किये कर्मों का परिणाम नहीं है जिसका हम गर्व कर सकें (इफिसियों

2:8-9, जोर दिया गया)।

यदि आप काम पर गए, आपने कुछ नहीं किया और फिर भी आपको भुगतान मिला तो वो अनुग्रह है। अनुग्रह और कार्य विरोधाभासी है, जैसा कि ईश्वर के दूत पौलुस अगली आयत में बताते हैं:

और यदि यह परमेश्वर के अनुग्रह का परिणाम है तो लोग जो कर्म करते हैं, यह उन कर्मों का परिणाम नहीं है; अन्यथा परमेश्वर का अनुग्रह, अनुग्रह नहीं होता (रोमियों 11:6)।

गलातियों की पूरी किताब, प्रेरितों के काम 15 और बहुत सारी अन्य आयतें विश्वास रखने वालों की उस गलती से संबंधित हैं जो वो यह सोचकर करते हैं कि मोक्ष पाने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह में कर्मों को जोड़ने की जरुरत होती है। गलातियों को एक नकली सुसमाचार से बेवकूफ बनाया गया था जो सच्चे सुसमाचार से बहुत अधिक मिलती थी। उन्हें कुछ ऐसा कहा गया था, "हाँ, यीशु पर भरोसा करो—लेकिन बचाये जाने के लिए तुम्हें ये चीजें भी करनी चाहिए।"

मॉर्मोन और यहोवा के साक्षी विशेष रूप से वो दो विश्वास हैं जो दूर से देखने पर ईसाई प्रतीत हो सकते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि ये दोनों कई क्षेत्रों में बाइबिल का विरोध करते हैं, बाइबिल के अनुसार अतिरिक्त शिक्षाएं जोड़ते हैं और गलातियों को गुमराह करने वाले संदेश के समान संदेश भेजते हैं: जो सिखाते हैं कि अनुग्रह के अलावा कर्म भी आवश्यक होते हैं। वे यह शिक्षा देकर ईसा मसीह को भी अस्वीकार करते हैं कि यीशु मनुष्य रूप में परमेश्वर नहीं थे। हमें पता है कि सच्चाई अपने आपका विरोध नहीं करती है, इसलिए यदि बाइबिल सत्य कह रही है तो ऐसी कोई भी शिक्षा, जो कहती है कि कर्म आवश्यक है और यीशु परमेश्वर नहीं हैं, सही नहीं हो सकती है। ईसाई धर्म पहले कलीसिया की शिक्षाओं से परिवर्तित नहीं हुआ है; ये दो विश्वास प्रणालियाँ ईसाई धर्म नहीं हैं।

हालाँकि कैथोलिक धर्म में मोक्ष और यीशु के बारे में ऐसी बहुत सी चीजें समान हैं जो हम बाइबिल में पढ़ते हैं, लेकिन पारंपरिक रोमन कैथोलिक धर्म परंपराओं को ग्रंथ के समान रखता है और मोक्ष के लिए आवश्यकता के रूप में अनुग्रह के साथ कर्म और पश्चाताप शामिल करता है। कई कैथोलिक अपने कलीसिया द्वारा समर्थित आवश्यकताओं को नहीं जानते हैं और केवल आस्था के माध्यम से अनुग्रह द्वारा मोक्ष प्राप्त करते हैं। कई कैथोलिक लोगों ने इस किताब को स्वीकार किया है, और यहाँ तक कि एक कैथोलिक स्कूल की शिक्षिका ने उन्हें अपनी कक्षा में बांटा भी है और एक डिकॉन ने 100 से भी ज्यादा वितरित किया है।

कई सच्चे और बेहतरीन लोग इन विश्वासों को अभ्यास में भी लाते हैं और मैं किसी को भी नाराज़ नहीं करना चाहता हूँ। लोग जिसपर चाहे विश्वास कर सकते हैं और ये उनका अधिकार है, लेकिन सच्चाई हमारा लक्ष्य है। यदि आप केवल आस्था के माध्यम से अनुग्रह द्वारा मोक्ष पर सवाल उठाते हैं तो मैं आपको बाइबिल को अपने से अच्छी तरह पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। गूगल करें: माइकल एडवर्ड्स - न्यू कॉन्वेनन्ट बाइबिल स्टडीज।

मसीह ने व्यवस्था का अंत किया ताकि हर कोई जो विश्वास करता है, परमेश्वर के लिए धार्मिक हो। रोमियों 10:4

आप पर पाप का शासन नहीं होगा क्योंकि आप व्यवस्था के सहारे नहीं जीते हैं

बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के सहारे जीते हैं। रोमियों 6:14

जैसे-जैसे हम सत्य के करीब जाते हैं, उन विश्वासों ने पहले ही धराशायी हो चुके विश्वासों की तुलना में कहीं ज्यादा पहेलियों को सुलझाया है जो शेष रह जाते हैं। जब हम और ज्यादा करीब जाते हैं तब ईसाई धर्म से काफी मिलने वाले झूठे मत, जैसे मॉर्मनवाद और यहोवा के साक्षी, बाइबिल का विरोध करेंगे और समाप्त भी हो जायेंगे। इस बिंदु पर, मैं आपको एक बार फिर से उन बहुविकल्पीय परीक्षाओं की याद दिलाना चाहता हूँ जो आपने स्कूल में दी हैं। जिनमें एक जवाब सही होता था और बाकी के जवाब सत्य से चाहे कितना भी करीब क्यों ना आ जाएँ गलत होते थे। हम निश्चित रूप से जानते हैं कि सत्य खुद का विरोध नहीं करता है। चूँकि अनुग्रह और कर्म एक दूसरे का विरोध करते हैं इसलिए ये दोनों विश्वास सही नहीं हो सकते हैं। यदि बाइबिल सही है कि यीशु मनुष्य रूप में परमेश्वर हैं तो ऐसी कोई भी शिक्षा जो कहती है कि वो साधारण मनुष्य, दूत या कोई भी अन्य चीज हैं तो यह सही नहीं हो सकता है। चूँकि हम एक ऐसे सत्य की तलाश में हैं जिसके अनंत परिणाम हैं, इसलिए मैं आपको इन विरोधों के बारे में बताना चाहता हूँ, ठीक उसी तरह जैसे पौलुस ने अगली आयतों में बताया है, जब वो गलातियों को अनुग्रह के सुसमाचार में कर्मों को जोड़ने के लिए फटकार लगाते हैं, और कहते हैं कि कर्मों को जोड़ने पर व्यक्ति मसीह के अनुग्रह से अलग हो जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि कर्मों का समावेश होने पर अनुग्रह का प्रभाव समाप्त हो जाता है। इस भाग में, मैंने बाइबिल के केवल उन भागों को सूचीबद्ध किया है जो बताते हैं कि हम अनुग्रह से बचाये गए हैं ना कि कर्मों से। यदि आप इसके बारे में विचार करते हैं तो आप पाएंगे कि जो भी यह कहता है कि कर्म जरूरी होते हैं वो यह भी कह रहा होता है कि यीशु ने हमारे लिए जो सूली पर किया वो पर्याप्त नहीं था।

मुझे आश्चर्य है कि आप लोग इतनी जल्दी उस परमेश्वर से मुँह मोड़कर, जिसने मसीह के अनुग्रह द्वारा तुम्हें बुलाया था, किसी दूसरे सुसमाचार की ओर जा रहे हैं; कोई दूसरा सुसमाचार तो वास्तव में है ही नहीं, लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो आपको भ्रम में डाल रहे हैं और मसीह के सुसमाचार में हेरफेर करना चाहते हैं। लेकिन चाहे हम या चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि आपको हमारे द्वारा सुनाये गये सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार है (गलातियों 1:6-8)।

आपमें से जितने भी लोग व्यवस्था के पालन के कारण धर्मी के रूप में स्वीकृत होना चाहते हैं, वे सभी मसीह से दूर हो गये हैं और परमेश्वर के अनुग्रह के क्षेत्र से बाहर हैं (गलातियों 5:4)।

अगली आयत में, पौलुस हमें बताते हैं कि यदि हम अपनी धार्मिकता कमा सकते और अच्छा कर्म करके स्वर्ग जा सकते तो मसीह का मरना बेकार था।

मैं परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं नकार रहा हूँ, लेकिन यदि धार्मिकता व्यवस्था के विधान के द्वारा परमेश्वर से नाता जुड़ पाता तो मसीह बेकार ही अपने प्राण क्यों देता (गलातियों 2:21)।

अंत में, केवल अनुग्रह मात्र से मोक्ष का एक स्पष्ट उदाहरण यीशु और दो चोरों के बीच के संवाद में देखा जा सकता है जिन्हें उनके बगल में सूली पर चढ़ाया गया था। संवाद का पहला भाग दोनों चोरों के बीच है, जिनमें से एक विनम्र और दूसरा अपनी मौत तक विद्रोही था। दूसरे भाग में, जिसे यहाँ दिया गया है, विनम्र चोर मसीह की ओर मुड़ता है, अपना अपराध स्वीकार करता है और उसमें अपनी आस्था रखता है।

"लेकिन दूसरे ने उस पहले अपराधी को फटकारते हुए कहा, "क्या तुम परमेश्वर से नहीं डरते, क्योंकि तुम्हें भी वही दण्ड मिल रहा है। लेकिन हमारा दण्ड तो न्यायपूर्ण है क्योंकि हमने जो कुछ किया, उसके लिए जो हमें मिलना चाहिए था, वही मिल रहा है पर इस व्यक्ति (यीशु) ने तो कुछ भी बुरा नहीं किया है (लूका 23:40-41)।"

और फिर उसने कहा, "यीशु जब आप अपने साम्राज्य में आएं तो मुझे याद रखियेगा।" और यीशु ने उससे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, आज ही तुम मेरे साथ स्वर्गलोक में होगे" (लूका 23:42-43, जोर दिया गया)।

जाहिर तौर पर, जो चोर विनम्र था और जिसने अपने आपको परमेश्वर की दया पर छोड़ दिया था वो मरने से पहले तक कोई अच्छे कर्म नहीं कर पाया था, फिर भी यीशु ने कहा, "आज ही तुम मेरे साथ स्वर्गलोक में होगे।" यहाँ कुछ और आयतें हैं जो केवल अनुग्रह मात्र से मोक्ष की शिक्षा देती हैं: रोमियों 3:28-30; 4:5; 5:1; 9:30; 10:4; गलातियों 2:16; 2:21; 3:5-6; 3:24; इफिसियों 2:8-9।

अनुग्रह को अकेले समझना कठिन हो सकता है। इसलिए, मैं इस विषय को एक व्यक्तिगत टिप्पणी पर समाप्त करना चाहता हूँ जिससे मदद मिल सकती है। मैं भी इस विचार से परेशान था कि ऐसा कुछ तो होगा जो मुझे करने की जरुरत होगी। अंत में, मैंने एक ही चीज करने का फैसला किया जो मैं कर सकता था—परमेश्वर के वचनों का पालन करना। मैंने मान लिया था कि मैं कभी भी परमेश्वर के मानक के अनुसार अच्छा नहीं हो सकता, और उपहार पाना असंभव है। अगर मोक्ष एक उपहार है जैसा कि बाइबिल वादा करता है तो परमेश्वर पर विश्वास करना और इसे स्वीकार करना एकमात्र विकल्प है। अपने वादे को निभाने का बोझ वादा करने वाले पर होता है। इस मामले में, परमेश्वर ने वादा किया है। हम जानते हैं कि वो अपना वादा पूरा करने में समर्थ है और बाइबिल के अनुसार परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता है। इसलिए, हमारे पास आज तक का सबसे अच्छा वादा करने वाला है।

"मैं अपने किये गए कामों के आधार पर स्वर्ग नहीं जा सकता हूँ। मुझे परमेश्वर के पास खुले दिल से आने की जरुरत होती है और यह स्वीकार करना पड़ता है कि यह मेरी वजह से नहीं है, बल्कि उसके कारण है; यह मेरे कर्मों का परिणाम नहीं है, बल्कि वो जो है उसके कारण है। केवल परमेश्वर। केवल आस्था। इसके अलावा कोई भी अन्य चीज जीवनदाता के लिए अपमान होगी" जिम वालेस, पूर्व नास्तिक, हत्या जासूस, www.pleaseconvinceme.com

अनुग्रह कोई बहाना नहीं है

बाइबिल कहता है कि पाप के लिए परमेश्वर के क्रोध से हमारी रक्षा करने के लिए हमें यीशु की जरुरत होती है—यह इस बात की पुष्टि करता है कि परमेश्वर का कानून अच्छा है और हमेशा रहता है। पौलुस ने अनुग्रह का उपदेश दिया था, फिर भी उन्हें अक्सर आस्थावानों को यह निर्देश देना पड़ता था कि अनुग्रह पाप करने का लाइसेंस नहीं है।

तो हम क्या करें? क्या हम पाप करें क्योंकि हम व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के अधीन जीते हैं? बिलकुल नहीं! (रोमियों 6:15)।

हालाँकि यह स्पष्ट है कि बाइबिल कहती है कि अच्छे कर्म किसी को बचा

नहीं सकते हैं, लेकिन यीशु ने हमें अच्छे कर्म करने की सीख दी थी और हमारा विवेक भी इसकी गवाही देता है कि यही परमेश्वर की इच्छा है। एक ईसाई की गतिविधियां उसकी आस्था की वास्तविकता को सत्यापित करती है, जो अच्छे कामों के अलावा किसी और चीज से दिखाई नहीं देती है। यीशु में किसी इंसान की सच्ची आस्था उसके कर्मों में दिखाई देनी चाहिए। उसी प्रकार, यीशु ने देखने योग्य चमत्कार करके पापों को क्षमा करके अपनी पहचान और अधिकार स्थापित किया था। उसके काम यह सत्यापित करते हैं कि वह मसीहा था, और हमारे अच्छे कर्म उसमें हमारी सच्ची आस्था और विश्वास के दावे को सत्यापित करते हैं। यह प्रमाण उन खोये लोगों के लिए हैं जो अभी भी दुनिया में हैं। हम अंधकार में प्रकाश बनने के लिए हैं। इसलिए पहले, यीशु में अपनी आस्था रखिये, और इसके बाद कृतज्ञता से अच्छा काम करिये क्योंकि मसीह में मोक्ष निश्चित है।

लेकिन कोई यह कह सकता है कि, "तुम्हारे पास विश्वास है, जबकि मेरे पास कर्म है अब तुम बिना कर्मों के अपना विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा दिखाऊँगा" (याकूब 2:18, जोर दिया गया)।

"अच्छे कर्म हमारे मोक्ष का फल हैं, ना कि हमारे मोक्ष का स्रोत हैं।" एंड्रयू वोमैक, www.awmi.net

www.God-Evidence-Truth.com

छोटे शहर का न्यायाधीश

अच्छे इंसान की परीक्षा ने परमेश्वर के सामने हमारी दोषी स्थिति को उजागर किया। यूहन्ना 14:6 में, यीशु बताते हैं कि हमारी स्थिति के लिए वही एकमात्र समाधान और परमपिता परमेश्वर तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग हैं। निम्नलिखित सादृश्ता यह स्पष्ट करेगी कि हमारे पापों के लिए यीशु के द्वारा भुगतान करना क्यों जरूरी था और क्यों वह मानव जाति को बचाने का एकमात्र तरीका थे।

कल्पना करिये कि आप एक बहुत छोटे शहर में रहते हैं जहाँ केवल एक न्यायाधीश है, जो आपके पिता भी हैं। वह एक ईमानदार न्यायाधीश हैं और कानून लागू करते हैं। आप उनके प्यारे बच्चे हैं। आप जरुरत के समय हमेशा अपने परिवार और दोस्तों की मदद करते हैं, कॉलेज में अच्छे नंबर लाते हैं, अपने परिवार की मदद करने के लिए आप एक अच्छी नौकरी कर रहे हैं और दान भी करते हैं। फिर एक रात आप अपने दोस्तों के साथ घूमने जाते हैं और बहुत सारी शराब पी लेते हैं। घर वापस आते समय आपको शराब पीकर लापरवाही से गाड़ी चलाने के कारण गिरफ्तार कर लिया जाता है। एक ही झटके में आप बड़े कानूनी पचड़े में पड़ जाते हैं।

आपके अदालत में जाने का दिन आता है, और अपराध सिद्ध होने पर आपको $5,000 का जुर्माना देना पड़ सकता है या जेल में छह महीने बिताने पड़ सकते हैं। चूँकि उस शहर में आपके पिता एकमात्र न्यायाधीश हैं, इसलिए आपको उनके सामने खड़ा होना पड़ेगा। जैसे ही वो आपको कटघरे में देखते हैं, उस भयानक दुविधा के बारे में सोचिये जिसमें आपने उन्हें डाल दिया है। वो आपसे बेहद प्यार करते हैं, लेकिन वो एक सच्चे न्यायाधीश हैं, और कानून बनाये रखने के लिए बाध्य हैं।

बाइबिल के अनुसार, हमारे संबंध में परमेश्वर भी इसी स्थिति में होता है। वो हमसे बहुत प्यार करता है, लेकिन उसकी न्यायपूर्ण प्रकृति हमारे उन सभी बुरे विचारों और गतिविधियों को जानते है जो हमने आज तक किये हैं। वो निश्चित रूप से जानता है कि हम दोषी हैं।

अंत में, आपके पिता साक्ष्य की अपनी समीक्षा प्रदान करते हैं, जो आपको दोषी सिद्ध करता है और आपसे पूछते हैं कि क्या आप अपने बचाव में कुछ कहना चाहते हैं। आप कहते हैं, "पिताजी, मैं जानता हूँ कि मैं अपराधी हूँ, लेकिन मैंने बस इस बार गलती की है। आपको पता है मैं अच्छा इंसान हूँ।" आप अपने पिता को उन सभी अच्छी चीजों की याद दिलाते हैं जो आपने आज तक की हैं और कैसे यह आपकी आज तक की पहली गलती है। इसके बाद आप उनके सामने गिड़गिड़ाते हैं। "पिताजी, यहाँ बहुत सारे लोग मुझसे भी बहुत ज्यादा बुरे हैं। मेरे पास जुर्माने के लिए $5,000 नहीं हैं, और अगर मैं जेल गया तो मेरी नौकरी चली जाएगी, मुझे स्कूल से निकाल दिया जायेगा और मेरा परिवार बेसहारा हो जायेगा।" आप थोड़ी देर रुकते हैं, इसके बाद कहते हैं: "कृपया इस एक बार कानून को अनदेखा करके मुझे जाने दीजिये।"

सवाल यह उठता है कि क्या ऐसा करने के बाद भी वो नैतिक या ईमानदार बने रह सकते हैं? मैंने हज़ारों लोगों से ये सवाल किया और उनके अनुसार इसका जवाब "ना" है। उन सभी का मानना है कि अगर वो आपको जाने देते हैं तो वो भ्रष्ट हो जायेंगे।

न्यायाधीश कहता है, "बेटा, तुम्हें पता है कि मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, लेकिन तुम्हें ये भी पता है कि मुझे कानून बनाये रखना होगा। अगर मैं इसे अनदेखा करके तुम्हें जाने देता हूँ तो मैं भ्रष्ट हो जाऊंगा। मैं तुम्हें अपराधी मानता हूँ।" आप हैरान हो जाते हैं और मान लेते हैं कि अब आपको छह महीने के लिए जेल जाना होगा। तभी आप देखते हैं कि आपके पिता अपने न्यायाधीश के परिधान के बिना आपके बगल में खड़े हैं, और उन्होंने अपने हाथ में $5,000 पकड़ रखा है। वो आपका जुर्माना भरना चाहते हैं। आपको फैसला करना होगा।

1. प्रस्ताव अस्वीकार करके जेल में अपने अपराध की सज़ा भुगतें।
2. प्रस्ताव स्वीकार करके आज़ाद हो जाएँ।

आप चाहे कोई भी फैसला करें, लेकिन कानून का पूरा पालन किया गया है और न्यायाधीश नैतिक भी है। वह आपके ऊपर कानूनी रूप से आवश्यक पूरा जुर्माना लगाते हैं, और अब वो आपका जुर्माना भरने का प्रस्ताव रखते हैं। उन्हें यह एकमात्र ऐसा तरीका मिला है जिससे वो आपके लिए अपने प्यार को जाहिर कर सकते हैं और साथ ही कानून की न्याय संबंधी आवश्यकता को पूरा कर सकते हैं।

यह उसकी एक तस्वीर है जो बाइबिल के अनुसार परमेश्वर ने मानवता के लिए करने का चुनाव किया था और क्यों सूली पर यीशु की मौत हमारी मुक्ति का एकमात्र रास्ता है। परमेश्वर की सर्वोत्तम नैतिक प्रकृति के लिए सभी पापों की सज़ा देना जरूरी है; लेकिन परमेश्वर की प्रेमपूर्ण प्रकृति हमें उस सज़ा से बचाना चाहती है। परमेश्वर के लिए अपनी इन दोनों प्रकृतियों को संतुष्ट करने का एकमात्र रास्ता यह था कि वो हमें अपराधी घोषित करें, जैसा कि उनकी न्यायपूर्ण

प्रकृति के लिए आवश्यक है, इसके बाद हमारे पापों का पूरा भुगतान खुद करके, हमारी सज़ा को अपने ऊपर लें। वह वरदान रूप में हमारे पापों के लिए अपनी सच्चाई का लेनदेन करने का प्रस्ताव देते हैं। सूली पर एक कानूनी और बाध्यकारी लेनदेन हुआ था जब हमारे पापों के लिए यीशु के भुगतान के माध्यम से कानून की आवश्यकता पूरी की गयी थी। अब आपको निर्णय लेने की जरुरत है।

1. आप उसके प्रस्ताव को अस्वीकार करके खुद अपने पापों का भुगतान कर सकते हैं।
2. आप प्रस्ताव स्वीकार करके स्वर्ग जा सकते हैं।

सर्वश्रेष्ठ न्याय सर्वश्रेष्ठ प्रेम से टकराया और सूली पर प्रेम की जीत हुई। जी हाँ, परमेश्वर हमारे पापों को माफ़ कर देता है लेकिन केवल उनके लिए जो सूली पर उनके द्वारा किये गए भुगतान को स्वीकार करके पश्चाताप करते हैं और यीशु में अपनी आस्था लगाते हैं। आपके मोक्ष के रास्ते में केवल एक चीज खड़ी है और वो खुद आप हैं। अगली आयत में परमेश्वर बताते हैं कि आपको कौन का विकल्प चुनना है।

आज मैं तुम्हें दो मार्ग चुनने की छूट दे रहा हूँ। मैं धरती और आकाश को तुम्हारे चुनाव का गवाह बना रहा हूँ। तुम जीवन चुन सकते हो, या तुम मृत्यु चुन सकते हो। जीवन का चुनना वरदान लाएगा और मृत्यु को चुनना अभिशाप। इसलिए जीवन चुनो। तब तुम और तुम्हारे बच्चे जीवित रहेंगे (व्यवस्था विवरण 30:19)।

www.God-Evidence-Truth.com

आपके निर्णय की महत्ता

यदि आपने *ब्रूस ऑलमाइटी* नहीं देखी तो मैं आपको इसे किराये पर लेने की सलाह देता हूँ। हालाँकि यह एक काल्पनिक कहानी है, लेकिन इसमें कुछ चीजें सही हैं, जो इसे इस तुलना के लिए सर्वोत्तम बनाती है। फिल्म में, ब्रूस (जिम कैरी) परमेश्वर (मॉर्गन फ्रीमैन) से थोड़े समय के लिए संसार को चलाने का काम लेता है। परमेश्वर के रूप में, ब्रूस केवल इंसान की स्वतंत्र इच्छा को नहीं रोक सकता है। उसे जल्दी ही दो चीजें पता चल जाती हैं: सभी लोगों की विरोधाभासी इच्छाओं को संतुष्ट करना असंभव है, और मानव जाति की स्वतंत्र इच्छा परमेश्वर को जबरदस्ती उससे प्रेम करवाने से रोकती है। ब्रूस अपनी प्रेमिका ग्रेस (जेनिफर एनिस्टन) के साथ इसे अपने लिए साबित करता है। चाहे वो उससे कितना भी प्यार क्यों ना करे, वो फिर भी उसके प्यार को अस्वीकार कर सकती है और वास्तव में करती है।

परमेश्वर हमारे साथ समान स्थिति में है। परमेश्वर तार्किक रूप से असंभव चीजें नहीं कर सकता है। वो एकतरफा छड़ी नहीं बना सकता है, वर्गीय वृत्त नहीं बना सकता है, या सबकी विरोधाभासी इच्छाओं को संतुष्ट नहीं कर सकता है — उदाहरण के लिए, सभी लोग सबसे अमीर, सबसे खुश और सबसे सुंदर नहीं हो सकते हैं। और निश्चित रूप से वो किसी मुक्त इच्छा वाले इंसान को उसके प्रेम, सहायता और मोक्ष को स्वीकार करने के लिए जबरदस्ती नहीं कर सकता है। इसलिए, हमारी मुक्त इच्छा में अपार शक्ति है। आपको फैसला करना पड़ता है कि आप परमेश्वर पर भरोसा करना चाहते हैं या नहीं, जो हर चीज जानता है

और आपसे प्यार करता है, या अपनी सीमित जानकारी पर भरोसा करना जारी रखेंगे। आपका निर्णय बहुत महत्वपूर्ण है।

मुझे पता है कि यीशु पर भरोसा करने का विचार करने पर कई लोगों को आंतरिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है। मैं उस परिवर्तन से डरता था जो मुझे करने पड़ सकते थे, और मुझे डर था कि परमेश्वर मुझे प्यार नहीं करता। आखिरकार, उसे वो सबकुछ पता है जो मैंने किया है। शुरुआत में, मैं उन सभी झूठ पर विश्वास करता था कि ईसाई धर्म केवल एक नाराज़ परमेश्वर को खुश करने के लिए नियमों का समूह है और इससे पहले कि परमेश्वर मुझे स्वीकार करे मुझे अपना जीवन साफ करने की जरुरत थी। अब मुझे एहसास होता है कि मैं बस परमेश्वर को अनदेखा करने के और अपने तरीके से रहने के बहाने खोज रहा था। यह सर्वश्रेष्ठ बनने या अपनी इच्छाशक्ति से अपने आपको बदलने के लिए मजबूर करने के बारे में नहीं है। यह हमारी पापी स्थिति की सच्चाई को स्वीकार करने और परमेश्वर को हमारे लिए वो करने देने के बारे में है जो हमारे लिए अपने आप करना असंभव है।

यीशु हमें बचाने के उद्देश्य से अवतरित हुए थे, वो यहाँ हमारे लिए अपनी राय बनाने के लिए या यह देखने के लिए नहीं आये थे कि हम नियमों का पालन करते हैं या नहीं। वह उन सभी लोगों को अनंत जीवन के लिए और संतों की विरासत में हिस्सा लेने के योग्य बनाते हैं जो उनपर भरोसा करते हैं।

बाइबिल में वर्णित स्त्री और पुरुष असली थे, बिलकुल आपकी और मेरी तरह। उनकी भावनाएं और एहसास थे, बिलकुल आपकी और मेरी तरह, और उन्हें भी ठोकर लगी थी और आस्थावानों के रूप में उनमें भी कमियां थीं। आप कोई अपवाद नहीं होंगे। लेकिन परमेश्वर अपनी शक्ति और आपके साथ से, अपनी गति से आपको पूरी तरह से रूपांतरित कर देगा। मुझे अक्सर ऐसा नहीं लगता कि कुछ हो रहा है। लेकिन अब जब मैं अपने आपको देखता हूँ तो भले ही मैं वहां नहीं हूँ जहाँ मैं होना चाहता हूँ, फिर भी मैं कम से कम वहां नहीं हूँ जहाँ मैं पहले था। डरिये नहीं; जैसे आप हैं वैसे ही आइये, चाहे आप जो भी हैं या चाहे आप जो भी कर रहे हैं या चाहे आपने जो भी किया है। मुड़िये और अब खुद को यीशु को बचाने दीजिये।

"वो कोई मूर्ख नहीं है जो वो देता है जो वो रख नहीं सकता ताकि वो पा सके जो वो खो नहीं सकता है।" जिम इलियट, एक प्रचारक जिन्होंने सुसमाचार बांटते हुए अपना जीवन दिया था।

बाइबिल कहती है कि मसीह को स्वीकार करने पर हमारी आत्मा तुरंत न्यायोचित हो जाती है और परमेश्वर के सामने सच्ची हो जाती है। यह दोषमुक्ति परमेश्वर का एक बार का कार्य है जिनमें वो हमें अपने साथ एक सच्चे रिश्ते में जोड़ देता है, केवल उसके कारण जो यीशु ने सूली पर हमारे लिए किया था। इसके बाद परमेश्वर हमें आत्मा के रूप में मसीह की पूर्णता में देखता है, जैसे कि हमने कभी पाप ना किया हो।

इसके बाद परमेश्वर, जो हमें उसी रूप में प्रेम करता है जैसे हम हैं लेकिन हमारे लिए ज्यादा चाहता है, हमारे मन और विचारों को उस सच्चाई में नवीनीकृत करने की अपनी प्रक्रिया शुरू करता है जो अब हम मसीह में हैं।
जब हम पहली बार मसीह पर विश्वास करते हैं तब हमारे मस्तिष्क में वही पुराना कंप्यूटर प्रोग्राम लगा होता है, जिसमें वही पुराने विचार भरे होते हैं। जिसकी वजह से हम वही गलतियां कर सकते हैं जो हम वर्षों से करते आये हैं, इसलिए

हमें धैर्य रखने की और परमेश्वर पर भरोसा करने की जरुरत होती है। उसकी नवीकरण की प्रक्रिया को बाहर प्रदर्शित होने में समय लग सकता है। यह हमारे समर्थन के स्तर पर निर्भर करता है। लेकिन चाहे कुछ भी हो, जैसे ही आप यीशु पर भरोसा करते हैं, आप परमेश्वर के साथ सच्चे बन जाते हैं, आपको सभी अपराधों से बचा लिया जाता है और आप अनंत जीवन प्राप्त करते हैं।

कोई भी ईसाई किसी और से बेहतर नहीं है, लेकिन उस इंसान की तरह जो इस साक्ष्य को स्वीकार करता है कि हवाई जहाज़ गिरने वाला है और पैराशूट पहन लेता है, वो ज्यादा फायदे में रहता है।

परमेश्वर बात कर रहा है—क्या आप सुन रहे हैं?

अपने अंदर की स्थिर, हल्की आवाज़ को सुनिये। परमेश्वर से पूछिए कि यीशु सत्य हैं या नहीं, इसके बाद नीचे दी गयी आयतों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। प्रत्येक आयत के बाद**,** रुकिए और सोचिये कि यह आपसे क्या कहती है:

क्योंकि सभी ने पाप किये है और सभी परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों 3:23)।

क्योंकि पाप का भुगतान तो बस मृत्यु ही है, जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन, परमेश्वर का निःशुल्क वरदान है (रोमियों 6:23)।

परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम दिखाया। जब कि हम तो पापी ही थे, लेकिन यीशु ने हमारे लिए प्राण त्यागे (रोमियों 5:8)।

यीशु ने उससे कहा, "मैं ही मार्ग हूँ, और सत्य हूँ, और जीवन हूँ। मेरे माध्यम के बिना कोई भी परमपिता के पास नहीं आता" (यूहन्ना 14:6)।

और किसी भी दूसरे में उद्धार निहित नहीं है, क्योंकि इस आकाश के नीचे लोगों के लिए कोई दूसरा ऐसा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये (प्रेरितों के काम 4:12)।

यीशु ने उसे जवाब दिया, "सत्य सत्य, मैं तुम्हें बताता हूँ, जब तक कोई व्यक्ति नए सिरे से जन्म नहीं लेता वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता है" (यूहन्ना 3:3, जोर दिया गया)।

यदि आप अपने मुँह से कहते हैं कि ईसा मसीह यहोवा है और अपने मन में यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया था तो आपका उद्धार हो जायेगा। क्योंकि अपने हृदय के विश्वास से व्यक्ति धार्मिक ठहराया जाता है और अपने मुँह से उसके विश्वास को स्वीकार करने से उसका उद्धार होता है। क्योंकि शास्त्र कहता है, "जो कोई भी उसमें आस्था रखता है उसे निराश नहीं होना पड़ेगा।" (रोमियों 10:9-11).

उचित आस्था

अगर अभी भी आपके मन में सवाल या संदेह हैं तो यह सामान्य बात है लेकिन इसे आपको यीशु पर भरोसा करने का फैसला करने से नहीं रोकना चाहिए। आपको याद है, मैंने कभी यह नहीं कहा कि साक्ष्य यह साबित कर देंगे कि बाइबिल सभी संभव संदेहों के परे सत्य है; हालाँकि, मेरा मानना है कि साक्ष्य यह दर्शाता है कि यह सभी उचित संदेहों के परे सत्य है। परमेश्वर के सामने हमारा

अपराध एकमात्र ऐसी चीज है जो सभी संभव संदेहों के परे सत्य है।

यदि हमारा हवाई जहाज़ गिरने वाला है और मैं आपको एक पैराशूट देता हूँ, तो क्या आपके मन में इसे प्रयोग करने के बारे में डर नहीं होगा, भले ही आप किसी उचित संदेह के बिना यह जानते हैं कि पैराशूट उपयोगी होता है? लेकिन अगर आप उस भय पर विश्वास करके कभी पैराशूट नहीं पहनते हैं तो आप जरूर मर जायेंगे। दूसरी तरफ, यदि आप उसपर विश्वास करते हैं जो आपको पैराशूट के बारे में पता है और इसे फिर भी पहन लेते तो शायद आप जरूर जीवित रहेंगे। यही तर्क परमेश्वर पर भी लागू होता है। अब आपको कई ईसाईयों से कहीं ज्यादा तथ्यों की जानकारी है। मैं आपसे यीशु पर विश्वास करने की प्रार्थना करता हूँ। वो आपको कभी निराश नहीं करेंगे।

"...उन्होंने कहा है, "मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा, मैं तुम्हें कभी नहीं तजूँगा" (इब्रानियों 13:5).

"....और याद रखो इस सृष्टि के अंत तक मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा" (मत्ती 28:20)।

आपको पूरे दिल से पश्चाताप करना होगा, अपना मन बदलना होगा, सुसमाचार पर विश्वास करना होगा और एकमात्र जीवित परमेश्वर की ओर मुड़ना होगा। इस रक्षक को पैराशूट की तरह धारण करिये, ताकि आप अनंतता में कूदने के लिए तैयार हो सकें।

यदि आप यीशु को स्वीकार करना चाहते हैं और उनके द्वारा प्राप्त मोक्ष पाना चाहते हैं लेकिन आपको नहीं पता कि क्या कहना है तो कोई बात नहीं। आपके शब्द आपके हृदय जितने महत्वपूर्ण नहीं हैं। बाइबिल परमेश्वर के साथ हमारे संबंध की तुलना एक विवाह से करते हैं जिसमें जीवनसाथी धोखेबाज़ है। एक ऐसे व्यक्ति के बारे में विचार करिये जो अपने जीवनसाथी के लिए निष्ठावान नहीं है, लेकिन उसे अपनी बड़ी गलती का एहसास हो जाता है और वो इसे ठीक करना चाहता है। कोई उन्हें यह नहीं बताता कि क्या कहना है। वो अपनी गलती का एहसास होने के बाद दिल से आंसू बहाता है, और माफ़ी मांगते हुए सही रास्ते पर चलने का वादा करता है।

परमेश्वर के साथ भी यही करिये। विनम्र बनिए, अपने पापों को स्वीकार करिये और परमेश्वर के अनुग्रह की शरण में जाइये। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं, आपकी आयु क्या है या आपने क्या किया है। ईश्वरदूत पौलुस, अधिकांश नवविधान के लेखक, तब तक ईसाईयों को मारते और दंड देते रहे जब तक कि परमेश्वर ने उनकी रक्षा नहीं की। आप जैसे हैं वैसे ही आइये। परमेश्वर विनम्र हृदय को अस्वीकार नहीं करेंगे। यहाँ एक छोटी प्रार्थना दी गयी है जो आपका मार्गदर्शन करेगी:

"हे परमेश्वर, मैं मानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ और मुझे आपके अनुग्रह की अत्यंत आवश्यकता है। मैं मानता हूँ कि ईसा मसीह मनुष्य रूप से परमेश्वर हैं और उन्होंने मेरे सभी पापों के लिए जुर्माने का भुगतान करने के लिए सूली पर जान दी। इसके बाद वो मरकर ज़िंदा हुए और उन्होंने मौत को परास्त कर दिया। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ और मैं क्षमा, मोक्ष और अनंत जीवन के आपके वरदान को स्वीकार करता हूँ। यहोवा यीशु, मैं आपका अनुसरण करने का वचन देता हूँ। मैं अपनी नहीं बल्कि आपकी इच्छा पूरी होने की प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

आपको यीशु पर भरोसा करने के लिए किसी और की मदद की जरुरत नहीं है, लेकिन यदि आपका कोई भी सवाल है या यदि आप किसी से सीधे बात करना चाहते हैं तो 1-800-NEEDHIM पर कॉल करें या www.chataboutjesus.com पर जाएँ

यदि आपने मसीह के लिए कोई फैसला ले लिया है तो परमेश्वर के परिवार में आपका स्वागत है। मैं सच्चे मन से मानता हूँ कि आपने तथ्यों के आधार पर उचित आस्था रख ली है। मैं आपको अपनी वेबसाइट, www.god-evidence-truth.com, पर जाकर और गूगल पर माइकल एडवर्ड्स का नया प्रसंविदा बाइबिल अध्ययन खोजकर साक्ष्य के अपने अध्ययन को जारी रखने के लिए प्रेरित करता हूँ।

आपको यह समझने की जरुरत है कि यीशु आपके एकमात्र उदाहरण है और यह कि परमेश्वर की शक्ति उसके वचनों में होती है। यूहन्ना 1:1 हमें बताता है, *"आदि में शब्द था, शब्द परमेश्वर के साथ था, शब्द ही परमेश्वर था।"* (जोर दिया गया)। परमेश्वर से सुनने के लिए आपको बाइबिल पढ़ने की जरुरत होती है। यूहन्ना के सुसमाचार में पढ़ना शुरू करें और परमेश्वर से इसे समझने में आपकी मदद करने की विनती करें, इसके बाद तीन और सुसमाचार और बाकी का नव विधान पढ़ें।
अनुग्रह और सत्य की नयी वाचा के अध्ययन पर ध्यान दें जो ईसाई को अनन्य मानता है। नयी वाचा बाइबिल में सूली के बाद शुरू होती है। इब्रानियों की यह किताब नयी वाचा के बारे में है कि यीशु ने हमें लाने के लिए अपना खून बहाया था। इसे ऐसे सोचिये: मान लीजिये आपके कोई अमीर अंकल हैं जो आपके लिए एक पुरानी और एक नयी वसीयत छोड़कर गए हैं, तो आप पहले किसे देखना चाहेंगे? कौन सा उनकी वसीयत पर लागू होगा? निश्चित रूप से नया वाला। पुरानी वसीयत बेकार होगी और अब लागू नहीं होगी। यही सच्चाई मूसा द्वारा दिए गए नियम की पुरानी वाचा पर लागू होती है। अनुग्रह और सच्चाई की नयी वाचा को प्रभाव में लाने के लिए यीशु ने अपने प्राण त्यागे। पुरानी वाचा व्यवस्था पर आधारित है और परमेश्वर के मानकों को अच्छे से रखने में समर्थ है और इसलिए यह परमेश्वर के साथ रहने का हक़दार है। दूसरी तरफ, नयी वाचा अनुग्रह के बारे में है। हमें यीशु की जरुरत है क्योंकि हम परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ मानकों पर खरा नहीं उतर सकते हैं, और यह जीवन भर नहीं बदलेगा। नए ने पुराने की जगह को पूरी तरह से ले लिया है। नयी वाचा का अध्ययन करिये और सुसमाचार की शक्ति में अनन्य रूप से चलने के लिए इसपर चलिए।

ऐसे ही जब वे भोजन कर चुके तो उसने कटोरा उठाया और कहा, "यह प्याला मेरे उस रक्त के रूप में एक नयी वाचा का प्रतीक है जिसे आपके लिए उँडेला गया है" लूका 22:20।

नयी वाचा के अंतर्गत आप सीखेंगे कि आस्था रखने वालों को व्यवस्था के क्षेत्र या परमेश्वर की आँखों में निंदा के बजाय, अनुग्रह के अंतर्गत रखा गया है।

आपके ऊपर पाप का शासन नहीं होगा क्योंकि आप व्यवस्था के सहारे नहीं जीते हैं बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के सहारे जीते हैं। रोमियों 6:14

आपको यह भी पता चलेगा कि आपको आज तक किये गए सभी पापों के लिए पूरी तरह माफ़ कर दिया गया है। परमेश्वर आपके पाप नहीं जोड़ रहे हैं: बल्कि वो आपकी आस्था देखते हैं।

क्योंकि मैं उनके दुष्कर्मों को क्षमा करूँगा और कभी उनके पापों को याद नहीं रखूँगा। इब्रानियों 8:12

मैंने नयी वाचा पर सैंकड़ों बाइबिल अध्ययन लिखे हैं। गूगल करें: माइकल एडवर्ड्स का नया वाचा बाइबिल अध्ययन।

वचन की सच्चाई के माध्यम से परमेश्वर, यीशु और मोक्ष के बारे में सुनी हुई चीजों को साफ करें। जिस प्रकार कंपास हमेशा उत्तर की तरफ इशारा करता है, उसी तरह बाइबिल को भी अपना मार्गदर्शक बनने दें जो हमेशा सत्य की ओर इशारा करता है। ये जो कहता है उसे जानिये, इसका पालन करिये और दोबारा कभी मत खोइए।

हालाँकि कोई व्यक्ति कलीसिया जाए बिना बचाया जा सकता है, फिर भी मैं आपको सुझाव देता हूँ कि आप एक अच्छा बाइबिल में भरोसा करने वाला कलीसिया खोजें। इसके सर्वोत्तम होने की उम्मीद ना करें। अगर कोई कलीसिया सर्वोत्तम होता तो हमारे आते ही यह बर्बाद हो जाता। वास्तव में, कलीसिया आस्थावान के लिए होता है, ना कि परमेश्वर के लिए; यह पापियों का अस्पताल है, संतों का संग्रहालय नहीं। हम एक-दूसरे की आस्था बढ़ाने के लिए कलीसिया जाते हैं। बाइबिल का अध्ययन करने वाला एक छोटा समूह खोजें, एक-जैसी विचारधारा वाले लोग खोजें और आस्थावान दोस्त खोजें। मैं अच्छे ईसाई रेडियो स्टेशन या ईसाई संगीत को भी बहुत महत्व देता हूँ जो आपकी आत्मा को प्रेरित करेंगे और अपने विचारों को परमेश्वर पर रखने में मदद करेंगे।

यदि आपने खुद को परमेश्वर की सच्चाई के प्रकाश में देखा है तो आप सुधरे हुए दास व्यवसायी जॉन न्यूटन द्वारा लिखे गए गीत के निम्नलिखित बोलों से गहनता से जुड़ाव महसूस कर पाएंगे। परमेश्वर की तुलना में, वह अपने अंदर उमड़ने वाली विकरालता को स्पष्ट रूप से देख सकता था, और इसलिए परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह को देख सकता था।

अद्भुत अनुग्रह, कितनी प्यारी आवाज़ है,
जिसने मेरे जैसे नीच को बचाया।
कभी मैं खो गया था,
अँधा था, लेकिन अब देख सकता हूँ।
अनुग्रह ने ही मेरे हृदय को डरना सिखाया।
और अनुग्रह से मेरे डर कम हुए थे।
जब मैंने पहली बार इसपर भरोसा किया
तो यह कितनी बहुमूल्य लगी थी।
मैं कई खतरों, जाल और लालच से

पहले ही बाहर आ गया हूँ;
अनुग्रह इतनी दूर तक मुझे सुरक्षित लाया था
और अनुग्रह मुझे घर ले जायेगा।
यहोवा ने मुझसे अच्छाई का वादा किया है।
उसके वचन मेरी उम्मीद बांधते हैं।
जब तक मेरा जीवन रहता है,
वो मेरा कवच और अंश होगा।
हाँ, जब मेरा शरीर खत्म होता है और मेरा दिल विफल होता है,
और मेरा नश्वर जीवन खत्म होगा,
मैं परदे के अंदर, खुशी और शांति पाऊंगा।
हम चमकते हुए सूरज के रूप में
यहाँ दस हज़ार साल रहे हैं।
फिर भी हमारे पास शुरुआत की तुलना में
परमेश्वर के स्तुति गान के लिए कम दिन नहीं है।

क्या आप अभी तक निश्चित नहीं हैं? ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बिंदु

यदि आप अनिश्चित हैं तो मैं आपको परमेश्वर से यह स्पष्ट रूप से पूछने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ कि परमेश्वर सत्य है या नहीं। अगले कुछ हफ्तों तक अपनी आँखें और कान खुले रखें, और वह उन सभी के लिए इसकी पुष्टि करेगा जो ईमानदार हैं। लेकिन याद रखें:

1. परमेश्वर का सत्य आपके ऊपर लागू होता है, चाहे आप इसे माने या ना माने।
2. परेमश्वर का मानक उत्तमता है।
3. हम सबमें कमी है, और यीशु ही हमारी एकमात्र उम्मीद है।
4. दस में से दस लोग मरते हैं, इसलिए फैसला करने में ज्यादा वक्त ना लें।

कृपया मुझे बताएं कि क्या इस पुस्तक की वजह से आपके जीवन में कोई अंतर आया है और आपने यीशु में अपना विश्वास रखा है या नहीं। यह धर्म के बारे में नहीं है, यह सच्चाई के बारे में है। सफर का मज़ा लें!

परमेश्वर आपका भला करें,

माइकल एडवर्ड्स
www.God-Evidence-Truth.com

godevidencetruth@yahoo.com पर मुझे ईमेल करना और www.God-Evidence-Truth.com पर मेरी वेबसाइट पर जाना ना भूलें, जहाँ आपको इस पुस्तक का एक मुफ्त वीडियो लिंक वाला ईबुक संस्करण मिल सकता है, जो संपूर्ण पुस्तक के कई विषयों के बारे में विस्तार से बताती है। साइट पर सवालों के जवाब और एक ऑनलाइन वीडियो भी शामिल है जो इस पुस्तक के प्रयोग से अपनी आस्था साझा करने का एक आसान तरीका दिखाती है। बीस या इससे ज्यादा की मात्रा में खरीदने पर, इस पुस्तक की मुद्रित प्रतियों को $1 प्रति कॉपी या इससे भी कम का दान करके ऑर्डर किया जा सकता है, जिसमें आपके स्थान के लिए शिपिंग का शुल्क भी शामिल है। आप अपने दोस्तों और परिवार को मुफ्त ईबुक संस्करण भेज सकते हैं, लेकिन बहुत से लोगों को ऑनलाइन पढ़ना पसंद नहीं होता है। मैं मुद्रित पुस्तकों का सुझाव देता हूँ; उन्हें हमारी लागत पर प्रदान किया जा रहा है और उनके उद्देश्य को देखते हुए ये अच्छा सौदा है।

गूगल करें: माइकल एडवर्ड्स का मसीह के साथ आपके सफर में आगे अध्ययन के लिए नया वाचा बाइबिल अध्ययन।

मैं डॉ. फ्रैंक ट्यूरेक और डॉ. नॉर्मन गिस्लर को उनकी किताब *"आई डोंट हैव एनफ फेथ टू बी अथेइस्ट"* के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिसने स्थापित तथ्यों की मेरी प्रस्तुति के लिए मूलभूत फॉर्मेटिंग में मेरा मार्गदर्शन किया। उनकी पुस्तक में तथ्यों का एक संपूर्ण गहन अध्ययन शामिल है जिसे मेरे अनुसार हर एक ईसाई और परमेश्वर को सच्चे दिल से चाहने वाले व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। इसे impactapologetics.com या Amazon.com पर खरीदें।

गूगल करें: माइकल एडवर्ड्स का नया वाचा बाइबिल अध्ययन और गुरुत्वाकर्षण आपके लिए सत्य लेकिन मेरे लिए नहीं।

सभी लोगों को तथ्यों की जांच करने का और उचित निर्णय लेने का अधिकार है। कृपया इस पुस्तक को आगे बढ़ाएं।